ध्यान एवं योग विशेषांक
दिसम्बर-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 12
अंक 3
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
त्रिपुर भैरवी साधना
षट्चक्र उत्तिष्ठ साधना
गणपति साधना
हनुमान साधना
मकर संक्रान्ति-
सूर्य-विष्णु-लक्ष्मी साधनाएं

सूक्तियाँ

1. जो अनासक्त है, वही सबसे बड़ा योगी है, साधक है। आसक्ति ही सभी व्याधियों की जड़ हैं, अतः अपने में अनासक्त भाव पैदा करें।
2. जिसने नम्रता और शिष्टता नहीं सीखी, उसका बहुत कुछ सीखना भी व्यर्थ ही रहा।
3. सफलता का रहस्य है-विवेक, श्रम, चरित्र-बल, नम्रता, व्यवहारिकता।
4. धूर्तों की चापलूसी से महापुरुषों की फटकार ज्यादा अच्छी है।
5. सत्य और ईमानदारी से बढ़कर कोई धर्म नहीं, क्योंकि सत्य ही धर्म है। सत्य स्वयं परब्रह्म परमात्मा है।
6. सिद्धियां उन्हें ही प्राप्त होती हैं, जो विनम्र, धैर्यवान एवं विवेकशील होते हैं।
7. जो पाप पर पश्चाताप करता है वह साधु है और जो पाप पर अभिमान करता है वह शैतान है।
8. कुलीन, सज्जन एवं नम्र व्यक्ति क्रोधित होने पर भी अवचनीय नहीं बोलता है। निश्चय ही गन्ना निचोड़े जाने पर भी मीठा ही उगलता है।
9. जिसे सद्गुरु की कृपा प्राप्त हो जाती है, वह न वज्र से टूटता है और न ही प्रलोभन के कीचड़ में फिसलता है।
10. अभिमान ही शिष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।
11. सामान्य मनुष्यों के मन में कुछ और, वचन में कुछ और, तथा कार्य में कुछ और ही रहता है। महान सज्जन महापुरुषों के मन, वचन और कर्म में समानता रहती है।
12. सारे गुण विनय के अधीन है। विनय नम्रता सेआती है अतः जो पुरुष नम्र है वही सर्वगुण सम्पन्न है।
13. झगड़ने वाले शत्रुओं से उतना चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं जितना चापलूसी करके घात करने वालों से।
14. कपड़े साबुन से धोये जाते हैं, कीचड़ से नहीं; दूसरों को सुधारने से पहले स्वयं का सुधार करो।
15. जीवन क्षणभंगुर कहा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि उसका एक भी क्षण बर्बाद न किया जाय अतः महापुरुष अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग करते हैं।

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

तंत्र बाधा एवं शत्रु बाधा निवारण की प्रचण्ड : त्रिपुर भैरवी साधना

भीतर की सुसुप्त शक्ति को जाग्रत करने हेतु : षट्चक्र उत्तिष्ठ साधना

आलस्य, कृपणता, दीनता, निद्रा, शिथिलता निवारण हेतु : गणपति साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

योग

आयुर्वेद

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता
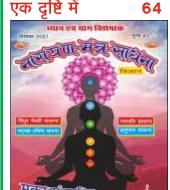
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली:110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

|| सर्व मंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ||

हे भगवती जगदम्बा! आप सभी प्रकार से मंगल करने वाली है, रक्षा करने वाली है, समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली है, मैं आपकी शरण में हूँ, आप मेरी रक्षा करती हुई मुझे सभी प्रकार से पूर्णता प्रदान करें।

संन्यास

एक व्यक्ति एक परम ज्ञानी संत के पास गया और बोला "मैं संन्यास लेना चाहता हूँ। इसके लिए मैंने अपने घर-परिवार, रिश्ते-नाते सब को छोड़ दिया है।" ज्ञानी संत ने पूछा वास्तव में तुम्हारे साथ अब कोई नहीं है। आप देख लीजिए। मेरे साथ, मेरे आगे-पीछे कोई आपको मिलेगा ही नहीं। उस संत ने व्यक्ति के चेहरे पर निगाह डाली बोले 'अपनी आंखें बंद करो' और अपने अंदर झांककर देखो कि वहां, कोई और तो नहीं बैठा? कुछ समय उस वृक्ष की छाया में बैठकर सोचो। कुछ समय पश्चात् आना।

वह व्यक्ति खुशी-खुशी वृक्ष की छाया में बैठा, ध्यान लगाने लगा, आँखें बंद करने के कुछ ही पल में उसे अपने वृद्ध माता-पिता, पत्नी और बच्चों की छवि नजर आने लगी। चिंतित हो घबराकर जैसे ही उसने आँखें खोली तो संत को सामने खड़ा पाया और बोलने लगा 'मैं' तो सबको छोड़ आया पर उनकी छवि बंद आँखों के सामने घूम रही है।

संत बोले ध्यान का प्रयास कर उन सभी को अपनी सोच से बाहर निकालने का प्रयास करो। अभ्यास कर कुछ समय बाद आना।

कुछ समय पश्चात् वह व्यक्ति संत के पास फिर आया। दरवाजा खटखटाया संत ने पूछा कौन? व्यक्ति बोला 'मैं' आया हूँ। संत बोले अब भी तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारा 'मैं' तुम्हारे साथ है। अगर तुम इस 'मैं' और 'भीड़' को छोड़ सको तो फिर यहां आने की आवश्यकता रह ही नहीं जाएगी।

तुम बस 'मैं' से मुक्ति पा लो फिर संन्यास लेने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाएगी।

व्यक्ति संत की बात समझ गया।

सद्गुरुदेव ने इसी प्रकार रहने के जीवन को कमलवत बताया है और कहा है कि त्याग कर भागने से काम नहीं चलेगा। जैसे जल में कमल रहता है वैसे ही समाज में निर्लिप्त भाव से कर्म करते हुए रहो एवं अपने आपको उस प्रभु चरणों में समर्पित कर दो। यही संन्यास है।

गुरु ही जीवन का आधार

वेद चार हैं

और उन पर व्याख्या रूप में एक सौ आठ उपनिषद लिखे गये हैं लेकिन गुरु तत्त्व क्या है और गुरु में ही सारा ब्रह्माण्ड व्याप्त है

इसकी व्याख्या विस्तृत रूप में दुर्लभोपनिषद में ही की गई, सद्गुरुदेव की अमृतवाणी में एक शिष्य की आर्तपुकार..

श्रीमद्देवीभागवत
मत्स्यमहापुराण
पद्मपुराण
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

दुर्लभोपनिषद समस्त उपनिषदों में अद्बितीय और श्रेष्ठ है। ऋषियों ने इस बात को स्वीकार किया है कि जहां दुर्लभोपनिषद की चर्चा होती है वहां पवित्रता का वातावरण बन जाता है। जहां दुर्लभोपनिषद के श्लोकों का उच्चारण होता है वहां जीवन में आनन्द, प्रसन्नता, आह्लाद और खुशी छलकने लग जाती है। जो दुर्लभोपनिषद के पदों को गेय अवस्था में गाता है, सुनता है, मनन करता है, चिन्तन करता है वह स्वत: साधक बन जाता है, समस्त सिद्धियां स्वत: उसके सामने उपस्थित हो जाती हैं। उसको साधना करने की विशेष आवश्यकता नहीं होती क्योंकि ये श्लोक अपने आप में दिव्य और चैतन्य हैं। इन श्लोकों की रचना ही इस प्रकार हुई है कि सुनने वाले की चेतना पर, देह पर, आत्मा पर प्रहार करती है और उसके सारे शरीर को साधनामय बना देती है।

इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि वास्तव में ही वे बहुत सौभाग्यशाली व्यक्ति होते हैं जिनके घर में दुर्लभोपनिषद होता है, वास्तव में ही उनके पुण्योदय होते हैं, जब दुर्लभोपनिषद की चर्चा करते हैं। वास्तव में पूर्वजों का पुण्य जीवन में अवतरित होता है जब दुर्लभोपनिषद के शब्दों को व्यक्ति उच्चारित करता है और वास्तव में जब उसका अच्छा समय, उसका सौभाग्य प्रारम्भ होता है तब व्यक्ति के जीवन में ये श्लोक उच्चारित होते हैं और वह उन्हें सुनता है। दुर्लभोपनिषद के प्रारम्भ में ऋषि ने आत्म वाक्य में स्पष्ट किया है कि साधना और सिद्धियाँ तो स्वत: प्राप्त हो जाती हैं। साधनाओं को करने के लिए कोई विशेष प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है यदि व्यक्ति ने दुर्लभोपनिषद को पढ़ा है, उच्चारित किया हो या श्रवण किया हो और जो निरन्तर 108 दिनों तक दुर्लभोपनिषद की चर्चा करता है या सुनता है उसको प्रत्येक प्रकार की सिद्धि अपने आप प्राप्त हो जाती है वह चाहे महाकाली साधना हो या महालक्ष्मी हो, भैरव हो, यक्ष हो, गंधर्व हो या किसी प्रकार की साधना हो या सिद्धि हो।

वास्तव में यह एक द्बितीय और दुर्लभ उपनिषद है जिसको मैं स्पष्ट कर रहा हूं। इसके कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोकों को आपके सामने रख रहा हूँ।

दुर्लभोपनिषद आपके घर में हो यह सौभाग्य की बात है। मगर दुर्लभोपनिषद के प्रारम्भ में कहा गया है कि गुरु मुख से उच्चारित दुर्लभोपनिषद ही घर में हो, क्योंकि गुरु ने बोला और आपके घर में गुंजरित हुआ तो सीधा संबंध गुरु से बना। इसका तात्पर्य है कि गुरु स्वयं आपके घर में अवतरित हुए आपके घर में आए। आपने उनकी वाणी से इसके श्लोकों को सुना यह जीवन का सौभाग्य है। यही जीवन की श्रेष्ठता कही जाती है।

और मेरे जीवन का यह अनुभव रहा है कि दुर्लभोपनिषद सुनने से सुनने मात्र से आधी से ज्यादा सिद्धियां स्वत: प्राप्त हो जाती हैं। इसलिए प्रत्येक व्रत, साधना, पूजन, अर्चना से पहले इसके श्लोकों को अवश्य सुनना चाहिए, उच्चारित करना चाहिए और पूरे वातावरण को पवित्र और दिव्य बनाना चाहिए क्योंकि दुर्लभोपनिषद की चर्चा होने से या उच्चारण होने से समस्त देवता घर में आते ही हैं। समस्त ऋषि घर में पदार्पण करते हैं, उन ऋषियों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, उन देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

जहाँ दुर्लभोपनिषद है वहां समस्त देवता हैं, समस्त सिद्धियाँ हैं, पूर्णता है, श्रेष्ठता है। इसलिए यह उपनिषद अपने आप में गोपनीय रहा, इसलिए यह कम लोगों को ज्ञात हो सका। वशिष्ठ ने स्वयं

कहा कि दुर्लभोपनिषद जैसा ग्रंथ और श्लोक तो अपने आप में बन ही नहीं सकते। विश्वामित्र ने कहा कि मेरी समस्त साधनाओं का सार दुर्लभोपनिषद है। शंकराचार्य ने कहा कि मैं जो कुछ हूँ, उसका आधार दुर्लभोपनिषद है।

इसका तात्पर्य है कि दुर्लभोपनिषद वास्तव में ही अद्‌भुत कृति है। किसी एक ऋषि ने दुर्लभोपनिषद के श्लोकों की रचना नहीं की। समस्त ऋषियों के शरीर से निकले तेज पुंज ने एक आकार ग्रहण किया, एक ब्रह्मत्व ग्रहण किया और उसके मुख से उन श्लोकों का उच्चारण हुआ।

जिस प्रकार से समस्त देवताओं के शरीर से जो तेज पुंज निकला वह भगवती जगदम्बा बनी, ठीक उसी प्रकार से ऋषियों और गुरुओं के शरीर से जो तेज पुंज प्रकट हुआ उस तेज पुंज के माध्यम से ब्रह्म तत्व प्रकट हुआ और उसके मुख से ये श्लोक उच्चारित हुए। इसलिए दुर्लभोपनिषद की महिमा अपने आप में अद्धितीय है।

दुर्लभोपनिषद में गुरु से संबंधित उन पदों की कल्पना की गई है। जो पद अपने आप में अद्धितीय हैं। कुछ पद इस प्रकार के होते हैं कि उनके उच्चारण मात्र से देवता प्रकट हो जाते हैं। ये श्लोक ऐसे ही हैं कि इनके उच्चारण मात्र से देवता प्रकट होते ही हैं दृश्य अथवा अदृश्य रूप में। समस्त ऋषि, यक्ष, गंधर्व उसके सामने खड़े होते हैं हाथ बांधकर क्योंकि वहां पर दुर्लभोपनिषद का उच्चारण होता है या सुना जाता है। जहाँ ऐसा होता है उसके समान तो देवताओं का स्वर्ग भी नहीं होता, इन्द्र की पुरी भी उसके सामने नगण्य और तुच्छ मानी जाती है क्योंकि वहां पर गुरु चर्चा होती है, गुरु का चिंतन होता है, गुरु के हृदय की भाव भूमि स्पष्ट होती है और हम उन तत्वों की रचनाओं को स्पष्ट करते हैं, जिनके माध्यम से गुरु पद विन्यास को समझ सकें, गुरु के चिंतन को समझ सके।

क्योंकि यह ग्रंथ समस्त ऋषियों और देवताओं के शरीर के तपोपुंज का समग्र स्वरूप है इसलिए यह दुर्लभोपनिषद इतना सामान्य नहीं है। यह किसी मनुष्य या देवता या एक ऋषि का बनाया हुआ नहीं है, यह तो अपने आप में एक अद्धितीय चिंतन है, अद्धितीय भावभूमि है।

मैं पहली बार उन दिव्य श्लोकों का उच्चारण कर रहा हूँ जिससे कि आपका जीवन पवित्र हो सके, आप सही अर्थों में साधक बन सकें, पूर्णता प्राप्त कर सकें, आपके घर में पवित्रता का वातावरण बन सके, सुख सौभाग्य आ सके। आपके जीवन की दरिद्रता मिट सके, कष्ट और अभाव दूर हो सके, आपके परिवार में एक श्रेष्ठ वातावरण बन सके और देवताओं का निवास बन सके समस्त ऋषि आकर आपको आशीर्वाद दे सके और आपके घर में दुख, संताप, चिन्ताएं दूर हो सकें आप जीवन में वह सब प्राप्त कर सकें जो आपके जीवन का लक्ष्य है जो आपके जीवन का ध्येय है, जीवन का उद्देश्य है।

और आप जब इन श्लोकों को सुनें या पढ़ें या उच्चारण करें तब अत्यंत पवित्र और दिव्य भाव मन में ला करके अपने सामने प्रत्यक्ष या चित्र में गुरु के दर्शन करके, उनकी पूजा अर्चना करके, उनके प्रति प्रणम्य हो करके, साष्टांग प्रणाम करके, अपने आप को गुरु के हृदय से जोड़ करके इन श्लोकों को सुने या उच्चारण करें। इन श्लोकों को कानों के माध्यम से अपने हृदय में, प्राणों में उतारें, घर के समस्त वातावरण में इन श्लोकों का गुंजरण करें, अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ एवं घर के सदस्यों के साथ सुनें जिससे उनका जीवन भौतिकता से कट करके पवित्र दिव्य, चेतनावान, सुसंस्कारित बन सके। बच्चों में अच्छे संस्कार आ सकें, बड़ों के प्रति आदर सत्कार उनके हृदय में आ सके। उनके घर में देवता खेल सकें, गणपति, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, मरुदगण सभी उनके घर में स्थायी निवास कर सकें और अटूट लक्ष्मी का निवास उनके घर में हो सके।
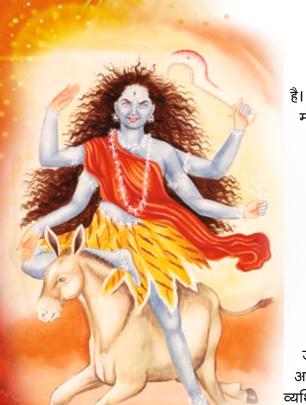
इसीलिए तो इसको जीवन का श्रेष्ठतम उपनिषद माना गया है। इसीलिए तो महाऋषियों ने एक स्वर में स्वीकार किया है कि यह मनुष्यों के द्वारा उच्चारित उपनिषद नहीं है यह तो समस्त योगियों का तपोपुंज स्वरूप है। उन्हीं श्लोकों को मैं उच्चारित कर रहा हूँ।

गुरुर्वै सदां पूर्व मदैव तुल्यं
प्राणो वद्धार्यै वहितं सदैव:
चित्यं विचिन्त्यं भवमेक रूपं
गुरुर्वै शरणयं गुरुर्वै शरणयं।।

मैं इस जीवन में क्यों आया हूँ, मेरे जीवन की डोर कहाँ बंधी हुई है, ईश्वर ने मेरा जन्म क्यों किया है, मैं इस पृथ्वी तल पर क्यों हूँ, मेरे जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य क्या है, इनको तो गुरुदेव केवल आप ही समझा सकते हैं। इसको तो कोई और समझा नहीं सकता और सब तो जीवन के स्वार्थमय बंधन हैं, जिनसे मैं जकड़ा हुआ हूँ, उन पाशों से मैं बंधा हुआ छटपटा रहा हूँ, वेदनाग्रस्त हो रहा हूँ, अपने आप में दु:खी और संतप्त हो रहा हूँ, प्रत्येक पल अपने आप में व्यथित होता हुआ, निरन्तर मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा हूँ। मेरे जीवन में सुख नहीं है, मेरे जीवन में कोई चिन्तन नहीं है, मेरे जीवन में सौभाग्य नहीं है, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि आखिर मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? और मेरे जीवन का लक्ष्य केवल अपने जीवन को समझना है।

और इस जीवन को समझाने के लिए, यथार्थता और परिचित कराने के लिए संसार में कोई शक्ति है, स्वरूप है तो केवल आप हैं गुरुदेव।

इसीलिए मैं अत्यंत भीगे नयनों से गदगद कंठ से, भाव विह्वल वक्ष स्थल से, आपको दण्डवत प्रणाम करता हुआ, आपके चरणों में अपने सिर को रखता हुआ प्रार्थना करता हूँ कि आप उस मर्म को रहस्य को चिंतन को समझाएं जो मेरे जीवन का उद्देश्य है, जो मेरे जीवन का लक्ष्य है और पूर्णता है क्योंकि गुरुदेव मैं तो केवल आपका हूँ आपकी शरण में हूँ।

गुरुर्वै प्रपन्ना तपैवां वदैवं
अत्यो वदां वै पहित सदैव
देवो त्वमेव भवतं सहिचिंत्य रूपं
गुरुर्वै शरणयं गुरुर्वैशरणयं

लोग कह रहे हैं कि देवताओं की आराधना करूं, कौन से देवता की आराधना करूं? हजारों लाखों देवता हैं। मैं किन-किन के सामने गिड़गिड़ाऊं, किन-किन की चौखट पर अपने सिर को फोड़ूं, कहां-कहां जाकर मैं याचना करूं, मैं दरिद्री भिखारी होकर किन-किन देवताओं के आगे भीख मांगता फिरूं और वे मुझे दे भी क्या सकेंगे? वे सब तो स्वयं आपके सामने हाथ बांधे खड़े हैं और जो देवता भी आपके सामने हाथ बांधे खड़े हैं, वे देवता भी आपसे बहुत कुछ प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं। तो फिर मैं उन भिखारियों के पास क्या जाऊँ मैं आपके पास सीधा आना चाहता हूँ, मैं आपके चरणों में बैठना चाहता हूँ, मैं आपके सामने उन सिद्धियों को प्राप्त करना चाहता हूँ जो आपसे प्राप्त हो सकती हैं। यदि आप देवताओं को दे पाने में समर्थ हैं तो निश्चय ही आप हमें भी दे पाने में समर्थ हैं, मुझे भी दे पाने में समर्थ हैं।

मैं देवताओं से परिचित नहीं हूँ और न ही देवता मुझसे परिचित हैं, मैंने देवताओं को देखा

नहीं है। मैंने केवल चित्रों के माध्यम से देवताओं के अंकन को देखा है। हो सकता है कि वह चित्र सही हो, हो सकता है कि वह चित्र गलत हो। कोई जरूरी नहीं है कि जैसे चित्र में मैंने देवताओं को देखा है ब्रह्मा को देखा है, विष्णु को देखा है ठीक उसी रूप में वे देवता हों, मैं नहीं समझता।

यह तो चित्रकार की एक भावना है जो उसने कपड़े पर चित्र में उतारी है। उस चित्रकार ने उस देवता को देखा नहीं, केवल कल्पना के माध्यम से उनके स्वरूप बिम्ब को उस कपड़े पर उतारा है। इसीलिए कपड़े पर जो देवता का चित्र है, या जो मूर्ति है वह सब अपने आप में अधूरा है।

मैं देवताओं से परिचित नहीं हूं, परन्तु गुरुदेव मैं आपसे परिचित हूं, मैंने आपको देखा है, मैंने आपके सारे शरीर को स्पर्श किया है, मैं आपके चरणों में बैठा हूं, आपकी आँखें, आपकी नाक, कान, हाथ, पाँव, वक्ष स्थल और गर्वोन्नत भाल इन सबको मैंने अपनी आँखों के माध्यम से अपने हृदय में उतारा है इसलिए मैं आपसे परिचित हूँ

आपसे परिचित हूं और आप तो दानी हैं, आप तो श्रेष्ठ हैं, ज्ञानी हैं, चेतना पुंज हैं, आप बहुत कुछ देने में समर्थ हैं। समस्त ब्रह्माण्ड को जो देने में समर्थ हैं तो मुझ जैसे अकिंचन व्यक्ति को कुछ दे पाना आपके लिए असंभव है ही नहीं, अत्यन्त सरल और सामान्य सी बात है। इसलिए मैं तो आपमें ही समस्त देवताओं को देख रहा हूं, मैं तो देख रहा हूं कि ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र समस्त आपके शरीर में समाहित हैं।

जहाँ-जहाँ भी जिस रोम में भी मेरी दृष्टि पड़ती है वहां एक नवीन देवता के मुझे दर्शन होते हैं और ये सारे देवताओं के समूह को जब मैं अपने सामने देखता हूं तो भाव विह्वल हो जाता हूं, गद-गद हो जाता हूं। अपने आप में मैं रह नहीं पाता हूं, इसीलिए आप मुझे देवताओं की आराधना करने के लिए न कहिए। मैं देवताओं की आराधना चाहता भी नहीं हूं।

मेरे सामने तो प्रत्यक्ष देवता हैं, सशरीर देवता हैं, चैतन्य पुंज देवता हैं फिन इन जीवित जागृत देवताओं को छोड़ करके उन पाषाण मूर्तियों को पूजने से क्या होगा। मैं तो गुरुदेव केवल मात्र आपकी शरण में हूं।

सतंवै सदानं देवालयोवै
प्रातोर भर्वेवै सहितं नर्दैवे
पूर्तं परांपूर्ण मदैव रूपं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरणयं।

मैं काशी और कांची, हरिद्वार और मथुरा तीर्थ स्थलों पर जाकर भी क्या करूंगा। उस गंगा में भी बार-बार डुबकी लगा लेने से क्या हो जाएगा? अगर गंगा में डुबकी लगाने से पवित्र और दिव्य बन जाता तो सारी मछलियां और मेंढक अपने आप में पवित्र और दिव्य हैं। यदि काशी में रहने से ही जीवन में पूर्णता प्राप्त हो जाती है तो वहां श्वान और खर बहुत घूमते हैं, वे सभी अपने आप में पवित्र और दिव्य आत्मा बन जाते। वहां जाने से कुछ नहीं हो सकता, वहां कुछ संभव है ही नहीं। उन देवालयों में तो एक पत्थर की मूर्ति है,जो बोल नहीं सकती, जो मेरी बात सुन भी नहीं पाती, उन पत्थरों से कुछ कहना अपने सिर को फोड़ने के बराबर है क्योंकि वे मेरी बात नहीं सुन पाते, मैं

अपनी बात उन तक नहीं पहुंचा सकता क्योंकि पत्थरों को कहने से कोई लाभ नहीं होता है। मेरे लिए हरिद्वार और काशी, मथुरा और कांची अपने आप में नगण्य हैं। मैं तो आपको और आपकी देह को पूर्ण रूप से देवालय मानता हूँ। पूरा मंदिर है यह जो मेरे सामने है।

और आपकी देह मंदिर के रूप में है, जो जीवित और जागृत मंदिर है, चैतन्य मंदिर है, चलता फिरता मंदिर है, बोलता हुआ मंदिर है, अपने आप में आशीर्वाद देता हुआ मंदिर है। आपके दोनों पैर इस देवालय के स्तम्भ है। अच्छे स्तम्भों पर यह मंदिर टिका है। इस मंदिर में जो मूर्ति स्थापित है आपके प्राणों की, आपके हृदय की, आपकी चेतना की। आपका हृदय स्थल अपने आप में एक गर्भगृह है, उस गर्भगृह में जाकर जब मैं खड़ा होता हूँ तो मेरा सारा शरीर भाव विह्वल हो जाता है। चेतना युक्त हो जाता है, एक-एक रोम, चैतन्य होकर पुकारने लग जाता है और उनमें से गुरुदेव के अलावा कोई शब्द निकलता ही नहीं।

मेरी आँखों से आँसु की धारा बहने लग जाती है, मेरा सारा शरीर थरथराने लग जाता है जब मैं उस जीवित जाग्रत मूर्ति को देखता हूँ और इस गर्भ ग्रह में जो मूर्ति है, प्राण हैं, जो हृदय है वो अपने आप में इतना स्पंदनशील है, इतना आह्लादकारक है कि उसको देख करके मेरे सारे शरीर में चैतन्यता व्याप्त हो जाती है, सारे शरीर में ओजस्विता आ जाती है। ऐसा लगता है कि मेरा सारा शरीर प्रसन्नता के आवेग में उछलने लग गया है।

और इस गर्भ गृह के ऊपर जहां मूल मूर्ति स्थापित है, जहां आपका हृदय है, इसके ऊपर सिर के रूप में शिखर है जैसा मंदिरों के ऊपर शिखर होता है। उस शिखर को देखकर के ऊँचाई का भाव होता है, हिमालय का भाव होता है। आपका गर्वोन्नत सिर, आपका दैदीप्यमान सिर, ललाट, भाल, आँखें, आपका मुंह आपकी जिह्वा और आपका सारा शरीर अपने आप में उस मंदिर की भाँति है जिसको देखते ही पवित्रता का बोध होता है।

ऐसा लगता है कि आपको देखने से मानो हजार-हजार तीर्थों में स्नान कर लिया हो, सातों समुद्रों में स्नान कर लिया हो, ऐसा लगता है कि कोई गंगा आकर मुझे स्नान कराकर चली गई है और जहां पर आपके नेत्रों की कृपा दृष्टि होती है, जहाँ नेत्रों से आनंद की वर्षा होती है, वह तो वही समझ सकता है जो आपके पास खड़ा होकर के उस कृपा दृष्टि से भीगा है, उस आनन्द से भीगा है, आपके नेत्रों से निकलती दिव्यता को अनुभव किया है, उससे धन्य तो कोई हो ही नहीं सकता। उसके समान तो कोई व्यक्ति हो ही नहीं सकता।

वह तो एक अद्बितीय चिंतन है, अद्बितीय धारणा है। मैं इस शिखर युक्त, गर्भ गृह युक्त, स्तंभ युक्त, चलते-फिरते मंदिर को छोड़कर और किस मंदिर में जाऊं। विश्वनाथ का मंदिर, मथुरा का मंदिर, कृष्ण-राम का मंदिर या अन्य मंदिर मेरे लिए फिर कैसे उपयोगी हैं? उन मंदिरों से मुझे फिर क्या मिलने वाला है?यदि

मैं इस मन्दिर को ही नहीं समझ सका, इस मंदिर की पूजा नहीं कर सका, इस मंदिर को स्वच्छ और दिव्य नहीं रख सका, इस मंदिर में सेवा नहीं कर सकता तो फिर मेरा सब कुछ जानना व्यर्थ है क्योंकि इस मंदिर में तो समस्त देवता निवास करते हैं। इस मंदिर को देखने के लिए तो देवता तरसते हैं, इस मंदिर को स्पर्श करने के लिए देवता भी तरसते हैं।

गुरुदेव मुझे किसी मानसरोवर, किसी गंगा, किसी हरिद्वार, किसी समुद्र के पास जाने की आज्ञा मत दीजिए। मुझे उनसे कोई मोह नहीं है। वे तो केवल एक पानी के बहाव हैं। वे तो मछलियों के सागर हैं, खारे समुद्र हैं, झील हैं, निर्जीव जो बोल नहीं सकते। मुझे ऐसे तीर्थोंमें जाने से कोई प्रयोजन है न आवश्यकता है क्योंकि जहां समस्त तीर्थों का स्नान मैं आपके नेत्रों से निकलती हुई कृपा से कर सकता हूँ,फिर इससे ज्यादा सौभाग्य तो कुछ हो ही नहीं सकता।

वास्तव में ही मैं सौभाग्यशाली हूँ, वास्तव में ही मैंने जीवन के पुण्य किए होंगे जो मैं आपके सामने खड़ा हूँ। वास्तव में ही मेरे पुण्यों का उदय हुआ होगा कि आप सजीव रूप में मेरे सामने हैं, इस पीढ़ी में इस युग में मैं आपके सामने हूँ। वास्तव में ही आपके नेत्रों की वर्षा से आप्लावित हूँ, वास्तव में ही आपके नेत्रों से निकली आनन्द की वर्षा से भीगता हुआ मैं नाच रहा हूँ, छलछला रहा हूँ, कूद रहा हूँ क्योंकि पूज्य गुरुदेव मैं केवल आपकी [illegible] में हूँ।

अयूर्यं वदेवं चिंतं सहेतं
पूर्वोत्तरूपं चरणं सदेयं
आत्मोसतां पूर्व मदैव चिन्त्यं
गुरुर्वै शरणयं, गुरुर्वै शरणयं।

वह तो मूर्ख और मूढ़ होगा जो आपके चरण छोड़कर इधर-उधर भटकता होगा। उसके पाप ही उसके बीच में आते होंगे जो आपकी दृष्टि से ओझल होता होगा। उसके जीवन का दुर्भाग्य होगा कि वह आपसे दूर खड़ा होकर भी सांस ले रहा होगा। आपसे दूर रह कर सांस लेने की कल्पना भी अपने आप में आश्चर्यजनक है। जिस प्रकार से समुद्र से निकलने पर मछली तड़प कर मर जाती है उसी प्रकार से आप से अलग होकर मर क्यों नहीं जाते। तड़प कर समाप्त क्यों नहीं हो जाते, जिन्दा रहने का महत्त्व क्या है, अधिकार क्या है?

जिस प्रकार बिना चांद को देखे चकोर अपना सिर फोड़कर समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार हम अपना सिर फोड़कर समाप्त क्यों नहीं हो जाते। आपका वियोग हम कैसे सहन कर सकते हैं। यह कैसे संभव है कि आप दूर हों और हमारे प्राण हमारे शरीर में टिके रह सकें, ऐसे प्राण की जरूरत भी नहीं है। ये प्राण तो व्यर्थ हैं, तुच्छ हैं। ऐसा लग रहा है जैसे मुर्दा शरीर में धड़क रहे हों।

मुझे ऐसा शरीर नहीं चाहिए गुरुदेव। मुझे ऐसे प्राण, ऐसी धड़कन भी नहीं चाहिए। उस धड़कन का महत्व और मूल्य भी क्या है जो आपके बिना धड़क कर रह जाती हो। आप हैं तो जीवन है, संसार है, खुशियां हैं,

प्रसन्नता है, आह्लाद है और दिव्यता है।

और आप नहीं है और मैं जीवित रहूँ यह मेरे जीवन का दुर्भाग्य है, मेरे जीवन की न्यूनता है। यह मेरे जीवन का अभाव है, वास्तव में मैंने कोई पाप किए होंगे जो मैं आपके वियोग को सहन करके भी जीवित हूँ। वास्तव में ही मेरे जीवन का दुर्भाग्य है कि आप नहीं हैं और मैं साँसें ले रहा हूँ, वास्तव में ही मेरे जीवन की न्यूनता है कि बिना आपके भी मैं सांस ले रहा हूँ, खाना खा रहा हूँ, पानी पी रहा हूँ और चल रहा हूँ। मैं मर क्यों नहीं जाता, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मृत्यु मुझे दबोच क्यों नहीं देती, समाप्त क्यों नहीं कर देती क्योंकि मरने के बाद कम से कम मैं आपके चरणों से लिपट कर तो रहूँगा। मैं आपमें अपने को लीन तो कर सकूँगा, क्योंकि जहाँ पर भी मेरी मृत्यु हो मेरे देह की राख उड़ कर आपके चरणों में गिरे और उस राख पर आपके पांव पड़ें। इससे बड़ा सौभाग्य मेरे जीवन का क्या हो सकता है? मैं ऐसी देह नहीं चाहता हूँ, मैं ऐसा हृदय नहीं चाहता, मैं ऐसे प्राणों को नहीं चाहता जो आपकी अनुपस्थिति में जीवित जाग्रत हो सके। ऐसे जीवन से कोई मतलब नहीं है।

मैं तो आपके पास रहना चाहता हूँ। चकोर जिस प्रकार चाँद को देखता रहता है उसी प्रकार मैं हरदम आपको देखते रहना चाहता हूँ। मैं तो हर क्षण पपीहे की तरह गुरु-गुरु शब्द का उच्चारण करना चाहता हूँ। हर क्षण आप मेरी कल्पना में बने रहें। हर क्षण मेरी प्रत्येक धड़कन के साथ गुरु शब्द का उच्चारण हो। मेरा प्रत्येक शब्द गुरुमय हो, प्रत्येक चिन्तन गुरुमय हो। मेरा रोम-रोम आवाज दे सके 'गुरु-गुरु' और इसके अलावा और किसी शब्द का मुझे ज्ञान नहीं हो। न मुझे काली मंत्र की जरूरत है न लक्ष्मी मंत्र की। किसी मंत्र की मुझे आवश्यकता नहीं है क्योंकि जो मंत्रों में श्रेष्ठ और अद्वितीय यदि गुरु मंत्र मेरे पास है तो उससे श्रेष्ठ मंत्र और क्या हो सकता है?

जहां गुरु मंत्र है वहाँ सब कुछ जीवन की श्रेष्ठता है और इसीलिए मैं चाहता हूँ कि जो जीवन के क्षण मुझे प्रभु ने दिए हैं वे सारे क्षण आपके साथ व्यतीत हों, आपके लिए व्यतीत हों, मेरा शरीर आपके काम आ सके, मैं आपके चरणों से लिपट सकूं, मैं आपकी सुगंध से आप्लावित हो सकूं, मैं चकोर की तरह टकटकी लगाकर बराबर देखता रहूं।

यदि आपसे विरह होना ही पड़े, अलग होना ही पड़े तो मछली की तरह तड़पकर मर जाऊं, मृत्यु मुझे प्राप्त हो जाए ऐसा चाहता हूँ। मैं तो ऐसा आपसे आशीर्वाद चाहता हूँ कि एक क्षण भी जुदाई सहन नहीं कर सकूं। मेरी आँखों से आँसू प्रवाहित हो और प्रत्येक आँसू में आपका बिम्ब हो, आपका चित्र हो, प्रत्येक आंसू पर आपका नाम लिखा हो। मेरे हृदय की धड़कन में आपका नाम उच्चारित होता हो और प्रत्येक धड़कन में गुरु मंत्र का उच्चारण हो, मैं जीवन की प्रत्येक स्थिति में ऐसा चाहता हूँ।

यदि ऐसी स्थिति मुझे प्राप्त है तो मेरा जीवन धन्य है, तो मेरा जीवन पवित्र है, यदि ऐसा नहीं है तो मेरे जैसा पापी, अधर्मी कोई नहीं हो सकता।

आप मुझे आशीर्वाद दें तो ऐसा आशीर्वाद दें, आप मुझ पर कृपा करें तो ऐसी कृपा करें कि मैं हर क्षण आपके पास रह सकूं, आपकी वाणी को सुन सकूं, आपके शब्दों को अपने हृदय में उतार सकूं, मैं एकटक आपको ही देखता रहना चाहता हूँ। मैं आपमें समाहित हो जाना चाहता हूँ, लीन हो जाना चाहता हूँ क्योंकि गुरुदेव मैं आपकी शरण में हूँ।

चैतन्य रूपं मपरं सदैव
प्राणोद मेव चरण सदैव
स तीर्थो सदेव भक्तं वदैवं
गुरुर्वै शरणयं गुरुर्वै शरणयं

गुरुर्वै शरणयं गुरुर्वै शरणयं और लोगों ने अनुभव किया हो या नहीं किया हो मगर मैं तो आपके शरीर का एक हिस्सा हूँ। मैंने अनुभव किया है कि आप हिमालय से भी महान गर्वयुक्त और सागर से भी अधिक विशाल हैं। सागर भी आपके सामने बहुत तुच्छ है, नगण्य है। हिमालय बहुत बौना है, आपका गर्वोन्नत भाल हिमालय से भी बहुत ऊंचाई की ओर उठा हुआ है और जब मैं अपना सिर उठाकर ऊपर की ओर देखता हूँ तो मेरी आँखें चौंधिया जाती हैं।
मैं समझ नहीं पाता हूँ कि इतने अद्धितीय और उन्नत गर्वोन्नत भाल को अपनी आँखों के माध्यम से मैं कैसे समाहित कर सकूंगा। मैं जब आपके वक्षस्थल को देखता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे पूरा समुद्र हिलोरें मार रहा हो, उस वक्षस्थल में अपने सिर को छिपा लेना चाहता हूँ, उसमें लीन हो जाना चाहता हूँ। आप मुझे अपनी बाँहों के घेरे में भीच लें, इतना भीच लें कि मैं आपके सीने में आपके हृदय में प्रवेश कर लूं, उसमें समाहित हो जाऊं, उसमें एकाकार हो जाऊं, जहाँ मुझे सुख मिल सकेगा, सौभाग्य मिल सकेगा, तृप्ति मिल सकेगी, पूर्णता प्राप्त हो सकेगी।

और जब मैं आपके सम्पूर्ण शरीर को देखता हूँ तो मेरे सामने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड साकार हो जाता है और शरीर को जब मैं भाव विह्वल होकर देखता हूँ तो कहीं मुझे ब्रह्मलोक दिखाई देता है, कहीं विष्णु लोक दिखाई देता है, कहीं इंद्र लोक दिखाई देता है। इन्द्र, गंधर्व, यक्ष, किन्नर और उन समस्त देवताओं के आकार मुझे दिखाई देते हैं। चन्द्रलोक और सूर्य लोक मुझे स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होते हैं।

ऐसा लगता है जैसे सारा ब्रह्माण्ड मेरे सामने साकार हुआ हो। फिर मैं कौन सी साधना करूं, उस ब्रह्माण्ड साधना करने से मुझे क्या लाभ होगा, ब्रह्माण्ड साधना करके तो मैं एक-एक करके उन लोकों को देख पाऊंगा, यहां सिर को देखता हूँ तो एक अलग ब्रह्माण्ड दिखाई देता है जब मैं आपके नेत्रों को देखता हूँ तो सूर्य लोक और चन्द्र लोक स्पष्ट दिखाई देते हैं। जब मैं आपके मुस्कुराते हुए चेहरे को देखता हूँ तो मैं अपने आपको बहुत छोटा और नगण्य अनुभव करता हूँ, ऐसा लगता है कि इस ब्रह्माण्ड में मेरा अस्तित्व कहाँ है, ऋषि हैं, योगी हैं, गंधर्व हैं, किन्नर हैं, ब्रह्मा है, विष्णु हैं, महेश हैं, गर्ग, अत्रि, कणाद आदि ऋषि हैं। इन सब ऋषियों और देवताओं के बीच मेरा अस्तित्व कहाँ है। मैं तो बहुत छोटे से कण की तरह दिखाई देता हूँ।

उसके बावजूद भी आपने इस कण को अपनाया, इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है? इस कण पर आपकी कृपा दृष्टि हुई इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है? आपने इस कण पर हाथ रखा यह मेरा अहोभाग्य है। आपने इस कण को अपनाया यह मेरे पूर्व जन्म के पुण्यों का उदय है, मुझे अपने आप पर

गर्व है कि मैं उस ब्रह्माण्ड का हिस्सा बन सका, उस ब्रह्माण्ड की कृपा दृष्टि मुझ पर पड़ी, उस ब्रह्माण्ड की वर्षा मुझ पर हो सकी और मैं उसमें अवगाहन कर सका। आपकी और मेरी तुलना हो ही नहीं सकती, हजारों-हजारों जन्म लेने के बाद भी मैं आपके बराबर चिंतन कर ही नहीं सकता।

एक कण की और विशाल पृथ्वी की तुलना नहीं हो सकती, एक बूंद और विशाल समुद्र की तुलना नहीं हो सकती, ठीक उसी प्रकार से मेरी और आपकी तुलना करना ही व्यर्थ है, तुच्छता है, नगण्यता है, मेरा ओछापन है।

मैं तो इस पूरे ब्रह्माण्ड का एक छोटा सा कण भी बना रह सकूँ तो बहुत बड़ी उपलब्धि है इस ब्रह्माण्ड में मेरा अस्तित्व है और इससे भी बड़ा सौभाग्य है कि इस कण पर आपकी कृपा दृष्टि है। इस कण से आप परिचित हैं, इस पर आपकी कृपा दृष्टि हुई है, इस कण ने आनंद का अनुभव किया है। इससे बड़ा सौभाग्य और मुझे क्या चाहिए।

और जब मैं पूर्ण भावना के साथ आपके चरणों में झुकता हूँ तो मुझे वो चरण दिखाई नहीं देते मुझे तो वहां विश्वनाथ की नगरी दिखाई देती है, मुझे वहां सोमनाथ मंदिर दिखाई देता है, मुझे वहां काशी और कांची, मथुरा और हरिद्वार दिखाई देते हैं। समस्त तीर्थ मुझे आप में दिखाई देते हैं, इन चरणों को आंसुओं से जब मैं भिगोता हूँ तो मुझे ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र दिखाई देते हैं। वे केवल चरण नहीं हैं वे तो सम्पूर्ण देव लोक हैं और जब मैं आंसुओं के माध्यम से उन चरणों को प्रक्षालित करता हूँ तो ऐसा लगता है कि जैसे समस्त देवताओं की पूजा अर्चना एक साथ कर ली हो। वास्तव में ही आपका यह अद्विितीय शरीर, गर्वोन्नत भाल, तीक्ष्ण और सुंदर आँखें, नुकीली नाक और अद्विितीय मुस्कुराहट मुझे पागल कर देती है, मैं खो जाता हूँ उस मुस्कुराहट में ,मैं भूल नहीं पाता इस मुस्कुराहट को, मैं कहीं भी होता हूँ तो यह मुस्कुराहट मेरा पीछा करती है। हर क्षण इस मुस्कुराहट में मैं अपने आपको निमग्न करता रहता हूँ, हर क्षण इच्छा होती है कि मैं दौड़ूं, आपके पास आऊं और आपको देखूं।

और जब मैं आपके वक्षस्थल को देखता हूँ तो लगता है कि जैसे सम्पूर्ण हिमालय सामने खड़ा हो गया हो और इस वक्षस्थल में इतनी ताकत, इतनी क्षमता, इतना उठा हुआ भाल है कि यदि यह एक बार हिमालय से टकरा जाए तो हिमालय को कई कदम पीछे हटना पड़े।

ऐसा अद्विितीय वक्षस्थल तो जीवन में और हो ही नहीं सकता, न आर्यों का रहा न देवताओं का रहा। यह तो मैंने देखा है, इस वक्षस्थल से मैं चिपका हूँ, इस वक्षस्थल का मैंने स्पर्श किया है, इस वक्षस्थल की गर्मी को मैंने एहसास किया है। इस उष्णता को मैंने अपने हृदय में, प्राणों में उतारा है। इस धड़कन को अपने कानों से सुना है और आपके लम्बे बाहु अपने आप में ताकत और साहस के परिचायक हैं। ऐसा लगता है कि स्वयं इंद्र सामने खड़ा हो गया हो, ऐसा लगता है कि पूर्ण ऐश्वर्य क्षमता के साथ खड़े हों।

और आपके चरण तो समस्त तीर्थों का आगार हैं, समस्त देवालयों का आधार हैं, समस्त ब्रह्माण्ड के ऋषियों और मुनियों के तपोपुंज का आधारभूत स्वरूप हैं। वास्तव में ही आपका वरद हस्त आपकी कृपा, आपकी श्रेष्ठता और अद्विितीयता का वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं एक मुंह से नहीं हजार-हजार मुंह से भी अगर आपके गुणों को स्पष्ट करना चाहूं तो नहीं कर सकता। अगर पूरी पृथ्वी को कागज बना दिया जाए और उस पर आपके गुणों को लिखा जाए तो वह धरती बहुत छोटी रह जाएगी। फिर भी आपके गुण व्याख्यायित नहीं हो सकते। मैं तो पूर्ण दरिद्री हूँ, शब्दों का

भिखारी हूँ, मैं तो आपका वर्णन कर ही नहीं सकता। मगर मैं एकटक आपको देख सकता हूँ। मैं तो इन आँखों के माध्यम से आपको हृदय में उतार सकता हूँ। मैं अपनी धड़कन को मिला देना चाहता हूँ, एकाकार हो जाना चाहता हूँ, आपके चरणों में अपने शरीर को निमग्न कर देना चाहता हूँ। अपने आपको पूर्णता के साथ आपमें समावेश कर देना चाहता हूँ। अपने अस्तित्व को मिटा देना चाहता हूँ और आपके चरणों में सिर रखकर अपने नेत्रों के माध्यम से उनको प्रक्षालित करते हुए सम्पूर्ण देवताओं के दर्शन कर लेना चाहता हूँ।

गुरुदेव मैं केवल आपका हूँ और आपकी शरण में हूँ। पूरे ब्रह्माण्ड में कोई मेरा रखवाला नहीं है कोई मेरा ख्याल रखने वाला नहीं है, मैं तो केवल और केवल आपकी शरण में हूँ।

चैतन्य रूपं भवतं सदैवः
ज्ञानोत्वासं सहितं तदेवं
देवो तथां पूर्ण मदैव शक्ति
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं।

इस ब्रह्माण्ड में जितनी भी शक्तियां हैं वह चाहे महाकाली हो या महासरस्वती हो, चाहे बगलामुखी हो, चाहे धूमावती हो, छिन्नमस्ता हो, जगदम्बा हो किसी भी प्रकार की कोई भी शक्ति हो मैं तो सबको आपके सामने अठखेलियां करते हुए देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि वे आपके सामने नृत्य कर रही हैं, मैं देखता हूँ कि वे आपकी कृपा कटाक्ष पाने के लिए प्रयत्नशील हैं। वे स्वयं टुकुर-टुकुर आपकी ओर निहारती रहती हैं कि कब आपकी नजर उठे, कब आपकी उन पर कृपा दृष्टि हो और जब मैं यह सब कुछ देखता हूँ तो मैं समझता हूँ कि आपको छोड़कर कौन सी साधना मेरे लिए उपयुक्त है, कौन सी शक्ति मुझे चाहिए, कौन सी साधना चाहिए?

तारा मंत्र से क्या हो जाएगा? काली मंत्र का उच्चारण करने से क्या होगा? नवार्ण मंत्र के द्वारा क्या होगा? इन सबको तो मैं आपके सामने नृत्य करते देख रहा हूँ। ये सारे गंधर्व, किन्नर, देवता नृत्य करते जब मैं आपके सामने देखता हूँ तो समझता हूँ कि आपसे अधिक और देवत्व क्या हो सकता है? आपसे बड़ा और पुरुषत्व और क्या हो सकता है? आप तो जीवन का एक पूंजीभूत स्वरूप हैं, ब्रह्माण्ड का एक पार्श्व हैं, चैतन्य स्वरूप हैं, अपने आप में समग्र हैं और जब मैं आपको देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि समस्त ब्रह्माण्ड को अपने आप में आत्मसात कर रहा हूँ। सारा ब्रह्माण्ड मेरे हृदय में अवतरित हो जाता है। मेरा हृदय, अपने आप में धड़कने लग जाता है, चैतन्य हो जाता है, मेरा सारा शरीर थरथराने लग जाता है। मैं अपने आप में पूर्ण कुण्डलिनी जागरण क्रिया योग से दीक्षित हो जाता हूँ। सारा शरीर अपने आप में पूर्ण हो जाता है। अपने आप में तपस्वी बन जाता हूँ, पूर्णता युक्त हो जाता हूँ और सही अर्थों में मैं विश्वामित्र, वशिष्ठ, कणाद बन जाता हूँ। मैं विष्णु और रूद्र बन जाता हूँ क्योंकि वे सब तो आपके सामने सामान्य और नगण्य हैं। जिस प्रकार से मैं खड़ा हूँ उसी प्रकार से ये सारी शक्तियाँ, ये सारे देवता, ये सारे यक्ष, ये सारे गंधर्व, ये सारे किन्नर मैं आपके सामने खड़े देख रहा हूँ।

इसलिए गुरुदेव उनके समान तो मैं भी बन गया हूँ। ये हो सकता है कि ये सारे कुछ आगे और मैं कुछ पीछे रुक गया हूँ। हो सकता है उनके और मेरे बीच फासला हो मगर यदि आपकी कृपा दृष्टि उन पर है तो उनसे भी पहले मुझ पर है। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है, प्रसन्नता की बात है, यह मेरे लिए आह्लाद की बात है। पुस्तकों में लिखे मंत्रों का मैं क्या करूं? उन मंत्रों से
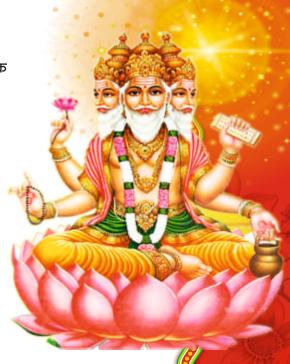
क्या हो जाएगा? वे मंत्र तो निर्जीव शब्द हैं, उन शब्दों को सुनकर भी क्या लाभ हो जाएगा? मुझे मंत्र नहीं चाहिए, मुझे तंत्र नहीं चाहिए, मुझे योग और दर्शन नहीं चाहिए। आपके मुंह से निकला प्रत्येक शब्द मंत्र है। आपके मुंह से निकला प्रत्येक शब्द मेरे लिए आज्ञा है, तंत्र है। यदि मैं उन शब्दों का पालन कर लेता हूँ, यदि मैं उन शब्दों को अपने हृदय में उतार लेता हूँ, तो अपने आप तंत्र मेरे सामने साकार और पूर्णता के साथ स्पष्ट हो जाएगा। अपने आपमें तंत्र चैतन्ययुक्त बन जाएगा।

यदि मैं आपके शरीर को स्पर्श कर लेता हूँ तो अपने आप योग की सारी भावभूमियाँ मेरे शरीर में अवतरित हो जाएंगी। जब मैं आपके शरीर को स्पर्श करता हूँ तो सारे शरीर में एक विद्युत प्रवाह सा अनुभव होता है। ऐसा लगता है कि जैसे बहुत जोरों से मैं उछल गया हूँ। ब्रह्माण्ड में समाहित होने लग गया हूँ, क्योंकि उन तेजस्विता को मैं अपने हृदय में, शरीर में अनुभव करने लगता हूँ।

इसीलिए न मुझे तंत्र की आवश्यकता है, न मंत्र की आवश्यकता है, न योग की, न मीमांसा की, न किसी प्रकार की साधना की या सिद्धियों की। मैं सिद्धियों को लेकर क्या करूंगा? जब मेरे जीवन की पूर्णता, मेरे जीवन का लक्ष्य आपके चरणों में अपने आप को मिटा देना है, अस्तित्वमय बना देना है, तो फिर उन मंत्रों और साधनाओं, उन काली और सरस्वती से क्या हो जाएगा, उस बगलामुखी और छिन्नमस्ता से क्या हो जाएगा?

वे तो मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं रह गए हैं, जब मैंने आपको देखा है, समुद्र को देखा है, फिर बूंद को देखकर क्या करूंगा, जब मैंने आकाश को देखा है तो फिर एक टिमटिमाते तारे को देखकर क्या करूंगा? जब मैंने एक वसंत को अनुभव किया है तो एक छोटे से सुगंध के झोंके से क्या होगा? गुरुदेव मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि मैं केवल तुम्हारा हूँ, मैं तो इतना जानता हूँ कि केवल आपकी मुझ पर कृपा दृष्टि है। मैं इतना जानता हूँ कि मैं आपकी शरण में हूँ, मैं तो केवल इतना ही तंत्र मंत्र जानता हूँ कि मैं केवल आपकी शरण में हूँ।

मैं न माता को जानता हूँ, न पिता को जानता हूँ क्योंकि वे तो स्वार्थमय संबंध स्वरूप हैं, पिता इसीलिए मुझे पुत्र कहते हैं कि मैं जीवन में उन्हें पिता कह सकूं, न मेरे जीवन में कोई भाई है, न रिश्तेदार हैं, न पत्नी है, न पुत्र है, न बंधु है, न बांधव है, न धन है, न ऐश्वर्य है, न वैभव है, मेरे जीवन में कुछ है ही नहीं, मैं जीवन में कुछ चाहता ही नहीं। इनसे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है, इनसे मेरी लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती, ये तो श्मशान यात्रा के पड़ाव हैं, जन्म से लेकर मृत्यु तक मैं श्मशान की ओर अग्रसर हो रहा हूँ और उस यात्रा में ये भी मेरे सहायक हैं, मुझे श्मशान की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

ये सब मेरी देह को छीनते हैं, मेरे प्राणों को छीनते हैं, मेरे धन को छीनते हैं, मेरी सेवा का उपयोग करना चाहते हैं। इनसे क्या हो जाएगा, इनसे तो मैं एक मलिन नाली का कीड़ा बन कर रह जाऊंगा। अगर मैं पुत्र को पैदा करूंगा तो ज्यादा से ज्यादा मेरी अर्थी को कंधा दे देगा। यदि मैं पत्नी को रखूंगा तो ज्यादा से ज्यादा चार आंसू बहा देगी, अगर माँ-बाप होंगे तो ज्यादा से ज्यादा धन की याचना करेंगे।

मगर यह मेरी जिन्दगी का प्रयोजन नहीं है मेरे जीवन का लक्ष्य नहीं है, मैं उस जगह खड़ा हूँ, जहां ये सब तुच्छ हैं, आखिर जीवन में कोई तो क्षण आता है जब ये सब नगण्य और तुच्छ लगने लगते हैं। हिमालय के सामने जाते हैं तो एक बार बड़ा पत्थर भी कंकर के समान दिखाई देता है। जब मैं आपके सामने प्रस्तुत हुआ हूँ तो मुझे ये सब संबंध बेमानी और बहुत तुच्छ और अस्तित्वहीन लगने लगे हैं।

मैं इन संबंधों से जीवित नहीं रहना चाहता, मैं किसी का पुत्र, पति, पत्नी या सखा बनकर जिन्दा नहीं रहना चाहता। इन बंधनों से मैं समुद्र नहीं बन सकता, ये बंधन तो अभिशाप हैं, पांव की बेड़ियाँ हैं जो मुझे जकड़े हुए हैं। मेरी साँसों पर इनका नियंत्रण है। मेरे प्राणों को इन्होंने दबोच लिया है, मैं समाज में घुटकर रह गया हूँ, एक अंधियारी कोठरी में मैं भटक रहा हूँ और जिस ओर भी मैं जाता हूँ मेरा सिर फूट जाता है, फिर भी मैं दरवाजा ढूंढने की कोशिश करता हूँ, मैं बदहवास सा आगे और पीछे भटकता रहता हूँ। चारों तरफ अंधेरा है, और घनघोर अंधेरा है।

इस समाज ने अंधेरे के अलावा कुछ दिया ही नहीं है। भूख और प्यास, बाधाएं और परेशानियां, आलोचना और गंदगी के अलावा कुछ नहीं दिया। घटियापन और तुच्छता के अलावा इस परिवार ने कुछ नहीं दिया। मैं इस कीचड़ में दल-दल से निकलना चाहता हूँ। मैं इस गंदगी से निकलकर पवित्र होना चाहता हूँ। मैं महान अद्बितीय और गुरुमय बनकर के अपने जीवन को पवित्र बनाना चाहता हूँ। मैं उस स्थिति को प्राप्त करना चाहता हूँ जो अपने आप में महत्वपूर्ण है, मैं उस ब्रह्म से साक्षात्कार करना चाहता हूँ जिसको ऋषियों और योगियों ने अहंब्रह्मास्मि कहा है। मैं उस चैतन्यता को प्राप्त करना चाहता हूँ जो जीवन की पूर्णता है, आप मुझ पर कृपा करें, आप वापस मुझे उन बंधनों में नहीं डालें। मुझे किसी प्रकार का कोई मोह नहीं रहा है और यदि कुछ मोह है तो उस मोह को आप समाप्त करें। मैं मानसरोवर के पास आकर प्यासा नहीं रहना चाहता, वसंत आने के बाद भी मैं उदासीन नहीं रहना चाहता, मैं मुस्कुराते पुष्पों के बीच भी निर्जीव नहीं रहना चाहता। आपके सामने आकर मैं दुर्भाग्यशाली नहीं रहना चाहता, मैं सौभाग्यशाली बनना चाहता हूँ, मैं जीवन में श्रेष्ठता चाहता हूँ, मैं जीवन में गुरु चाहता हूँ, मैं आपके शरीर में मिल जाना चाहता हूँ, आपके प्राणों की धड़कन बनना चाहता हूँ क्योंकि गुरुदेव मैं आपकी शरण में हूँ।

त्वदीयं तदेवं भवतवं भवेदं
चिंत्य विचित्यं सहितं सदैवः
आर्तो न वातं भवनेक नित्यं,
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं।

मैं दोनों हाथ ऊपर उठाकर चीख रहा हूँ, मैं प्राणों में आवाज भर करके उच्चारण कर रहा हूँ, इतनी जोर से बोलकर अपनी बात आप तक पहुँचाना चाहता हूँ, मेरा सारा शरीर थर-थर कांप रहा है। मेरी आँखों से आँसू प्रवाहित हो रहे हैं, मेरे मुंह से बोल नहीं निकल पा रहा है, मेरा गला गद-गद हो रहा है और सारे शरीर के रोम आवाज करने लग गए हैं, चीखने लग गए हैं। मैं अपने आप में नहीं

रहा हूँ। ऐसा लगता है कि मैं ऐसी बूंद हूँ जो अंगारे पर गिरती है और छन्न के साथ खत्म हो जाती है। ऐसा लगता है कि मैं एक बादल का टुकड़ा हूँ जो एक पहाड़ से टकराकर समाप्त हो जाना चाहता है। मैं तो ऐसा कण बनना चाहता हूँ जो आपसे टकराए और पूर्णता को प्राप्त हो जाए। मैं आपको पाना चाहता हूँ, मैं आपमें एकाग्र हो जाना चाहता हूँ, आप में लीन हो जाना चाहता हूँ और यदि ऐसा नहीं है तो यह जीवन व्यर्थ है। इस जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है, मकसद ही नहीं है, मूल्य ही नहीं है, यह तो श्मशान की एक यात्रा है, एक लाश को मैं अपने कंधे पर ढोकर श्मशान की ओर बढ़ रहा हूँ। ऐसे जीवन का क्या मूल्य हो जाएगा। क्या मेरी आवाज का चीखों का आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। मैं गद-गद कंठ से बोल रहा हूँ क्या आपका हृदय नहीं पसीज रहा है? मैं आर्द-नार्द कर रहा हूँ क्या आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

जरूर पड़ रहा होगा। जरूर मेरा कोई दुर्भाग्य होगा जो आप आगे बढ़कर मुझे अपना नहीं रहे हैं, जरूर मुझमें कोई न्यूनता होगी कि आपकी दृष्टि मुझ पर नहीं रही, जरूर मेरे पाप मेरे सामने खड़े हो जाते होंगे जो आपके और मेरे बीच पर्दा डाल रहे हैं। परन्तु इस पर्दे को तो आप ही दूर करेंगे, मुझमें इतनी ताकत, इतनी क्षमता नहीं कि मैं इन पापों को ढकेल सकूं, मुझमें इतनी क्षमता नहीं कि इस बीच के अंधकार को दूर कर सकूं।

मुझे कोई साधना और सिद्धि आती ही नहीं है, मुझे किसी मंत्र का ज्ञान ही नहीं है, मुझे तो केवल एक शब्द एक मंत्र ही आता है जिसे गुरु कहा जाता है। मैंने तो केवल एक ही मंत्र सिखा है कि गुरुदेव मैं आपकी शरण में हूँ।

अवतं सदेवं भवतं सदेवं
ज्ञानं सदेवं चित्यं सदेवं
पूर्ण सदेवं अवतं सदेवं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं।

कई-कई जन्मों से आपका और मेरा साथ रहा है। कई-कई जन्मों से आपने झकझोर कर मुझे इस रास्ते पर खड़ा किया है। कई-कई जन्मों से आपने हृदय को ठोक करके आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है, हर बार आपने मुझे समझाया है, हर बार आपने चेतना दी है, हर बार मेरे प्राणों को झंकृत किया है, हर बार मुझे ज्ञान और बुद्धि दी है, हर बार आपने मुझे बताया है कि जीवन की पूर्णता क्या है? उसके बावजूद भी मैं अज्ञानी हूँ, बुद्धि से ग्रस्त हूँ, बुद्धि मुझ पर हावी है, आपको मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। इसलिए समझ नहीं पा रहा हूँ कि आप हर क्षण बदल जाते हैं, हर क्षण एक नवीन स्वरूप में मेरे सामने खड़े हो जाते हैं। इतने-इतने स्वरूप आप मेरे सामने खड़े कर देते हैं कि मैं एक स्वरूप को पकड़ता हूँ तो दूसरा स्वरूप सामने आ जाता है, दूसरे को पकड़ता हूँ तो तीसरा और चौथा और पाँचवा... स्वरूप सामने आ जाता है। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि कौन से स्वरूप को मैं समझूं।

मैं अज्ञानी हूँ और ज्योंहि मैं समझने की कोशिश करता हूँ त्योंहि आप माया का पर्दा अपने और मेरे बीच डाल देते हैं। आप तो बहुत अजीब तरह का खेल खेलते रहते हैं और मैं फिर आपको सामान्य मानव समझ लेता हूँ। फिर मैं आपको हाडमांस का व्यक्ति समझ लेता हूँ। फिर मैं समझता हूँ कि यह तो मेरे जैसा ही मनुष्य है। फिर उस माया के आवरण में लिप्त होता हुआ मैं उसी जगह जाकर खड़ा हो जाता हूँ जहाँ से मैं चला था।

आप ऐसा मत करें, बार-बार मेरी परीक्षा न लें, बार-बार माया के आवरण में मुझे मत डालिए। बार-बार मुझे धकाकर पीछे मत हटाइए। मुझमें किसी प्रकार का बल, ताकत और क्षमता नहीं है। मैं तो नगण्य और तुच्छ हूँ अपने आपमें मुझमें ज्ञान और चेतना नहीं है। यदि आप मुझ पर कृपा करें तो मेरी बुद्धि को समाप्त करें। यदि आपकी कृपा कटाक्ष मुझ पर है तो आप मेरी भावना को जागृत करें, यदि आप कुछ मुझे समझते हैं तो मुझे बुलाकर अपने सीने से लगाएं, अपने वक्षस्थल से चिपकाएं, मैं आपकी धड़कन को अपने सीने में उतार सकूं, मैं अपने प्राणों को पूर्णता के साथ आपसे एकाकार कर सकूं। मैं आपमें निमग्न हो सकूं अपने आप को आपमें लीन कर सकूं, आपका और मेरा अस्तित्व अलग न रहे, बूंद पूर्णतः समुद्र में समाहित हो जाए। मैं तो उसी प्रकार आप में लीन हो जाना चाहता हूँ क्योंकि मेरा एकमात्र सहारा और अवलम्ब गुरुदेव आप हैं। मैं आपकी शरण में हूँ, केवल मात्र आपकी शरण में हूँ।
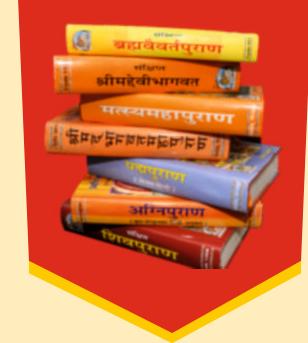
वस्तुतः दुर्लभोपनिषद जीवन का एक सौभाग्यदायक काव्य है, मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने जीवन में गुरुमय हो सकें, गुरु में निमग्न हो सकें, अपने जीवन का नवसृजन करते हुए पूर्णत्व को प्राप्त कर सकें और जीवन में वह सब प्राप्त कर सकें जो दुर्लभोपनिषद में स्पष्ट है, मैं आपको ऐसा ही आशीर्वाद दे रहा हूँ।

-पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

405/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

साधना में सबसे मुख्य शरीर का स्वस्थ होना होता है। कहते हैं स्वास्थ्य है तो सब कुछ है और यदि शरीर ही स्वस्थ न हो, रोगों से ग्रस्त हो तो व्यक्ति दिन-प्रतिदिन के कार्य भी सक्षमता से सम्पन्न नहीं कर पाता। उसका सारा ध्यान व्याधियों पर ही लगा रहता है। ऐसी स्थिति में साधना का चिंतन कैसे सम्भव है क्योंकि साधना का केंद्र बिन्दु तो एकाग्रता ही है और रोगग्रस्त शरीर एकाग्रता प्राप्त नहीं कर सकता, स्थिर होकर बैठ नहीं सकता।

अत: इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुये इस वर्ष दीपावली महाकल्प पर रूपचतुर्दशी के दिन कुछ विशेष कायाकल्प चैतन्य मालायें तैयार की गई हैं, जिन्हें दिये गये विधि-विधान के अनुसार पूजन एवं मंत्र जप करते हुए धारण करें, जिससे हमारा तन एवं मन साधना हेतु निरोग बन सकें।

रूप चतुर्दशी पर विशेष रूप से तैयार

कायाकल्प चैतन्य माला

विधि

किसी भी सोमवार के दिन पूजा स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुँह कर बैठ जायं एवं माला सामने रखकर उस पर पहले चंदन से तिलक करें, अक्षत-पुष्प चढ़ायें एवं उसी माला से 4 माला ॐ नम: शिवाय का एवं 4 माला गुरु मंत्र का जप करें फिर उसे धारण कर लें।

इस माला को 40 दिनों तक धारण करना है। नित्य 5 मिनट ॐ नम: शिवाय का जप करते रहें एवं 40 दिनों के उपरांत इसे किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें या शिव मन्दिर में चढ़ा दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

14–15–16 जनवरी 2022
मकर संक्रान्ति कल्प

मकर संक्रान्ति

सूर्य के समान तेजस्वी बनना है

तो मकर संक्रान्ति महापर्व पर

एक बार अवश्य आजमाएं

सूर्य - विष्णु - लक्ष्मी साधनाएं

साधना के लिए तीन पर्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं,

नवरात्रि, दीपावली और संक्रान्ति पर्व

के बारे में तो हर कोई जानता है,
लेकिन संक्रान्ति में ऐसा क्या है, क्यों इसका महत्व है?

इस वर्ष संक्रान्ति पर्व के तीन दिन 14-15-16 जनवरी को विशेष मुहूर्त बने हैं,

ये तीन दिन सूर्य और विष्णु एवं लक्ष्मी की साधना के दिन हैं।

नवग्रहों में सूर्य ही प्रधान ग्रह देव हैं, सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है,

सूर्य ही जीवन तत्व को अग्रसर करने वाला, उसे चैतन्य बनाने वाला, प्रकाश देने वाला, मूल तत्त्व है। मकर संक्रान्ति का महत्व इस कारण सबसे अधिक बढ़ जाता है, कि उस समय सूर्य उस कोण पर आ जाता है, जब वह अपनी सम्पूर्ण रश्मियाँ मानव पर उतारता है, इनको ग्रहण किस प्रकार किया जाय,

इसके लिए चैतन्य होना आवश्यक हैं,
तभी ये रश्मियाँ भीतर की रश्मियों के साथ मिल कर शरीर के कण-कण को जाग्रत कर देती हैं,

सूर्य तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों की शक्तियों का स्वरूप है,
इस कारण मकर संक्रान्ति पर सूर्य साधना करने से इन तीनों की साधना का लाभ प्राप्त होता है।

शरीर और सूर्य

मनुष्य का शरीर अपने आप में सृष्टि के सारे क्रम को समेटे हुए है, और जब यह क्रम बिगड़ जाता है, तो शरीर में दोष उत्पन्न होते हैं, जिसके कारण व्याधि, पीड़ा, बीमारी का आगमन होता है, इसके अतिरिक्त शरीर की आन्तरिक व्यवस्था के दोष के कारण मन के भीतर दोष उत्पन्न होते हैं, जो कि मानसिक शक्ति, इच्छा को हानि पहुँचाते हैं, व्यक्ति की सोचने-समझने की शक्ति, बुद्धि क्षीण होती है, इन सब दोषों का नाश सूर्य तत्व को जाग्रत कर किया जा सकता है, क्या कारण है कि एक मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है, और एक व्यक्ति पूरे जीवन सामान्य ही बना रहता है, दोनों में भेद शरीर के भीतर जाग्रत सूर्य तत्व का है। नाभि चक्र, सूर्य चक्र का उद्गम स्थल है और यह अचेतन मन के संस्कार तथा चेतना का प्रधान केन्द्र है, शक्ति का स्रोत बिन्दु है, साधारण मनुष्यों में यह तत्व सुप्त होता है, न तो इसकी शक्ति का सामान्य व्यक्ति को ज्ञान होता है और न ही वह इसका लाभ उठा पाता है, इस तत्व को अर्थात् भीतर के मणिपुर सूर्य चक्र को जाग्रत करने के लिए बाहर के सूर्य तत्व की साधना आवश्यक है, बाहर का सूर्य अनन्त शक्ति का स्रोत है, और इसको जब भीतर के सूर्य चक्र से जोड़ दिया जाता है, तो साधारण मनुष्य भी अनन्त मानसिक शक्ति का अधिकारी बन जाता है, और जब यह तत्व जाग्रत हो जाता है, तो बीमारी, पीड़ा, बाधाएं उस मनुष्य के पास आ ही नहीं सकती हैं।

बाहर का यह सूर्य तो साल के 365 दिन जाग्रत है, लेकिन इसके द्वारा भीतर के सूर्य तत्व को कुछ विशेष मुहूर्तों में तत्काल जाग्रत किया जा सकता है, और इसके लिए मकर संक्रान्ति से बढ़ कर कोई सिद्ध मुहूर्त नहीं है।

मकर संक्रान्ति और महालक्ष्मी

मकर संक्रान्ति के पर्व पर ही भगवती लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ, जब लक्ष्मी की उत्पत्ति देवासुर संग्राम के अवसर पर समुद्र मंथन के द्वारा हुई, तब वह कन्या थी और इसलिए जिस स्थान पर समुद्र मंथन हुआ, जिस स्थान पर समुद्र के गर्भ से लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई, उस स्थान को आज 'कन्याकुमारी' कहते हैं, जो भारतवर्ष के दक्षिणी छोर पर है, यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ तीन समुद्र एक साथ मिलते हैं, और यहीं पर कन्याकुमारी का पवित्र और श्रेष्ठ मन्दिर है, हजारों-लाखों लोग प्रति वर्ष भारतवर्ष के दक्षिण में कन्याकुमारी स्थान पर जाते हैं और उसकी प्राकृतिक छटा देखते हैं, समुद्र का पारस्परिक मिलन और तीन समुद्रों का संगम देखते हैं, जहाँ का सूर्योदय विश्व प्रसिद्ध है, जो भी कन्याकुमारी जाता है, वह प्रात:काल उठ कर छत पर खड़े होकर सूर्योदय को देखने की अभिलाषा मन में अवश्य रखता है, क्योंकि कन्याकुमारी का सूर्योदय अपने आपमें अन्यतम है, ऐसा लगता है कि जैसे समुद्र में से धीरे-धीरे स्वर्ण कलश बाहर निकल रहा हो, ठीक वैसा ही सोने की तरह चमचमाता हुआ कलश जिसमें अमृत और तेजस्विता भरी हुई है, चारों तरफ अगाध समुद्र है, जहाँ तक दृष्टि जाती है समुद्र की लहरें दिखाई देती हैं और उन

जो साधक मकर संक्रान्ति के विधान को पूरी तरह से सम्पन्न करता है, इस विशेष मुहूर्त पर लक्ष्मी की आराधना करता है, सूर्य की आराधना करता है, तो जहाँ एक ओर उसके जीवन के दोष दूर होते हैं, पीड़ा, व्याधि, बीमारी का निवारण होता है, वहीं लक्ष्मी साधना से जीवन की दरिद्रता, दुर्भाग्य, कर्ज का नाश होता है और लक्ष्मी का स्थायी निवास बन जाता है।

लहरों के बीच जब सूर्य बाहर निकलता है तो अपने आप में एक अद्भुत और अनिवर्चनीय दृश्य दिखाई देता है।

समुद्र मंथन के उपरान्त जो चौदह रत्न निकले, उन चौदह रत्नों में लक्ष्मी भी एक रत्न थी, मगर वह कन्या थी, अविवाहित स्त्री, कुंवारी थी और इसके प्रतीक स्वरूप उस स्थान पर कन्याकुमारी मन्दिर का निर्माण किया गया, एक पवित्र भूमि का आविर्भाव हुआ और आज भी श्रद्धालु लोग उस कुंवारी लक्ष्मी के विग्रह को देखने के लिए हजारों-लाखों की संख्या में जाते हैं।

इसके बाद भगवान विष्णु अवतरित हुए और उस समुद्र के किनारे ही लक्ष्मी को पत्नी रूप में स्वीकार किया, और यही समय मकर संक्रान्ति पर्व कहलाता है, जब कुंवारी कन्या का पाणिग्रहण भगवान विष्णु के साथ होता है, इसीलिए इस दिन का विशेष महत्व है।

जो साधक मकर संक्रान्ति के विधान को पूरी तरह से सम्पन्न करता है, इस विशेष मुहूर्त पर लक्ष्मी की आराधना करता है, सूर्य की आराधना करता है, तो जहाँ एक ओर उसके जीवन के दोष दूर होते हैं, पीड़ा, व्याधि, बीमारी का निवारण होता है, वहीं लक्ष्मी साधना से जीवन की दरिद्रता, दुर्भाग्य, कर्ज का नाश होता है और लक्ष्मी का स्थायी निवास बन जाता है।

साधना के तीन दिवस

मकर संक्रान्ति के पर्व पर प्रथम दिन सूर्य साधना, दूसरे दिन विष्णु साधना एवं तीसरे दिन 16 जनवरी श्री सिद्धि महाष्टमी पर महालक्ष्मी साधना सम्पन्न करें। यह तीनों साधनाएँ इस विशेष मुहूर्त पर एक साथ सम्पन्न की जा सकती हैं।

मकर संक्रान्ति : सूर्य साधना

मकर संक्रान्ति पर्व का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्वरूप सूर्य साधना है, सूर्य के बिना किसी वस्तु के दृश्य-अदृश्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती, सूर्य के 12 स्वरूप हैं, ये बारह स्वरूप तथा इनकी बारह शक्तियाँ निम्न हैं–

बारह आदित्य	शक्तियाँ
वरुण	ईड़ा
सूर्य	सुषुम्ना
सहस्रांशु	विश्वार्चि
धाता	इन्दु
तपन	प्रमर्दिनी
सविता	प्रहर्षिणी
गभस्तिक	महाकाली
रवि	कपिला
पर्जन्य	प्रबोधिनी
त्वष्टा	नीलाम्बर
मित्र	वनान्तस्या
विष्णु	अमृताख्या

इस दिन प्रात: साधक सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण करें, सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य नमस्कार करें, एक ताम्र पात्र में पुष्पों के साथ तीन बार अर्घ्य अर्पित करें, इस दिन नमक तथा तेल रहित भोजन ग्रहण करना चाहिए।

इस साधना के समय ऊपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए साधक अपने सामने 'सूर्य यन्त्र' को स्थापित कर उस पर चन्दन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुम के साथ-साथ सिंदूर भी अर्पित करें और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में घोल कर दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें–

समस्त शक्तियों के जनक सूर्य ही हैं। सूर्य तो आरोग्य देव हैं। इनके सामने निर्बलता, रोग, जड़ता ठहर ही नहीं सकती अत: साधना के क्षेत्र में सूर्य साधना का अत्यन्त महत्व बताया गया है क्योंकि इस साधना से शरीर पूर्ण चैतन्य एवं रोग रहित होता है, जो कि साधना मार्ग में अति आवश्यक है। यदि भगवान सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य नमस्कार की 5 आवृत्तियाँ नित्य प्रति करें तो कुण्डलिनी जागरण में सहायता मिलती है।

"हे आदित्य! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुख मण्डल, कमल नेत्र स्वरूप वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र सहित सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इस साधक का नमस्कार! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दनयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।"

इसके साथ ही ताम्र पात्र दोनों हाथों में लेकर, जल की धारा से सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, अब अपने पूजा स्थान में सूर्य यन्त्र के चारों ओर एक चक्र में '12 लघु नारियल' स्थापित करें, ये नारियल सूर्य के 12 स्वरूप हैं, प्रत्येक नारियल पर इसकी शक्ति स्वरूप एक-एक पुष्प रखें, और ऊपर दिये गये बारह स्वरूपों का उन पर ध्यान करते हुए इनकी पूजा करें, तत्पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सूर्य यन्त्र पर केसर, कुंकुम चढ़ाएं तथा उसी केसर, कुंकुम से अपने ललाट पर तिलक कर सूर्य मन्त्र की ग्यारह माला का जप करें।

मन्त्र

।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।।

मन्त्र जप की पूर्णता पर पूजा में रखे गये दीपक से आरती सम्पन्न करें और इस ज्योति पर हाथ फेर कर अपने दोनों हाथों को नेत्रों से स्पर्श करें।

मकर संक्रांति के दिन साधक को पूजा सम्पन्न करने के बाद अपनी श्रद्धा के अनुसार तिल, गुड़, तिल से बनी हुई वस्तुएं इत्यादि का दान करना चाहिए।

साधना सामग्री-600

मकर संक्रान्ति-विष्णु नृसिंह साधना

वर्तमान युग में विष्णु के नृसिंह स्वरूप की साधना ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि इस रूप में जहाँ एक ओर सौम्यता है, वहीं दूसरी ओर शत्रुनाश का पराक्रम भी है, इस स्वरूप की साधना करने से तीन प्रकार की बाधाएँ मुख्य रूप से दूर होती हैं, प्रथम तो साधक को भय मुक्ति प्राप्त होती है, दु:स्वप्नों से शान्ति मिलती है, कर्ण रोग, नेत्र रोग, शिरो रोग एवं कंठ रोग दूर हो जाते हैं, शत्रु तथा विवाद में विजय प्राप्त होती है।

मकर संक्रान्ति कल्प के दूसरे दिन यह साधना सम्पन्न की जाती है, इस हेतु साधक 'विष्णु नृसिंह महायंत्र', बत्तीस दीपक, केसर, चावल, नैवेद्य, पुष्प की व्यवस्था पहले से कर लें।

प्रात: स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने एक बड़े लकड़ी के पीढ़े पर लाल वस्त्र बिछाएं, मध्य में एक पात्र में, विष्णु नृसिंह यन्त्र की स्थापना करें, पीढ़े के चार कोनों में चार पत्ते रख कर उस पर चावल की ढेरी बनाएं और चार सुपारी रखें तथा इन चारों कोनों में श्री, ह्रीं, धृति, धुष्टि का ध्यान करते हुए पूजा करें।

इसके पश्चात् विष्णु नृसिंह यन्त्र के सामने बत्तीस तेल के दीपक जला दें, और प्रत्येक के आगे नृसिंह स्वरूप एक-एक पत्ते पर चावल की ढेरी पर सुपारी रखकर श्री विष्णु के बत्तीस स्वरूपों की पूजा निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सम्पन्न करें–

ॐ कृष्णाय नम:	ॐ रुद्राय नम:
ॐ माहाधाराय नम:	ॐ भीमाय नम:
ॐ भीषणाय नम:	ॐ उज्ज्वलाय नम:
ॐ करालाय नम:	ॐ विकरालाय नम:

ॐ देत्यान्ताय नम:	ॐ मधुसूदनाय नम:
ॐ रक्ताक्षाय नम:	ॐ पिंगलाक्षाय नम:
ॐ आंजनाय नम:	ॐ दीरातेजसे नम:
ॐ सुधोणाय नम:	ॐ हनवे नम:
ॐ विश्वाक्षाय नम:	ॐ राक्षसान्ताय नम:
ॐ विशालाय नम:	ॐ धूम्रकेशवाय नम:
ॐ हयग्रीवाय नम:	ॐ धनस्वराय नम:
ॐ मेघनादाय नम:	ॐ मेषवर्णाय नम:
ॐ कुम्भकर्णाय नम:	ॐ कृतान्तकाय नम:
ॐ तीव्रतेजसे नम:	ॐ अग्निवर्णाय नम:
ॐ महोग्राय नम:	ॐ विश्वभूषणाय नम:
ॐ विघ्नक्षमाय नम:	ॐ महासेनाय नम:

इस प्रकार श्री विष्णु के 32 स्वरूपों की पूजा कर साधक विष्णु नृसिंह यन्त्र का पूजन सम्पन्न करें, उस पर केसर से तिलक लगायें और घी का दीपक जलायें, अब अपने विशेष कार्य सिद्धि का संकल्प करते हुए विष्णु मन्त्र का जप प्रारम्भ करें, साधक के लिए यह आवश्यक है, कि उसी स्थान पर बैठकर कम से कम पांच माला का मंत्र जप अवश्य करें। इसमें विष्णु लक्ष्मी माला का उपयोग किया जाता है।

यहाँ साधकों हेतु विशेष रूप से लक्ष्मी नृसिंह मन्त्र दिया जा रहा है और इस साधना में सिद्धि प्राप्त होने पर साधक को अपनी मनोकामना पूर्ति में किसी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है।

लक्ष्मी नृसिंह मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं जयलक्ष्मी प्रियाय नित्यप्रमुदितचेतसे लक्ष्मी श्रितार्द्ध-देहाय श्रीं ह्रीं नम:।

तत्पश्चात् गुरु आरती और विष्णु आरती सम्पन्न कर पूजा में रखा हुआ प्रसाद ग्रहण करें।

मकर संक्रान्ति पर की गई यह विष्णु नृसिंह साधना साधक के भीतर के भय तत्व को पूर्ण रूप से समाप्त कर देती है, साधक की सुप्त शक्तियाँ जागृत होती हैं, इस साधना के बिना मकर संक्रान्ति साधना अधूरी ही है।

–साधना सामग्री- 450/-

मकर संक्रान्ति की महालक्ष्मी साधना

इस महापर्व पर 16 जनवरी 2022 को श्री यंत्र सिद्धि महाअष्टमी है जो महालक्ष्मी सिद्धि दिवस है, और इस दिन महालक्ष्मी के विशेष स्वरूप की विशेष प्रकार से साधना सम्पन्न की जाती है।

इस दिन लक्ष्मी के सिंहवाहिनी रूप और कमलधारिणी स्वरूप की साधना की जाती है, और लक्ष्मी उपनिषद में लिखा है, कि जो साधक मकर संक्रान्ति पर लक्ष्मी के इस स्वरूप का चिन्तन करता है, उसके घर में लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करती है, क्योंकि सिंह समस्त दुर्भिक्ष, अभाव और दुर्भाग्य को समाप्त करने वाला है, रोग और पापों का भक्षण करने वाला है, आलस्य और जीवन की न्यूनताओं को दूर करने वाला है, वहीं कमल जीवन को आलोकित करने वाला सदैव चैतन्य तत्व है अत: इस विशेष दिन लक्ष्मी के इस विशेष रूप की साधना सम्पन्न करने का तात्पर्य जीवन में पूर्णता प्राप्त करना है।

सिंहवाहिनी महालक्ष्मी यन्त्र

इस महालक्ष्मी यन्त्र का निर्माण कुछ विशेष मुहूर्तों में ही किया जाता है, और सबसे बड़ी बात यह है, कि इसकी स्थापना मकर संक्रान्ति कल्प में ही की जाती है, ऐसा महायन्त्र घर में स्थापित होने पर कर्ज समाप्त हो जाते हैं, घर के लड़ाई झगड़े दूर होते हैं, व्यापार वृद्धि होने लगती है, आर्थिक उन्नति और राजकीय दृष्टि से सम्मान प्राप्त होता है।

इस महायन्त्र के सम्बन्ध में लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रत्येक ग्रन्थ में विशेष वर्णन आया है, प्रत्येक ऋषि ने इसके महत्व को स्वीकारा है, यहाँ तक कि तन्त्र के सर्वोपरि गुरु गोरखनाथजी ने भी इस यन्त्र के तांत्रिक महत्व और मांत्रिक महत्व को विशिष्ट बताया है।

लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र
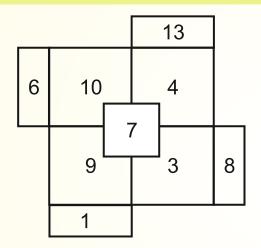
साधना प्रयोग

इस साधना का विधान अत्यन्त सरल है और साधक स्वयं इसे सम्पन्न करें, इस हेतु आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें, मकर संक्रान्ति कल्प में 16 जनवरी 2022 को प्रात:काल उठकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जायें और सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछायें फिर भोजपत्र पर उपरोक्त यंत्र का अष्टगंध से स्वयं निर्माण कर प्लेट में रखें एवं उस पर महालक्ष्मी यंत्र स्थापित करें। इससे पहले अलग पात्र में इस महालक्ष्मी यंत्र को जल से तथा दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान करा कर पुन: शुद्ध जल से धो-पोंछ कर इसे रेशमी वस्त्र पर स्थापित कर दें और केसर से इस महायन्त्र पर नौ बिन्दियाँ लगायें, जो नवनिधि की प्रतीक हैं।

इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करें।

विनियोग

अस्य श्री महालक्ष्मी हृदयमालामन्त्रस्य भार्गव ऋषि: आद्यादि श्री महालक्ष्मी देवता, अनुष्टुप-आदिनानाछन्दांसि, श्री बीजम् ह्रीं शक्ति:, ऐं कीलकम् श्री महालक्ष्मी प्रसीद सिद्धयर्थे जपे विनियोग:।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करें, कि 'मैं अमुक गौत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक मकर संक्रान्ति पर्व पर भगवती लक्ष्मी को नवनिधियों के साथ अपने घर में स्थापित करने के लिए प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।''

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल जमीन पर छोड़ दें, और फिर यन्त्र के सामने शुद्ध घृत के पांच दीपक लगायें, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें और दूध के बने हुए प्रसाद का नैवेद्य समर्पित करें, इसके बाद हाथ जोड़ कर ध्यान करें।

ध्यान

हस्तद्वयेन कमले धारयन्ती स्वलीलया।
हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये।।

इसके बाद साधक विष्णु लक्ष्मी माला से निम्न मन्त्र की 21 माला मन्त्र जप करें।

महामन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा।।

इसके बाद साधक लक्ष्मी की आरती करें और यन्त्र को अपनी तिजोरी में रख दें या पूजा स्थान में रहने दें तथा प्रसाद को घर के सभी सदस्यों में वितरित कर दें, इस प्रकार मकर संक्रान्ति कल्पवास में महाअष्टमी पर यह महत्वपूर्ण साधना सम्पन्न की जाती है।

इस दिन साधना सम्पन्न करने के उपरांत 13 कन्याओं को भोजन करायें। न हो सके तो 3 कन्याओं को भोजन करा दें। इस प्रकार इस साधना अनुष्ठान का समापन होता है।

साधना सामग्री-450/-

त्रिपुर भैरवी जयंती
18.12.21

तंत्र बाधा एवं शत्रु निवारण

की प्रचण्ड साधना

त्रिपुर भैरवी महाविद्या साधना

भगवती त्रिपुर भैरवी महाभैरव की ही शक्ति है।

उनकी मूल शक्ति होने के कारण उनसे भी सहस्त्र गुणा अधिक तीव्र तथा क्रियाशील है।

साधक जिन लाभों को भैरव साधना सम्पन्न करने से प्राप्त करता है,

जैसे शत्रुबाधा निवारण, वाद-विवाद, मुकदमा आदि में विजय, आकस्मिक दुर्घटना टालना, रोग निवारण आदि

इस साधना के माध्यम से इन विषम स्थितियों पर भी आसानी से नियंत्रण प्राप्त कर सकता है।

आज यदि हम जीवन का गहराई से विश्लेषण करें, तो पायेंगे, कि व्यक्ति हर पल हर क्षण भय एवं बाधाओं से आशंकित रहता है।

आज के इस व्यस्ततम युग में व्यक्ति प्रातः घर से अपने कार्य के लिए निकलता है, तो यह निश्चित नहीं है, कि वह सुरक्षित शाम को वापिस आ ही जाय,

क्योंकि भीड़ से भरी सड़क पर आपाधापी के युग में जीवन असुरक्षित हो गया है, हर पल सड़कों पर दौड़ते, फर्राटे भरते वाहनों के साथ मौत भी प्रतिपल नृत्य करती हुई, मंडराती रहती है। जब कभी घर के सदस्य अथवा अभिभावक यथासमय शाम को घर नहीं लौटते हैं, तो घर के सभी सदस्य चिंतित हो उठते हैं तथा उनके मन में तरह-तरह की आशंकायें उठने लगती हैं और निगाहें बार-बार सड़क व गेट की तरफ टिकी रहती हैं। यदि घर में पत्नी अकेले हो और पति अपने कार्यालय से यथासमय घर न पहुँचे, तो उस गृहणी की क्या दशा होती है, यह सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता है। ऐसी दशा में उस गृहणी को सहारा एवं हौसला देने वाला कोई नहीं होता है और उसका जीवन अत्यन्त कष्ट एवं वेदनायुक्त बन जाता है।

जीवन में निर्भयता एवं बाधाओं के निवारण के लिए व्यक्ति अनेक उपाय करता ही रहता है,

किन्तु उसके लिए आवश्यक है, कि दैवीय संरक्षण भी प्राप्त हो और इसके लिए उच्चस्तरीय साधना सम्पन्न करने का मार्गदर्शन भी प्राप्त हो। मार्गदर्शन तथा संरक्षण दोनों एक साथ प्राप्त करने का एक मात्र उपाय है–'त्रिपुर भैरवी साधना'।

त्रिपुर भैरवी साधना दस महाविद्याओं में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं तीव्र स्वरूप साधना है, इस साधना से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुरक्षा प्राप्त होने लगती है और समस्त बाधायें समाप्त हो जाती हैं। इस साधना के माध्यम से साधक पूर्ण क्षमतावान एवं वेगवान बन सकता है।

भगवती त्रिपुर भैरवी महाभैरव की ही शक्ति है उनकी मूल शक्ति होने के कारण उनसे भी सहस्र गुणा अधिक तीव्र तथा क्रियाशील है। साधक जिन लाभों को भैरव साधना सम्पन्न करने से प्राप्त करता है, जैसे शत्रुबाधा निवारण, वाद-विवाद मुकदमा आदि मे विजय, आकस्मिक दुर्घटना टालना, रोग निवारण आदि इस साधना के माध्यम से इन विषम स्थितियों पर भी आसानी से नियंत्रण प्राप्त कर सकता है।

भैरव भय विनाशक हैं और त्रिपुर भैरवी को आधार बनाकर ही अपनी शक्तियों का विस्तार करते हैं। त्रिपुर भैरवी साधना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है, कि यह प्रबल रूप से तंत्र बाधा निवारण की साधना है।

कैसा भी वशीकरण प्रयोग करवा दिया हो, कैसा भी भीषण तांत्रिक प्रयोग कर दिया गया हो, दुर्भावना वश वशीकरण प्रयोग कर दिया गया हो, गृहबन्ध या व्यापार बन्ध प्रयोग हुआ हो, तो त्रिपुर भैरवी साधना सम्पन्न करने पर वह बेअसर हो जाता है, क्योंकि ऐसे समस्त तीक्ष्ण प्रयोगों में भैरव के जिस तामसिक स्वरूप का अवलम्बन लिया जाता है, उस पर प्रभावशाली नियंत्रण त्रिपुर भैरवी साधना के अतिरिक्त अन्य किसी साधना से सम्भव नहीं है।

जब किसी व्यक्ति पर या उसके परिवार पर द्वेषवश तांत्रिक प्रयोग होता है, तो वह परिवार अत्यन्त कष्ट भोगने के लिए विवश हो जाता है। तांत्रिक बाधा के कारण उसके समस्त कार्य बाधित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में त्रिपुर भैरवी साधना सम्पन्न करने पर व्यक्ति का जीवन निष्कंटक तथा तेजस्वी क्षमताओं से युक्त हो जाता है।

त्रिपुर भैरवी का स्वरूप तीक्ष्ण अवश्य है, किन्तु इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। मां अपने शिशु के लिए कभी भयावह नहीं हो सकती, यदि साधक का भाव शिशु का हो। अत्यन्त प्रचण्ड स्वरूपा मां भगवती त्रिपुर भैरवी अपनी सम्पूर्ण क्रोधमयता और उग्रता के उपरान्त भी अपने होठों में ऐसी मृदुता समाये हुए हैं, जो सिद्ध करती है, कि देवी का कोई भी स्वरूप हो उसमें मातृत्व होता ही है।

साधना विधान

1. यह रात्रि कालीन साधना है, साधक दिनांक 18.12.21 रात्रि 9 बजे स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ लाल वस्त्र धारण कर लाल ऊनी आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय।

   यह साधना 18.12.21 को या किसी भी रविवार को सम्पन्न कर सकते हैं।

2. अपने सामने बाजोट पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर तिल की ढेरी बनाकर 'भैरव गुटिका' स्थापित करें, क्योंकि इस साधना में भैरव स्थापना आवश्यक मानी गयी है। अपने सामने 'त्रिपुर भैरवी यंत्र' पात्र में स्थापित करें, उसके सम्मुख 'त्रिपुर भैरवी माला' स्थापित कर दें एवं साथ ही त्रिपुर भैरवी का चित्र स्थापित करें।

3. सर्वप्रथम 'भैरव गुटिका' पर लाल पुष्प अर्पित करते हुए निम्नानुसार ध्यान करें तथा साधना प्रारम्भ करने की आज्ञा प्राप्त करें–

   ध्यायेन्नीलाद्रि कान्तिं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं
   दिग्वस्त्रं पिंगलाक्षं डमरुमथ सृणिं खड्ग शूलामयानि
   नागं घण्टां कपालं कर सासिरु विभ्रतं भीमदंष्ट्रम
   सर्पा कल्पं त्रिनेत्रं मणिमय विलसत् किंकिणी नूपुराढ्यम्।।

4. त्रिपुर भैरवी यंत्र व माला को पवित्र जल से स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर यंत्र पर काजल व सिन्दूर का टीका लगायें, अगरबत्ती व तेल का दीपक प्रज्ज्वलित कर दें तथा लाल पुष्प व फल अर्पित करें। तत्पश्चात निम्न प्रकार ध्यान करें–

   उद्यद्भानु सहस्त्र कांति मरुण क्षौमा शिरोमालिकाम्
   रक्तालिप्त पयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम्
   हस्ताब्जैर्दधर्ती त्रिनेत्र विलसद् वक्त्रार विन्द श्रियम्
   देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्दे–समन्दस्तिाम्।

5. इसके पश्चात 'त्रिपुर भैरवी माला' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करे–

मंत्र

।। हसैं हसकरीं हसैं।।

Hasei Haskareem Hasei

मंत्र जप के पश्चात् गुरु आरती अवश्य सम्पन्न करें। शुद्ध सात्विक हल्का भोजन एक समय करें। अगले दिन साधना सामग्री नदी में विसर्जित कर दें। यदि सम्भव हो तो यह मंत्र जप आने वाले रविवार तक नित्य 5 माला करें। फिर रविवार को सामग्री नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

यह साधना पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वाद स्वरूप प्रदान की है। त्रिपुर भैरवी महाविद्या जयंती के दिन इस साधना को अवश्य सम्पन्न करें एवं प्राप्त अनुभव को गुरुधाम जोधपुर के पते पर लिखकर भेजें।

साधना सामग्री 510/–

गीता जयंती
14.12.21

वह एकान्त प्रेमी था।

संसार की तरफ से सदैव उदासीन रहा करता था।

जब कभी कोई पास न रहता और उसे अवकाश मिलता, वह जीवन की क्षणभंगुरता, शरीर की नश्वरता और संसार की असारता के विषयमें सोचा करता था

उसका परिवार स्नेहमयी माता, पतिपरायणता साध्वी पत्नी, एक आज्ञाकारी पुत्र और दो सुशील कन्याओं से सुसम्पन्न था। फिर भी उसका मन उसमें नहीं लगता था। उसके मानसिक विचारों की शक्ति बढ़ रही थी।

माता की ममता, पत्नी का प्रेम और पुत्र-पुत्रियों की सलोनी मूर्ति से एक सच्चा गृहस्थ बनाने में असमर्थ थी।

गृहस्थ संन्यासी

संसार की असारता पर विचार करके, अपने सम-व्यस्कों तथा अन्य अवस्था वालों की मृत्यु देखकर वह थर्रा उठता था। **'संसार भूल-भुलैया है, धोखे की टट्टी है और एक स्वप्न।'** उसके अन्तःकरण की ऐसी प्रबल धारणा हो चुकी थी और वह पारिवारिक प्रेम-रज्जू को तोड़कर विरक्त होने का निश्चय कर रहा था।

वह भगवद् गीता का प्रेमी था और था श्रीकृष्ण का उपासक। प्रातःकाल स्नान और गीता-पाठ के पूर्व वह जल तक ग्रहण नहीं करता था। उसे स्वादिष्ट भोज की परवाह नहीं थी। साधारण मोटे वस्त्रों से ही वह सन्तुष्ट था। शयन के लिये पृथ्वी और पलंग दोनों उसके लिये समान थे।

वह था व्यापारी, परन्तु व्यापारियों के वाक्-जाल **को, उनकी नीति को वह घृणा की दृश्टि से देखता था। थोड़े से जीवन के लिये इतना हाय-हाय ! इतना प्रपंच!! केवल दो रोटियों के लिये !!! नहीं, ऐसा मुझसे नहीं होगा। गृहस्थी जंजाल है। माता-पिता, भाई-बन्धु और स्त्री-पुत्र यह सब माया है। यह देवदुर्लभ मानव-शरीर भजन के लिये मिला है, भोजन के लिये ही नहीं। इसे खोकर फिर सिवा पछताने के और कुछ न होगा।' वह ऐसी ही बाते सोचा करता है और मस्त होकर गाता।**

वह संसार से ऊब चुका था। उसने गृह-कार्यों से मुंह मोड़ लिया था। इससे उसके परिवारवालों को कष्टमय जीवन बिताना पड़ता था। स्नेहमयी माता, उसकी पत्नी और बच्चे उसी के आश्रित थे। घर में कोई दूसरा संभालने वाला नहीं था।

उनकी माता रात-दिन गृहस्थी की चिन्ता में और गृह-कार्यों में ही लगी रहती थी। भोजन के लिये अनाज साफ करते-करते तथा फटे वस्त्रों को चिथड़ों को सीते-सीते बेचारी थक जाती थी और उसकी कोई सेवा नहीं हो पाती थी। स्त्री को भी बच्चों की देख-भाल करने से तथा गृह-कार्यों से अवकाश नहीं मिलता था। पुत्र की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था और दो अविवाहित कन्याओं का बोझ सिर पर।

एक दिन सवेरे वह चुपके से घर से निकल पड़ा। अंधेरा रहते ही वह घर से निकला था, जिससे कोई उसे देख न सके। तीन दिन के पश्चात् वह एक वन में पहुंच गया। वन बड़ा गहन और जनशून्य था। उधर से कोई आता-जाता न था। कोसों तक गाँव का पता न था। पशु भी दिखाई नहीं पड़ते थे। केवल वन के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष थे और गगन-गामी पक्षी।

वह क्षुधा से पीड़ित था। प्यास से गला सूख रहा था। थककर चूर था। पास में खाने को कुछ न था। वृक्ष जंगली थे। उनके फल-फूल खाने योग्य नहीं थे। कोई ऐसा वृक्ष भी नहीं था, जिसका फल खाकर **प्यास भी बुझायी जा सके। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उसे एक स्थान पर बरसाती जल मिला, बड़ा गन्दा और मटमैला। उसने उसे ही पीकर अपनी प्यास बुझायी। वह थका था ही, इससे एक वृक्ष के नीचे बैठते ही उसे निद्रा आ गयी।**

रात्रि में भूख के कारण दस बजे के लगभग जब उसकी नींद टूटी तो उसने थोड़ी दूरी पर एक टिमटिमाता प्रकाश देखा। वह प्रकाश को लक्ष्य करके अँधेरे में धीरे-धीरे उसी ओर बढ़ने लगा।

वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि एक पर्णकुटी है। उसके द्वार पर पर मृग, गाय और सिंह वैर-भाव भूल कर एक साथ बैठे हैं। गाय और मृग को सिंह का कोई भय नही है। सिंह अपने सम्मुख भोज्य पदार्थों को देखकर भी उन्हें खाने की चेष्टा नहीं करता है। बड़ी विचित्र बात थी। सिंह उसे भी-एक मनुष्य को--अपने स्वाभाविक आहार को सामने देखकर फाड़ खाने के लिये लालायित नहीं हुआ और न उसे अपनी दहाड़ या उग्र दृष्टि से भयभीत ही किया। इससे उसके लिये डरने का कोई कारण ही नहीं था और वह पर्णकुटी के भीतर चला गया।

पर्णकुटी बड़ी रमणीय और सुसज्जित थी। उसमें बड़े मनोहर और चित्ताकर्षक चित्र टँगे थे, किसी अमर चित्रकार के बनाए हुए। चित्र भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के थे, महाभारत संग्राम विषयक।
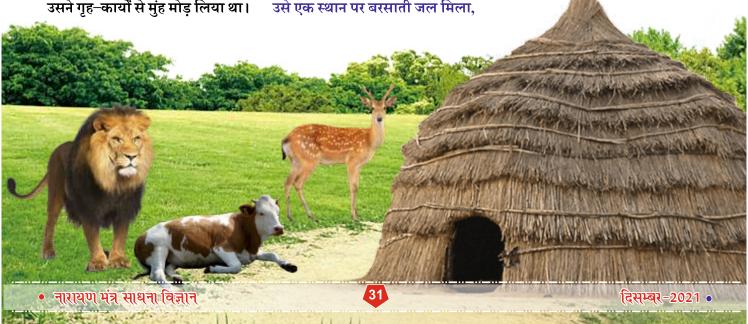
एक चित्र में अर्जुन अपने आत्मीयों को, अपने स्वजनों को **ही रणस्थल में देखकर चिन्ता से व्याकुल हो रहा था। वह अपना गाण्डीव छोड़कर रथ के पिछले भाग में उदास होकर बैठा था। शरीर काँप रहा था। अभ्यस्त धनुर्धर होते हुए भी उसका हाथ अपने स्वजनों का वध करने में असमर्थ था। साहसी होने पर भी उसका धैर्य विलीन हो रहा था। कुशल चित्रकार ने अर्जुन के मनोभावों को चित्रित करने में बड़ी सफलता पायी थी। दूसरे चित्र में योगिराज भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को 'क्षात्र-धर्म' का अमृतमय उपदेश दे रहे थे। अर्जुन अपनी भूल पर पश्चाताप कर रहा था। तीसरे चित्र में अर्जुन स्वयं अपने ही हाथों से अपने गुरुजनों ओर पुत्र-पौत्रों पर तीक्ष्ण बाण-वर्षा कर रहा था और अपने लक्ष्य से धराशायी हुए स्वजनों को देखकर हर्षित हो रहा था। चौथे चित्र में मुरलीमनोहर अपनी मुरली में प्रेम-मग्न होकर, 'हम भक्तन के, भक्त हमारे'-गा रहे थे।**

कई स्थानों पर गीता के उपदेश मोटे और सुन्दर अक्षरों में लिखे हुए टंगे थे। **एक रत्नजटित सिंहासन पर 'श्रीगीताजी' विराजमान थीं और एक वृद्ध महात्मा एक मृगचर्म पर बैठे हुए थे। उनके मुखमण्डल से प्रकाश की किरणें** छिटक रही थीं। वहां अन्य कोई प्रकाश नहीं था। जंगल में बहुत दूर तक भ्रमण करने पर भी उसे कोई आदमी नहीं मिला। पता नहीं, यह पर्णकुटी कहां से आ गयी ? सिंह जैसा हिंसक पशु मृग और गाय को अपना आहार क्यों नहीं बनाता ? अवश्य ही यह सब महात्मा का चमत्कार होगा। तभी तो इनके मुखमण्डल से प्रकाश छिटक रहा है। बड़े भाग्य से उसे ऐसे देव-पुरुष का साक्षात्कार हो गया। वह बड़ा प्रसन्न था। परन्तु कुछ ही देर बाद उसने देखा तो उसको महात्माजी के चेहरे पर क्रोध के चिह्न स्पष्ट दिखलायी दिये। एक विरक्त महात्मा के मन में क्रोध क्यों ? जब सिंह जैसा हिंसक पशु भी इनके तपोबल से सीधी गाय बनकर रहता है, तब स्वयं इनके अंदर क्रोध का रहना बहुत ही आश्चर्य की बात है। क्योंकि जहाँ क्रोध है, वहीं हिंसा है और जहाँ वास्तव में हिंसा है, वहाँ हिंसक पशुओं की ऐसी अहिंसा की स्थिति नहीं हो सकती। उसके कुछ भी समझ में नहीं आया।

उसने महात्माजी को नम्रतापूर्वक प्रणाम किया। महात्मा जी ने धीरे से 'श्रीहरि' कहकर उसे इशारे से बैठने का आदेश दिया। फिर उन्होंने उससे उसके वहाँ आने का कारण पूछा। उसे क्षुधा से पीड़ित जानकर उन्होंने उसे एक पत्तल में महाप्रसाद दिया और आश्रय के लिये रात्रि तक वहीं विश्राम करने की स्वीकृति।

महाप्रसाद खाकर उसकी तृप्ति हो गयी, सारी थकावट मिट गयी और फिर उसमें नव-जीवन आ गया। महात्माजी को वस्तुतः उदार और कोमल प्रकृति का जानकर उसने साहस करके उनसे कहा-

'भगवन्, एक प्रश्न पुछूँ?'

'हाँ, सहर्ष।'

'आप रुष्ट तो नहीं होंगे ?'

'नहीं।'

'आपके चेहरे पर क्रोध के चिह्न कैसे प्रकट हो रहे थे?'

'वत्स, जाने दो। ऐसा प्रश्न न करो।'

महात्माजी ने पहले उसे टालना चाहा, परन्तु उसके आगह करने पर तैयार हो गये। उन्होंने कहा-'पीपरा ग्राम में एक वैश्य रहता है। वह स्नान करके नित्य गीता का पाठ करता है। श्रीकृष्ण भक्त है और है साधु स्वभाव का। उसका नाम है भोलानाथ। मुझको उसके एक विपरीत आचरण की याद आ गयी, इसी से क्रोध उत्पन्न हो गया। उसे दण्ड देने का मन कर रहा है।'

'भगवन् ! वह तो बड़ी अच्छी प्रकृति का है। किसी का अपकार नहीं करता। स्नान और गीता- पठन के पूर्व जल तक नहीं पीता। सुख-दुख को समान समझता है। गृहस्थी के जंजाल से परे है और माया से दूर। उस पर इतना क्रोध क्यों ?' उसने विस्मय से पूछा।

महात्माजी बोले -'अच्छा, बताओ यदि एक राज-

कर्मचारी और एक अशिक्षित व्यक्ति दोनों राजनियम के विरुद्ध कोई कार्य करें तो दोनों में विशेष दण्डनीय कौन होगा?'

'राजकर्मचारी, क्योंकि वह राजनियम से परिचित है। उसे विशेष दण्ड मिलना चाहिये।' -उसने उत्तर दिया।

'अच्छा, अब अपने प्रश्न पर आओ। भक्त भगवान् का कर्मचारी है और भगवद् गीता भगवान् का नीति-ग्रन्थ (Law book) है। भक्त अन्य मनुष्यों से श्रेष्ठ है। यदि वह भी नियम के विरुद्ध चलेगा तो संसार में हलचल मच जायेगी। सांसारिक मनुष्य उसका अनुकरण करेंगे और इससे अपना सर्वनाश। संसार का सर्वनाश करने वाला, भक्त कदापि नहीं हो सकता। वह अपराधी है और दण्ड का भागी है।'-महात्माजी बोले।

'ठीक है, भगवन्! परन्तु वह तो ऐसा कोई कार्य नहीं करता। उसे तो अधर्म से घृणा है। वह तो पारिवारिक प्रेम से भी परे रहता है, बल्कि उनकी ममता छोड़कर विरक्त भी है।'-उसने कहा।

यह सुनकर महात्माजी का क्रोध बढ़ गया, उनकी आँखें लाल हो गयी। वे कड़ककर बोले-'व्यर्थ उसके आचरण का समर्थन न करो। वह श्रीकृष्ण का भक्त होकर भी श्रीकृष्ण के आदेश के विरुद्ध आचरण करता है। उनका स्पष्ट आदेश है-

ब्राह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गंत्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।।
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।।

अर्थात् जो मनुष्य अपने सब कार्यों को परमात्मा के अर्पण कर देता है और आसक्तिरहित होकर कर्म करता है, वह पुरुष जल से कमल के समान पाप से परे रहता है। पूर्व में होने वाले मुमुक्षू पुरुषों ने भी इस प्रकार जानकर कर्म किये हैं, अतएव तू पूर्वजों द्वारा सदा से किये जाने वाले कर्म ही कर।'

उन्होंने फिर कहा-'कर्म करने में पाप समझकर कर्म का त्याग करके वह विरक्त हो गया है। मैं जानता हूँ वह अच्छा पुरुष है, उसमें वैराग्य और त्याग भी है, परन्तु यदि उसके जैसे श्रेष्ठ मनुष्य भी जब ऐसा करेंगे तो कोई भी व्यक्ति श्रीकृष्ण के 'कर्मयोग' पर श्रद्धा नहीं करेगा। सांसारिक कर्म में पाप समझकर लोग कर्म से विमुख हो जायेंगे और कोई संसार में न रहेगा। इससे श्रीकृष्ण के उपदेशों का उनकी गीता का केवल एक अज्ञानी व्यक्ति की मूर्खता के कारण कोई महत्व नहीं रहेगा। लोग गीता-पाठ से भय करेंगे और श्रीकृष्ण के उपदेशों से लाभान्वित होने से वंचित रह जायेंगे। उसे चाहिये कि मन से विरक्त रहते हुए भी वह भगवान् श्रीकृष्ण के आदेश को मानकर अनासक्त भाव से कर्तव्य-कर्म करे और अपने उन कर्तव्य-कर्मों के द्वारा ही भगवान् का पूजन करे। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो वह सन्तप्त परिवार कीआहों से अवश्य भस्म हो जायेगा अथवा मेरा यह क्रोध ही उसे उचित शिक्षा देगा!'

भोलानाथ उसी का नाम था। वह भय से काँपने लगा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया और भय से आँखें मूँद लीं। थोड़ी देर के पश्चात् वह सो गया।

प्रातःकाल उठने पर उसने देखा वहाँ कोई पर्णकुटी नहीं है। महात्माजी, उनके सिंह, मृग और गाय का कहीं पता तक नहीं है। उसने अपने को एक वृक्ष के नीचे सोया पाया। उसके ज्ञान-चक्षु खुल गये, उसे ज्ञात हो गया स्वयं 'श्रीहरि' ही साधु के वेश में उसे सावधान करने आये थे। उसकी आँखों से कृतज्ञतासूचक अश्रुधारा बह चली।

उसने बाहर से विरक्त होने का ध्यान छोड़ दिया। भगवान् श्रीकृष्ण के उपदेशानुसार गीतापथ का पथिक बनकर वह फलासक्ति और कर्तृत्वाभिमान को छोड़कर भगवत् पूजा के भाव से गृहस्थ धर्म का पालन करने लगा। वह संगरहित होकर कर्म करता था और कमल के जल से निर्लेप होने के समान वह भी निर्लेप था। अब वह एक गृहस्थ संन्यासी था।

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- शिष्य वह है जिसका नाम गुरु के हृदय पर अंकित हो जाता है और यह होता है व्यक्ति के कार्यों से, उसकी भावना से। शिष्य को सदैव तत्पर रहना चाहिए कि गुरु के कहने से पूर्व ही वह उसकी इच्छा को समझ लें तथा उसके अनुरूप कार्य करें।
- शिष्य कुछ भी करे उसकी यही भावना रहे कि गुरु ही उससे कार्य करवा रहे है तथा वह गुरु की इच्छा एवं प्रेरणा से ही संचालित है। जब शिष्य अहंकार रिक्त होकर कार्य करेगा तो उसके प्रयास स्वयं पूर्णता की ओर अग्रसर होंगे।
- गुरु कोई देह नहीं, वह तो चेतना स्वरूप है। यह शिष्य सदैव याद रखे और चेतना कभी समाप्त नहीं होती, देह भले ही समाप्त हो जाएं। चेतना किसी न किसी स्वरूप में विद्यमान रहती ही है। कहीं न कहीं अवस्थित रहती ही है। उसी चेतना से एकरस होना शिष्य का धर्म और कर्त्तव्य है।
- शिष्य को सदा स्मरण रहे कि वह परम स्वरूप चेतना जिसे हम सद्गुरुदेव कहते हैं, वह अखंड है, निष्कलंक है, सर्वव्याप्त है तभी वह इतने करोड़ों शिष्यों पर एक साथ दृष्टि रख पाता है और शिष्य को जब यह सदैव एहसास रहता है कि सद्गुरुदेव की दृष्टि हमेशा उस पर रहती है तो फिर वह जीवन में कुछ गलत कर ही नहीं पाता। सद्गुरुदेव की सूक्ष्म चेतना उसे फिर हमेशा मार्ग दर्शित करती रहती है।
- शिष्य को कुछ अलौकिक, दैनिक अनुभव कराने हेतु गुरु उसे साधना प्रदान करता है। परंतु एक दो साधना सिद्ध करके स्वयं को गुरु मान बैठना मूर्खता है। सद्गुरुदेव स्वयं सभी साधनाओं के स्रोत हैं, सभी देवी-देवता उन्हीं की इच्छा से कार्य करते हैं - यह शिष्य स्मरण रखें। वह साधना करें पर याद रखें कि जो कुछ दिव्यता उसे प्राप्त होगी वह सद्गुरुदेव की कृपा से ही प्राप्त होगी।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- तुम्हारा जीवन एक सामान्य घटना नहीं है एक सामान्य चिंतन नहीं है, तुम्हें यह मनुष्य देह अनायास ही प्राप्त नहीं हो गई है, कितने ही संघर्ष, गुरु के कितने ही प्रयास इसके पीछे हैं, अत: इस जीवन को सहज ही मत लेना। इसका मूल्य समझो तथा मूल उद्देश्य को जानो।
- मुझे अत्यधिक वेदना होती है जब तुम हमेशा एक निद्रा की सी अवस्था में खोए रहते हो, तुम भ्रम में पड़े रहते हो तथा वे भ्रम तुम्हें अपने मूल लक्ष्य की ओर बढ़ने से रोकते हैं। मानव जीवन पाकर भी आप खोए हुए हैं तो यह आपका दुर्भाग्य ही है।
- अगर ऐसा है तो तुम मेरे शिष्य हो भी नहीं सकते, क्योंकि अगर आप मेरे शिष्य हैं तो आपमें क्षमता होनी चाहिए कि आप पशुता से ऊपर उठकर मनुष्यता तथा मनुष्यता से भी ऊपर उठकर देवता के स्थान पर पहुंच पाएं।
- शिष्य वही है जो भौतिकता को भोगे, परंतु अपने मूल उद्देश्य से न डगमगाए। उसकी दृष्टि हमेशा अपने लक्ष्य पर टिकी रहे। मेरी इच्छा है कि तुम्हें उस उच्चतम स्थिति पर स्थापित कर दूं जहां भारत क्या पूरे विश्व में तुम्हें चैलेंज करने वाला कोई न हो।
- मैं तुम्हारी सभी कमियों को ओढ़ने को तैयार हूं, मैं तुम्हारे विष रूपी कर्मों को पचाने के लिए तैयार हूं क्योंकि तुम मेरे प्रिय हो। तुम मेरे आत्म हो, तुम मेरे अपने हो, तुम मेरी हृदय की धड़कन हो।
- दूसरों की तरह केवल धन, वैभव, काम, ऐश्वर्य में फंसे हो तो क्या यह उचित है? मैंने तो हमेशा आपको संपन्न देखना चाहा है परंतु आत्म उत्थान की बलि देकर सम्पन्नता प्राप्त कर भी लो और आपकी आध्यात्मिक झोली फटी रह जाए तो सब व्यर्थ है।

30.12.21 या किसी भी गुरुवार से

कुण्डलिनी एक ऐसी दिव्य शक्ति है,
जो मानव शरीर में सुप्तावस्था में पड़ी रहती है।

यदि किसी प्रकार से उसे जाग्रत कर दिया जाय, क्रियान्वित कर दिया जाए,
तो व्यक्ति में स्वत: ही अनेक प्रकार के परिवर्तन होने लग जाते हैं।

कुण्डलिनी तो जाग्रत होती ही है इस प्रयोग से

षट्चक्र उत्तिष्ठ साधना

जिसे गुरु गोरखनाथ ने सम्पन्न किया...
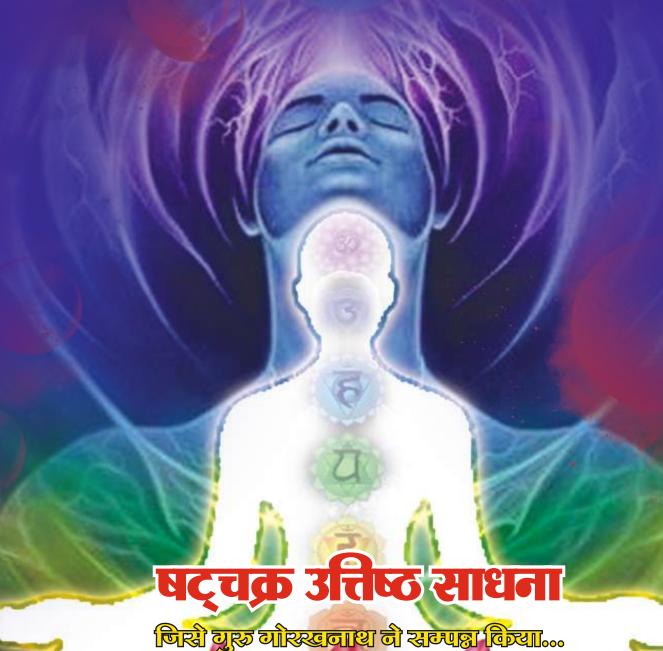
आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश प्राप्त कोई भी व्यक्ति कुण्डलिनी शब्द से अपरिचित नहीं....

क्योंकि समस्त शास्त्रों, समस्त उपनिषदों ने मानव का परम लक्ष्य कुण्डलिनी जागरण ही बताया है।

साधना, दीक्षा, योग सबका मूल चिन्तन व्यक्ति के शरीर में अवस्थित कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करना है, जिसके द्वारा वह अपने अन्दर छुपी अनन्त सम्भावनाओं को पहिचान कर उनका उपयोग कर सकता है और जीवन में सही तरह से अग्रसर हो सफलता प्राप्त कर सकता है।

कुण्डलिनी एक ऐसी दिव्य शक्ति है, जो मानव शरीर में सुप्तावस्था में पड़ी रहती है। यदि किसी प्रकार से उसे जाग्रत कर दिया जाये, क्रियान्वित कर दिया जाये, तो व्यक्ति में स्वत: ही अनेक प्रकार के परिवर्तन होने लग जाते हैं। नीचे कुण्डलिनी जागरण की कुछ उपलब्धियाँ दी जा रही हैं–

1. जिस व्यक्ति की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, वह अपने आप ही अत्यन्त आकर्षक, तीव्र सम्मोहन युक्त बन जाता है, उसके चारों ओर एक अद्वितीय आभा मण्डल बन जाता है, जिससे हर व्यक्ति स्वत: ही उसकी ओर आकृष्ट होने लगता है।
2. उसकी देह से एक अद्वितीय सुगन्ध प्रवाहित होने लग जाती है, जो उसके आसपास के वातावरण को पवित्र बनाए रखती है। यह सुगन्ध लोगों को एक असीम शान्ति और आनन्द देने वाली होती है। यदि व्यक्ति चाहे, तो वह अपने आभा मण्डल और सुगन्ध को कम कर सकता है, जिससे औरों को उसके विषय में ज्ञान न हो।
3. उसकी वाणी इतनी सम्मोहक और आकर्षक हो जाती है, कि सुनने वाला मंत्र मुग्ध हो जाता है। संगीत और गायन में वह अद्वितीयता प्राप्त करता है और संगीतविज्ञों के बीच उसका सम्मान एवं आदर होता है।
4. वह सम्पूर्ण शास्त्रों, ज्योतिष, वास्तु विज्ञान, आयुर्वेद, मंत्र, तंत्र, मीमांसा आदि का ज्ञाता बन जाता है और विद्वत् समाज में उसका आदर होता है।
5. वह चाहे जिस क्षेत्र में कदम रखे राजनीति, अभिनय, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, व्यापार–वह सब में उच्चतम स्थिति प्राप्त करता है।
6. अधिकारी, मंत्री आदि उसकी बात को मानने में अपना अहोभाग्य समझते हैं।
7. ऐसे व्यक्ति को स्वत: ही त्रिकाल ज्ञान हो जाता है, जिससे वह पहले से ही अपनी योजनाएं बना कर जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।
8. उसे स्वत: ही विभिन्न सिद्धियां जैसे दूर दर्शन, दूर श्रवण, आकाश गमन आदि प्राप्त हो जाती हैं।
9. उसे वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है, वह जो भी कहता है, वह निकट भविष्य में सत्य होता ही है, अर्थात् वह किसी को भी वरदान अथवा श्राप देने में सक्षम हो जाता है।
10. उसके शरीर में गजब का बल एवं स्फूर्ति आ जाती है। उसे ज्यादा निद्रा, भोजन, जल आदि की आवश्यकता नहीं होती, साधना की उच्चावस्था में तो इनकी बिल्कुल ही जरूरत नहीं होती।
11. ऐसे व्यक्ति का पारिवारिक जीवन भी पूर्ण एवं आनन्दयुक्त होता है। उसकी स्त्री पतिव्रता एवं उसकी आज्ञा पालन करने वाली होती है। उसकी संतान भी योग्य, अच्छे संस्कारों से युक्त एंव आदर करने वाली होती है।

12. ऐसे व्यक्ति विचारों से रहित होकर गृहस्थ योगी के रूप में जीवन व्यतीत कर सकता है, वह समस्त भोगों को भोगता हुआ भी उनमें अलिप्त रहता है।
13. ऐसे व्यक्ति के घर में लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करती है, धन का निरन्तर आगमन होता ही रहता है और अगर व्यक्ति खुले हाथ से व्यय करता है, तो भी धन बढ़ता ही रहता है।
14. वह व्यक्ति जो भी साधना करता है, उसमें सफल हो जाता है। वह सिद्धाश्रम जाने का अधिकारी होता है और चाहे तो जरा-मृत्यु को भी जीत सकता है।
15. ऐसा व्यक्ति इस जीवन में पूर्णता प्राप्त कर अपने अगले जीवन का खुद ही निर्णायक होता है कि कब जन्म लेना है, कहां जन्म लेना है, किसके यहां जन्म लेना है आदि।

योगी गोरखनाथ जब साधना की प्रारम्भिक अवस्था में थे, तब उनके मन में अपनी कुण्डलिनी जाग्रत करने की तीव्र आकांक्षा थी, पर वे चाह कर भी उसमें सफल नहीं हो पा रहे थे। इसके लिए उन्होंने कई प्रयत्न किये। निराहार रहकर कठोर तपस्याएं कीं, तीव्र साधनाएं सम्पन्न कीं, पर हर बार असफलता ही हाथ लगी।

साथ ही साथ एक भय उन्हें बराबर कचोट रहा था, कि वे इस जीवन में कहीं पथच्यूत न हो जाएं, क्योंकि वे जानते थे, कि विकारों पर पूर्ण नियन्त्रण तो कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से ही सम्भव है, उसके बिना कोई रास्ता नहीं... पर तमाम कोशिशों के बावजूद भी वे इसमें सफल नहीं हो सके थे।

इस तरह जब कई वर्ष बीत गए, तो गोरखनाथ ने अग्नि समाधि ले कर प्राणों का विसर्जन करने की ठान ली... वे ऐसा करने वाले ही थे, कि उनके परम गुरु दत्तात्रेय वहां उपस्थित हुए और उन्हें रोकते हुए कहा–

'गोरख, यह तुम क्या कर रहे हो, क्या इसी दिन के लिए मैंने दीक्षा दी थी?'

'पर प्रभु! मैं अब और प्रतीक्षा नहीं कर सकता... मैंने प्रतिज्ञा ली है, कि या तो सफल होऊंगा या फिर प्राण त्याग दूंगा।'

'यदि तुम वास्तव में ही इतने उत्सुक हो और तुम्हारे मन में इतनी ही सच्ची एवं तीव्र आकांक्षा है, तो मैं तुम्हें यह साधना सम्पन्न कराता हूँ, जिससे कुण्डलिनी जाग्रत होती ही है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश चाहे पदच्युत हो जाएं, पर यह साधना कभी भी असफल नहीं हो सकती...'

–और जब गोरखनाथ ने उनके मार्गदर्शन के अनुसार 'षट्चक्र उत्तिष्ठ साधना' सम्पन्न की, तो पहली बार में ही उनकी कुण्डलिनी पूर्णत: जाग्रत हो, षट्चक्र भेदन करती हुई सहस्रार में अवस्थित हो गई, जिसके फलस्वरूप उनका सारा शरीर अमृत तत्व से अभिसिञ्चित हो गया, उनके सारे विकार जड़-मूल से नष्ट हो गए, माया और वास्तविकता का ज्ञान उन्हें स्पष्ट हो गया और वे श्रेष्ठतम स्थिति प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हो सके।

वास्तव में ही यह साधना अद्वितीय साधना है, श्रेष्ठ साधना है और इसमें सफलता मिलती ही है, जो साधक कुण्डलिनी जागरण के आकांक्षी हैं और इस ओर प्रयास करके थक चुके हैं, उन्हें बिना समय गंवाये यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए...

साधना विधान

यह साधना तीन दिनों की है और 30.12.21 या किसी भी गुरुवार से इसे प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान कर सफेद वस्त्र धारण करे और फिर उत्तराभिमुख होकर सफेद आसन पर बैठे। अपने सामने सफेद वस्त्र से ढके बाजोट पर 'षट्चक्र उत्तिष्ठ महायंत्र' एवं उसके चारों ओर 'विद्युतमालिनी माला' स्थापित करें।

फिर गुरु का सामान्य पूजन करने के उपरान्त यंत्र एवं माला का भी पूजन करें। घी का दीपक जलावें और निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ लं वं रं यं हं श्रीं कुल कुण्डलिन्यै नम:।।

OM LAM VAM RAM YAM HAM SHREEM KUL KUNDALINYAI NAMAH

यह साधना तीन दिनों तक नित्य करें। साधना समाप्ति के उपरान्त तीसरे दिन इस यंत्र एवं माला को किसी जलाशय में विसर्जित कर दें, जिससे साधना का पूरा प्रभाव प्राप्त हो सके। यह साधना इतनी तीव्र है, कि साधक को साधना के दौरान ही फल प्राप्त होने लग जाता है और उसकी कुण्डलिनी उर्ध्वमुखी हो ऊपर की ओर उठने लगती है।

यह साधना आजकल के परिवेश में अत्यधिक उपयोगी है, क्योंकि कुण्डलिनी का वास्तविक अर्थ है परिपूर्णता, हर क्षेत्र में श्रेष्ठता। फिर चाहे वह धन, वैभव, व्यापार, भौतिकता हो या साधनात्मक उच्चता, हर तरह से व्यक्ति अद्वितीयता प्राप्त कर सफलता की ओर अग्रसर होता ही रहता है।

साधना सामग्री- 510/-

भगवान गणपति की साधना श्रेष्ठतम साधनाओं में मानी जाती है। महर्षि विश्वामित्र भगवतपाद शंकराचार्य तथा गुरु गोरखनाथ ने भी गणपति साधना को जीवन के लिए सौभाग्यदायक माना है।

भगवान गणपति विघ्न विनाशक, सिद्धि प्रदाता तथा सभी देवताओं में अग्रगण्य प्रथम पूज्य है। बिना गणपति पूजा के अन्य सिद्धियां या साधनाएं अथवा पूजा आदि निष्फल माना जाता है।

भगवान गणपति का स्वरूप यथार्थतः शिव और शक्ति का सम्मिलित साकार स्वरूप है। शिव और शक्ति का सुखद आशीर्वाद किसी भी कार्य में पूर्णता देने में समर्थ है।

गणपति साधना से जीवन के प्रमुख दोष जैसे

आलस्य, कृपणता, दीनता, निद्रा, शिथिलता, अचैतन्यता, पुरुषार्थ हीनता एवं विस्मृति

आदि का परिहार संभव हो पाता है।

सर्वपूज्य देव
गणपति साधना

सर्वप्रथम पूज्य भगवान गणपति की साधना प्रारंभ करने से पूर्व साधक को मूलभूत आवश्यक जानकारी होनी ही चाहिए। अतः आप गणपति साधना से पूर्व निम्न नियमों को ध्यानपूर्वक पढ़ें एवं साधनाकाल में इनका पालन करें –

1. नित्य प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर गणपति साधना करना अत्यंत श्रेष्ठ है और सौभाग्यप्रद भी है।
2. गणपति साधना हेतु प्राण प्रतिष्ठित 'गणपति विग्रह' स्थापित करना आवश्यक है।
3. पूजा कक्ष में एक साथ तीन गणपति विग्रह नहीं रखें।
4. गणपति साधना का प्रारंभ मंगलवार तथा किसी भी माह की नवमी तिथि से नहीं करें।
5. साधना में गणपति का विग्रह पश्चिम मुख करके स्थापित करें।
6. गणेश पूजन में तुलसी दल वर्जित है।
7. दूब (दुर्वा) तथा सुगंधित पुष्प चढ़ायें।
8. गाणपत्योपनिषद के अनुसार साधना प्रारंभ करने से पूर्ण गुरु पूजन अवश्य करें।

सर्वपूज्य गणपति साधना जीवन की उन्नति एवं कष्टों के निवारण के लिए श्रेष्ठ है। यह साधना उस समय विशेष उपयोगी है जब किसी का व्यापार बन्द होने लगे, रोगों से त्रस्त होकर कष्टदायक स्थिति बन जाए अथवा कर्ज के बोझ से व्यक्ति दब गया है वो इस साधना द्वारा पूर्णतः अनुकूलता प्राप्त होती है।

आज की व्यस्ततम जीवनशैली में लोगों के पास इतना समय भी नहीं रहा है कि वे अपने लिए दो-चार घण्टे निकाल सकें। अतः साधना के लिए पर्याप्त समय के अभाव से ग्रस्त लोगों के लिए पूज्य गुरुदेव ने कृपापूर्वक यह विशेष सर्वपूज्य गणपति साधना का विधान प्रदान किया।

इस विधान द्वारा साधना करने पर दैनिक जीवन में समस्त प्रकार से उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं। वैसे तो इस साधना को आप अपनी दैनिक पूजा में सम्मिलित कर लें, तो आपको अत्यधिक अनुकूलता प्राप्त होगी। यदि आप किसी विशेष कार्य के लिए इस साधना को करना चाहते हैं, तो गुरु पूजन करने के पश्चात दाहिने हाथ में जल तथा दूब लेकर संकल्प बोलें –

संकल्प

''मैं सर्वपूज्य गणपति साधना अमुक कार्य (अपना कार्य या समस्या बोलें) की पूर्णता (समाधान) के लिए 11 दिन तक नित्य प्रातः सम्पन्न करूँगा।''

जल भूमि पर छोड़ दें। अपने सामने किसी पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर गणपति विग्रह स्थापित करें। सुगंधित पुष्प चढ़ायें। दीपक या अगरबत्ती प्रज्वलित करें।

लड्डू का भोग (नैवेद्य) अर्पित करें। इसके पश्चात् दूब तथा पुष्प या अक्षत चढ़ाते हुए निम्न क्रम का उच्चारण करें –

दक्षिण हस्ते वक्र तुण्डाय नमः।
वाम हस्ते शूर्प कर्णाय नमः।
ओष्ठे विघ्नेशाय नमः।
दक्षिण पादे गजाननाय नमः।
वामपादे एकदन्ताय नमः।
शिरसि गणेशाय नमः।
चिबुके ब्रह्मणपतये नमः।
दक्षिण नासिकायः विनायकाय नमः।
वाम नासिकायाम् ज्येष्ठराजाय नमः।
दक्षिण नेत्रे विकटाय नमः।
वाम नेत्रे कविलाय नमः।
दक्षिण कर्णे धरणीधराय नमः।
वाम कर्णे आशापूरिकाय नमः।
नाभौ महोदराय नमः।
हृदये धूम्रकेतवे नमः।
ललाटे मयूरेशाय नमः।
दक्षिण बाहौ स्वानन्दवासकारकाय नमः।
वाम बाहौ सच्चित सुखधाम्ने नमः।

इसके पश्चात् निम्न स्तवन का इक्कीस बार पूर्ण श्रद्धा भाव से पाठ करें –

गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः।
दैमातुरंश्च हेरम्ब एकदन्तो गणधिपः।
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत क्वचित्।

स्तवन पाठ पूर्ण करने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें – ''हे भगवान सर्वपूज्य गणपति! मुझे साधना की विधि भली-भांति नहीं आती है, यदि कोई त्रुटि हो तो आप क्षमा करें और मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि बनायें।''

आपने जो नैवेद्य गणपति को अर्पित किया है, उसे स्वयं ग्रहण करें तथा अपने परिवारजनों को भी दें।

इस प्रकार आप को नित्य ग्यारह दिनों तक यह पूजन करना है।

यदि आप दैनिक जीवन में नित्य यह पूजन करना चाहते हैं तो गणपति विग्रह को पूजन कक्ष में ही स्थापित रहने दें।

यदि आप ने किसी विशेष कार्य की पूर्णता के लिए इस साधना को किया है तो साधना पूर्ण होने के अगले दिन विग्रह को नदी में विसृजित कर दें।

साधना सामग्री : 450/-

योग शास्त्रों में 'कुण्डलिनी' को महाशक्ति की संज्ञा दी गई है। महाशक्ति वह जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का संचालन करती है, उसे 'उच्छिष्ट ब्रह्म' भी कहा गया है अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि के विनाश के बाद जो शेष रहता है, वह कुण्डलिनी है। पुराणों में इसी महाशक्ति को 'शेष-नाग' के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके शीश पर पृथ्वी को अधिष्ठित निर्दिष्ट किया जाता है।

कुण्डलिनी जागरण
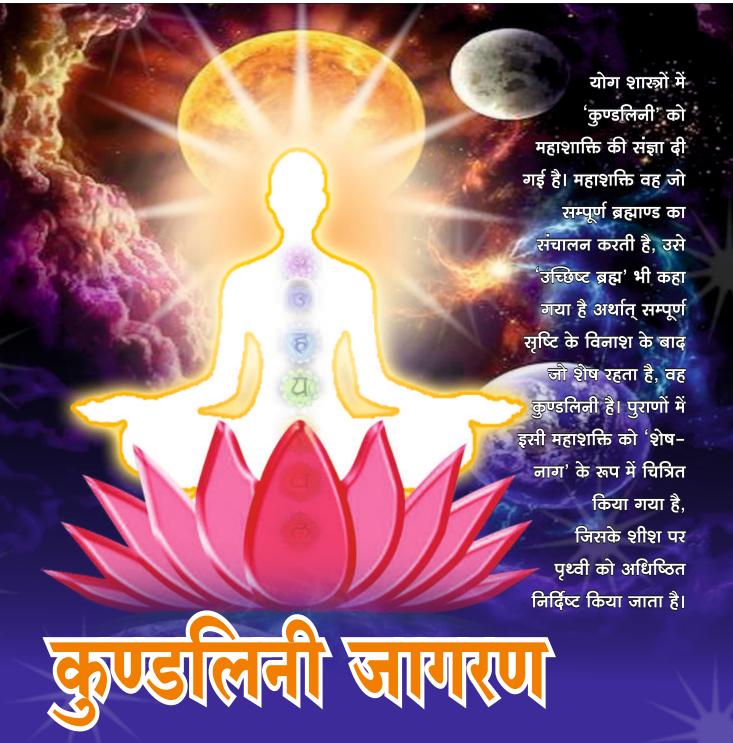
वैदिक साहित्य में यह स्पष्ट किया गया है, कि यह सृष्टि स्थूल और सूक्ष्म-दो वर्गों में विभाजित है। परमेश्वर से प्रकट होने वाली ऊर्जा या शक्ति सृष्टि के इन दोनों ही स्तरों पर क्रीड़ा करती है। इसकी तुलना प्राय: अंतरिक्ष में उमड़ रहे उस वाष्प से की जाती है, जो अपने आपको कुहरा, बादल, बिजली, जल, गर्जन, बर्फ, प्रभंजन आदि किसी भी रूप में परिवर्तित कर सकती है। शाक्ति की अभिव्यक्ति सृष्टि-रूप में होती है। वही शक्ति जब अपने आप का संकुचन करती है तो अपने कारण में सृष्टि का लय हो जाता है। अनन्त विश्व में व्याप्त शक्ति अपनी रचना-प्रक्रिया की अवधि में गतिशील हो जाती है। जब उसका कार्य समाप्त हो जाता है, तो शांत प्रकृति में वह परिणत हो जाती है। शेषनाग के रूप में पुराणों में इसी अवस्था का बोध कराया गया है। यह शक्ति अपने आपको वलयों में परिवेष्ठित रखती है। योगियों का अनुभव है कि जब इसके वलय निर्ग्रंथ होते हैं तो यह त्वरित गति से अपने उद्गम परम शिव की ओर ऊपर उठती है, इसे ही **'कुण्डलिनी-जागरण'** कहा जाता है।
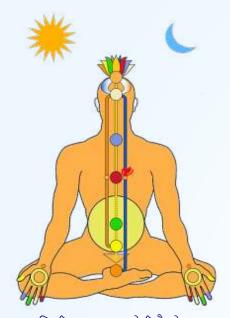
कुण्डलिनी जब जाग्रत होती है तो अनन्त आनंद का स्रोत फूट पड़ता है। इसी आनंद भाव में ब्रह्म के तात्विक स्वरूप का अन्वेषण किया जाता है। शक्ति जब एक बार जाग्रत हो जाती है तो जीवन के समस्त विरोधों का समाहार करते हुए सूक्ष्मतर आनंद में अपने आपकी अभिव्यक्ति करती है। इससे मनुष्य के आध्यात्मिक-विकास का पथ प्रशस्त हो जाता है। विश्वात्मा के रूप में व्याप्त इस रहस्यमयी शक्ति को गुरु द्वारा शक्तिपात की दीक्षा से जाग्रत किया जा सकता है। यह एक ऐसी क्रिया है, जिसमें उच्च शक्ति-सम्पन्न गुरु, शिष्य में ऊर्जा का प्रवाह संचारित कर देता है, जिससे शिष्य की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है और उसकी पारमार्थिक ऊर्ध्व यात्रा प्रारम्भ हो जाती है।

हिन्दुओं का विश्वास है कि जिस ईश्वर से हमारा अस्तित्व उद्भूत हुआ है, यदि हम चाहें तो अपने अस्तित्व के उस मूल केन्द्र की ओर लौट भी सकते हैं। कुण्डलिनी की अन्तर्वती-यात्रा से यह सम्भव हो सकता है और इसे मोक्ष की अवस्था माना गया है। प्रत्येक मनुष्य में व्याप्त चेतना-संज्ञा कुण्डलिनी के रूप में प्रसुप्त रहती है। उसके वलय जैसे-जैसे खुलते जाते हैं, मनुष्य ईश्वर के निकट पहुंचता जाता है। जीवन के समग्र विकास का इसे पर्याय माना जाता है। इस विकास-पथ पर मनुष्य जैसे-जैसे

सम्भव है आज भी इसी शरीर की आन्तरिक चेतना विकास करके उन स्थितियों का साक्षात करना,
जिन्हें पुराणों में देवलोक, इन्द्रलोक आदि के रूप में वर्णित किया गया है।
......सम्भव है यह सब ! केवल कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से, सद्गुरु के शक्तिपात से......

अग्रसर होता है, उसे अलौकिक अनुभव होने लगते हैं। सिद्धियों के साम्राज्य का उसे प्रवेश-द्वार मिल जाता है। वह यदि चाहे तो अपने सूक्ष्म शरीर का परिचालन कर ब्रह्माण्ड के किसी भी क्षेत्र की यात्रा कर सकता है। वह देवलोक में जाकर देवताओं का दर्शन भी कर सकता है, ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में कोई भी घटना घटित हो रही है, वह उसे प्रत्यक्ष देख सकता है, ब्रह्माण्ड की किसी भी ध्वनि को सुन सकता है। इस तरह की अलौकिक सिद्धियों का कारण यह है, कि कुण्डलिनी-जागरण से तमोगुण का नाश होता है और मनुष्य अपने 'सत्व' पर स्थिर होने लगता है। 'सत्व' पर स्थिर होना ही आत्मा के स्वरूप को जानना है। तमोगुण एक प्रकार से माया का आवरण है, जिसके पीछे परमेश्वर छुपा होता है। जैसे ही यह आवरण हटता है, परमेश्वर की झलक अपनी ही आत्मा के भीतर उसी प्रकार मिलने लगती है, जैसे जलपूर्ण घट में हम विराट सूर्य को बिम्ब-रूप में देख सकते हैं।

कुण्डलिनी के महत्त्व का आख्यान करते हुए योग-शास्त्रों में कहा गया है-

स शैल वन धात्रीणां यथाधारोऽहिनायकः।
सर्वेषां योगतंत्राणां तथाधारो हि कुंडली।।

अर्थात् जिस प्रकार पर्वत, वन और धरती का आधार भगवान शेषनाग हैं, उसी प्रकार समस्त योग-तंत्रों का मूल विषय कुण्डलिनी है।

विद्वानों का एक वर्ग वेदों एवं पुराणों के बीच संगति स्थापित नहीं कर सका। वास्तविकता यह है, कि वेदों में जो सिद्धांत सूत्र-रूप में हैं, पुराणों में कथाओं के माध्यम से उन्हीं सिद्धांतों की व्याख्या की गई है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि वेदों में जो शेष-ब्रह्म है, वही पुराणों में शेषनाग है। सृष्टि-विकास के बाद भी यह ब्रह्म शेष रहता है तथा सृष्टि के नाश के बाद भी यही ब्रह्म शेष रहता है। ब्रह्म को स्थिर अवस्था में ही 'नारायण' कहा गया है जो क्षीर सागर में शेष-शय्या पर निद्रा-निमग्न होते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को शेषनाग ही धारण करते हैं। अतः उन्हें विश्वव्यापी कुण्डलिनी के रूप में ही स्वीकार किया जाता है। मनुष्यों में व्यक्तिगत इकाई के रूप में भी इसी की संज्ञा होती है। जीवन-निर्माण के बाद भी यह संज्ञा शेष रहती है। व्यक्ति के शरीर में इसका केन्द्र मूलाधार माना जाता है। यह वह स्थान है जहां से मेरुदण्ड प्रारम्भ होता है। यहीं स्वयंभू-लिंग की अवस्थिति मानी गई है, जिसके चतुर्दिक कुण्डलिनी-शक्ति सर्पाकृति में साढ़े तीन वलयों में अपनी पूंछ को मुंह में दबाये प्रसुप्त रहती है। प्रगाढ़ ध्यान के क्षणों में ब्रह्मरंध्र से उद्भूत प्रकाश में इस स्वयंभू लिंग एवं सर्पाकृति कुण्डलिनी को स्पष्ट देखा जा सकता है। इसके जाग्रत होने और मेरुदंड पथ पर अग्रसर होने के दृश्य को भी ध्यान-योगी प्रत्यक्ष देख सकता है। कुण्डलिनी के अधिष्ठाता देवता परम शिव माने गए हैं जो सहस्रार में निवास करते हैं। कुण्डलिनी-जागरण का लक्ष्य शिव से मिलना है, किन्तु जब तक यह मिलन नहीं होता कुण्डलिनी विशुद्ध-चक्र (कंठ क्षेत्र) में स्थिर रहती है और योगियों के ध्यान-पट पर प्रकाश के रूप में भासित होती है।

चूंकि कुण्डलिनी का स्वरूप भौतिक चेतना का होता है, अतः यह शक्ति जाग्रत होने के बाद साधक के जीवन को अनुशासित और नियंत्रित करती है, साथ ही जीवन के अग्रिम विकास की दृष्टि से साधक को निर्देशित भी करती है। जैसे एक माता अपने

पुत्र की सतत् रखवाली करती है, उसी प्रकार जाग्रत होकर कुण्डलिनी भी साधक की सतत रक्षा करती है। जाग्रत-कुण्डलिनी अपने नियंत्रण क्षेत्र से साधक को कभी बाहर नहीं जाने देती। साधक को उसकी गति का अनुभव होता रहता है। अनहद-नाद के रूप में उसकी ध्वनि सुनाई पड़ती है। ऐसी स्थिति में कुण्डलिनी किसी कल्पना-लोक की वस्तु न होकर यथार्थ-जगत की वस्तु प्रतीत होती है।

आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता के युग में तर्क बुद्धि के विकास के साथ मनुष्य प्रत्येक तथ्य को शंका की दृष्टि से देखने लगा है। जीवन के पारमार्थिक स्वरूप को आज का मनुष्य अंध-विश्वास मानता है। ईश्वर के अस्तित्व और उसकी चमत्कारिक शक्तियों को आज मनुष्य अर्थहीन मानता है। कुण्डलिनी को भी आज मनुष्य योगियों का कल्पना-विलास कहता है, किन्तु अब वैज्ञानिक भी इस क्षेत्र में अनुसंधान के लिए तत्पर हो गए हैं। मनोविज्ञान के क्षेत्र में जब से छठी इंद्रिय (मन) के रहस्यों का उद्घाटन हुआ है, वैज्ञानिक अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करने के लिए विवश हो गए हैं। आज यह सत्य स्थापितहो गया है कि छठी इंद्रिय ही समस्त अन्त: प्रेरणाओं का केन्द्र होती है और इसी सत्य पर जीवन-विकास की समस्त प्रक्रियायें अवस्थित हैं।

मनोवैज्ञानिक आज एक मत यह स्वीकार करते हैं कि मन जैसे-जैसे एकाग्रता की स्थिति को प्राप्त होता है, उसकी अलौकिक शक्तियाँ उजागर होती जाती हैं, कुण्डलिनी भी ऐसी ही शक्ति है, जिससे आत्मा की समस्त गोपनीयता के साथ रहस्यों का आवरण चढ़ा होता है। साधनाओं के प्रताप से, ईश्वर के अनुग्रह से अथवा गुरु-कृपा से यह आवरण जैसे-जैसे हटता है, सत्य के वातायन खुलते जाते हैं, जैसे दर्पण पर जब तक धूल की पर्त जमी होती है, हम अपनी छवि साफ नहीं देख सकते। अपनी छवि साफ देखने के लिए दर्पण में जमी धूल को साफ करना होता है। योग शास्त्रों में चित्त-पटल की तुलना ऐसे ही दर्पण से

वस्तुत: जिसे मनोवैज्ञानिक छठी इन्द्रिय कह कर मनुष्य की किसी अन्य अन्तर्चेतना को मानने पर विवश हो गए हैं वही हमारे शास्त्रों में कुण्डलिनी जागरण की स्थितियों के रूप में बहुत पहले ही कहा जा चुका है

की गई है। कुण्डलिनी जागरण का आशय वस्तुत: चित्त-पटल पर जमी वासनाओं की धूल को साफ करना है, जिससे आत्मा या ईश्वर की सही-सही छवि देखी जा सके।

समस्त संसार में दो प्रकार की शक्तियों-भौतिक और आध्यात्मिक की क्रीड़ा सर्वत्र देखी जा सकती है। भौतिक विज्ञान जड़ पदार्थों का ज्ञान तो प्रदान कर सकता है, किन्तु आध्यात्मिक तत्त्वों में वह सर्वथा अपरिचित है। कुण्डलिनी शक्ति जो गहरे अध्यात्म से सम्बद्ध होती है, के विषय में आज विज्ञान की किसी भी शाखा को कोई ज्ञान नहीं है। पाश्चात्य देशों में इधर कुछ समय से कुण्डलिनी - शक्ति पर अनुसंधान का कार्य किया जा रहा है, किन्तु अनेक विद्वान इसे मात्र एक नाड़ी मान कर भ्रमात्मक ज्ञान का प्रचार कर रहे हैं 'मिस्टीरियस कुण्डलिनी' ग्रंथ के लेखक डॉ. रेले ने इसी आशय के विचार प्रतिपादित किए हैं। सम्भव है, जिनकी कुण्डलिनी जागृत न हो, उनके लिए कुण्डलिनी मात्र एक नाड़ी प्रतीत हो, किन्तु ऐसी विचारधारा उचित नहीं है। शक्ति का स्वरूप सदैव अदृश्य होता है, विद्युत की धारा की तरह। इस रूप में कुण्डलिनी का अनुभव उसकी जाग्रतावस्था में ही होता है।

'मिस्टीरियस कुण्डलिनी' ग्रंथ की भूमिका के लेखक सर वुडरफ ने कुण्डलिनी को नाड़ी मात्र मानने से इन्कार किया है। सर वुडरफ महोदय का कथन है कि कुण्डलिनी कोई शारीरिक अवस्था या मानसिक तत्व नहीं है, अपितु दोनों का समन्वित रूप है, जो जाग्रत होकर ऊर्ध्वगामी होती है और अपनी सूक्ष्म विधियों से गुजर कर परमशिव से एकात्मकता प्राप्त करती है।

'हठयोग प्रदीपिका' में कहा गया है कि कुण्डलिनी का वास कंठ में होता है। कुछ अन्य आचार्य इसे नाभि के नीचे एक मांस-पेशी के रूप में मानते हैं। कुछ अन्य इसे पृष्ठ-पुच्छ अस्थि तथा मेरुदंड के नीचे त्रिकोण को आवृत्त करने वाली मांस-पेशी मानते हैं। हठयोगी इसके जागरण के लिए विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियायें करते हैं। भौतिक रूप में कुण्डलिनी की व्याख्या शायद सम्भव नहीं है। वह प्रकृति से अत्यन्त दिव्य मानी जाती है तथा हमारे जीवन, ज्ञान एवं चेतना का आधार होती है।

सफलता

विश्व का प्रत्येक मानव चाहता है कि उसे सफलता मिले, पर केवल चाहने से ही तो कोई वस्तु प्राप्त नहीं हो जाती, उसके लिये अपेक्षित योग्यता का विकास करना भी आवश्यक होता है। प्रत्येक आत्मा में अनन्त शक्ति है, पर वह दबी या छिपी हुई है, इसलिये उसका सही भान मनुष्य को स्वयं नहीं होता। अत: वह अपने को शक्तिहीन या कमजोर मान बैठता है। शक्ति के विकास के लिये योग्य सद्गुरु, सही अवस्था, शारीरिक स्थिति और अनुकूल साधना भी आवश्यक होती है, जैसे बाल्यवय में शारीरिक स्थिति शक्ति-प्रकटन का प्राकृतिक तरीका है, पर अपनी बुद्धि और कर्मों से भी शक्ति का विकास मनुष्य आश्चर्यजनक रूप से कर सकता है। जैसे शारीरिक शक्ति को बढ़ाने के लिये व्यायाम उत्तम साधन है, वैसे ही बौद्धिक एवं ज्ञानशक्ति का विकास करने के लिये स्वाध्याय-चिन्तन विशिष्ट उपाय है।

प्रत्येक कार्य आरम्भ में एक बार कठिन-सा लगता है, पर जब साहसपूर्वक उसको करने में जुट जाते हैं तो थोड़े समय के बाद ही वह कठिन कार्य सरल बन जाता है। जिस कार्य को करना हम अभी असम्भव-सा मानते हैं, वही सम्भव हो जाता है। तब कहिये वह कार्य-शक्ति आयी कहाँ से? वस्तुत: वह अपने भीतर ही छिपी हुई थी और अभ्यास एवं प्रयत्न के द्वारा प्रकट हो गयी।

मन की दुर्जेयता सर्वविदित है। बड़े-बड़े योगी-महात्माओं ने भी मन को वश में लाना बहुत ही कठिन बतलाया है, पर गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि 'अभ्यास और वैराग्य के द्वारा मन वश में किया जा सकता है।' वास्तव में अभ्यास शक्ति -प्रकटन और सफलता का महान् साधन है। मन इधर-उधर भटकने लगता है तो अभ्यास के द्वारा आखिर एक दिन चित्त की चञ्चलता स्थिरता में परिणत हो जाती है। अभ्यास की व्याख्या करते हुए कहा गया है–

यदि हम किसी कार्य को कठिन समझकर छोड़ देते हैं तो वह कठिन न होने पर भी हमारे लिये तो बहुत कठिन हो जायेगा, अतएव किसी भी कार्य को करने के लिये सबसे पहले मन में ऐसे दृढ़ संकल्प की अत्यन्त आवश्यकता है कि करेंगे या मरेंगे! ऐसे दृढ़ संकल्प के सामने असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि 'असम्भव शब्द को ही शब्दकोश से निकाल दिया जाय।' हमारे मनीषियों ने भी कहा है।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

हम देखते हैं कि बहुत-से ऐसे कार्य, जिन्हें हम नहीं कर पाते, पर दूसरे व्यक्ति उन्हें करते ही हैं। उनसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिये कि हम भी प्रयत्न करने पर वैसा कर सकेंगे। उसके नहीं हो सकने का कोई कारण नहीं है, यदि कोई कारण है भी तो उस बाधक कारण को प्रयत्न तथा अभ्यास से हटाया भी जा सकता है। अत: सबसे प्रथम आवश्यकता है आत्मविश्वास की। हम अपनी शक्ति का भान भूल चुके हैं, इसलिये मन की कमजोरी को हटाकर साहस के साथ कार्य करने में जुट जाना है।

अभ्यास करते हुए भी सफलता प्राप्त न हो तो निराश मत होइये। यह निश्चय रखिये कि अभ्यास के द्वारा आप साधना सफलता के समीप पहुँच रहे हैं। जब कार्यसिद्धि के अनुरूप अभ्यास हो जायेगा तो सफलता अपने-आप मिल जायेगी। जैसे मामूली रस्सी के बार-बार घिसाने से

कठिन पत्थर में भी निशान या रेखाएँ पड़ जाती हैं। कहा भी है–

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते सिलपर परत निसान।।

अत: उत्तम पुरुष वे हैं जो अनेक बाधाएँ आने पर भी धैर्य के साथ आगे बढ़ते जाते हैं। जीवन में सफलता चाहते हैं तो पुन:-पुन: अभ्यास करते रहिये। विश्वास रखिये शक्ति प्रकट होगी ही और सफलता मिलेगी ही।

अधिकांश साधकों को सफलता न मिलने का एक कारण यह भी है कि वे साधनाएँ तो करते हैं, पर साथ ही साथ विषयों में रस लेते रहते हैं और दुर्गुण, दुराचार, दुर्व्यसनों को भी नहीं छोड़ते। किंतु यह खयाल रखना चाहिये कि यह उनमें एकनिष्ठा की कमी है। ईश्वर, गुरु और शास्त्र में एकनिष्ठा होने पर ये दोष रह ही नहीं सकते और इन दोषों के रहते साधना की सफलता सम्भव नहीं है। अतएव इन काम-क्रोधादि दोषों को दूर करके साधन में प्रयत्नशील होना परम आवश्यक है। हमारे अन्दर अनंत संभावनाएँ हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हम नहीं कर सकते।

सद्गुरुदेव ने अपने प्रवचन में कहा है कि मनुष्य के अन्दर अनंत सम्भावनाएँ हैं जरूरत है उसे पहचानने की एवं उसको जगाने की। एक कैसेट के प्रवचन में उन्होंने कहा है कि पीली कोठी मुरादाबाद से काठगोदाम जाते वक्त सद्गुगुरुदेव बग्घी में बैठे थे और बग्घी के साथ उनके साथ भेजा गया आदमी दौड़ रहा था और वहाँ पहुँचने पर घोड़ा हांफ रहा था परन्तु उस आदमी को थकान नहीं हुई थी। इसी प्रकार हमारे अन्दर भी अनंत शक्ति भरी पड़ी है। आवश्यकता है गुरु से निर्देशन प्राप्त कर दृढ़निश्चय के साथ अभ्यास में लगें रहने की। अभ्यास, दृढ़निश्चय एवं विश्वास से साधक पूर्णत्व प्राप्त कर सकता है।

किसी महापुरुष ने कहा है–

अभ्यासेन क्रिया: सर्वा अभ्यासात् सकला: कला:।
अभ्यासाद् ध्यानमौनादि किमभ्यासस्य दुष्करम्।।

अर्थात् सब कार्यों की सिद्धि अभ्यास के द्वारा ही होती है। समस्त कलाओं की साधना भी अभ्यास के द्वारा ही होती है। ध्यान, मौन आदि आत्मोत्थान भी अभ्यास के द्वारा ही सिद्ध होता है। अभ्यास करने वाले के लिये कोई भी काम कठिन नहीं है। कठिन काम भी अभ्यास के द्वारा सुगम हो जाते हैं। इसलिये आत्मविश्वास के साथ, हतोत्साह हुए बिना, अभ्यास को चालू रखिये, सफलता की प्राप्ति निस्संदेह है। अंग्रेजी में कहावत है कि Practice makes a man perfect अभ्यास से मनुष्य पूर्णत्व प्राप्त करता है।

जलमभ्यासयोगेन शैलानां कुरुते क्षयम्।
कर्कशानां मृदुस्पर्श किमभ्यासान्न साध्यते।।

अभ्यास के सहयोग से कोमल-स्पर्शी जल कठोर पर्वतों का क्षय कर देता है। अभ्यास से किस वस्तु की सिद्धि नहीं होती।

नीतिज्ञों ने कहा है कि अधम पुरुष वे हैं, जो कार्य को कठिन समझकर उसको करने के लिए प्रवृत्त ही नहीं होते, मध्यम वे हैं जो साहस के साथ कार्य को प्रारम्भ तो कर देते हैं पर विशेष कठिनाई आने पर रुक जाते हैं और उत्तम वे है जो मार्ग में बाधाएं आने पर भी बाधाओं से संघर्ष करते हुये धैर्य के साथ आगे बढ़ते ही जाते हैं।

अत: आप स्वयं विचार करें कि आपको क्या बनना है? जीवन में सफलता चाहते हैं तो पुन:-पुन: अभ्यास करते रहें, साधना में सफलता के लिए आवश्यक है श्रद्धा, विश्वास, दृढ़निश्चय के साथ अभ्यास और विकारों पर संयम के साथ ही अन्तर्मन का पवित्र होना। विश्वास रखिये शक्ति अवश्य प्रकट होगी और सफलता भी अवश्य मिलेगी।

▪ **राजेश गुप्ता 'निखिल'**

मेष – सप्ताह की प्रारम्भ की तारीख अनुकूल है। परन्तु बाद में छोटी-सी बात पर झगड़ा हो सकता है। कोर्ट-कचहरी में उलझ सकते है।। विद्यार्थियों को पढ़ाई में सफलता मिलेगी। दूसरे सप्ताह में फिजूल की बातों पर ध्यान न दें। परिवार का विशेष ख्याल रखें। लड़की की शादी का समय शुभ है। माह के मध्य में आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। कोई भी काम सोच-समझकर करें, अन्यथा बाद में पछताना पड़ सकता है। लालच में आकर दूसरों की परेशानियों को गले न लगायें। मार्ग में कठिनाइयों के बाद में सफलता पालेंगे। बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त होगा, नौकरीपेशा लोगों को नौकरी में टेंशन रहेगी। गुस्से पर काबू रखें। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। कुछ विपरीत परिस्थियां परेशान करेंगी। **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1,7,8,9,16,17,26,27,28

वृष –प्रारम्भ सुखद रहेगा। व्यवसाय में सफलता मिलेगी। शत्रुओं को जवाब देने में सक्षम रहेंगे। सूझबूझ से समस्यायें सुलझा लेंगे। परिवार में शांति रहेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। कार्यों को दूसरों के भरोसे न छोड़ें। क्रोध पर संयम रखें। अपनों का सहयोग नहीं मिलेगा। आप मित्रों का सहयोग करेंगे। बेटी की सगाई हो सकती है। माह के मध्य में मुसीबतें आ सकती हैं। किसी के दबाव में आकर कोई कार्य न करें। आलस्य से दूर रहें। लोगों का विश्वास अपने प्रति बनाये रखें। विद्यार्थियों को वांछित सफलता प्राप्त होगी। रुके हुये रुपयों की प्राप्ति होगी। परिवार में प्रेम बना रहेगा। प्रॉपर्टी के कार्य में लाभ होगा। दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप न करें। इस माह आप **गुरु एकाकार दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1,2,3,9,10,11,20,21,28,29,30

मिथुन – माह प्रारम्भ शुभ नहीं है। अचानक कोई आपत्ति नुकसान पहुंचा सकती है। सही कार्यों का परिणाम भी उल्टा मिलेगा। शत्रु वर्ग से सावधान रहें। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। पड़ोसी से अनबन हो सकती है। सरकारी कर्मचारियों का प्रमोशन का अवसर है। किसी के बहकावे में न आयें। मान-प्रतिष्ठा को ठेस पहुंच सकती है। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। दोस्तों से मतभेद हो सकते हैं। जमीन-जायदाद के सम्बन्ध में झगड़े की सम्भावना है। आवेश में न आकर शांति से काम लें। राह चलते किसी से वाद-विवाद की स्थिति में संयम बरतें। यात्रा से बचें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। माह की आखिरी तारीखों में व्यापार में सफलता मिलेगी, लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे। आप भाग्य बाधा **दोष निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 3,4,5,11,12,13,21,22,23

कर्क – माह के प्रारम्भ में सावधान रहने की आवश्यकता है। वाहन धीमी गति से चलायें। जमीन के सौदे से बचें। अपने महत्वपूर्ण दस्तावेजों को किसी और को न सौंपें एवं स्वास्थ्य का ख्याल रखें। यात्रा हो सकती है। विद्यार्थियों के सफलता के अवसर हैं। आप बुद्धि, विवेक से परेशानियों से छुटकारा पा लेंगे। उधारी के रुपये प्राप्त नहीं होंगे। आय के स्रोत खुलेंगे। जीवनसाथी से मधुरता रहेगी। आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। रोजगार के अवसर मिलेंगे। पुरानी बातों को याद न करें, मधुरता का व्यवहार रखें। रुपयों की आवक बढ़ेगी। दूसरों के ताने सुनने पड़ सकते हैं। कोई छोटी-सी बात से विवाद हो सकता है। आप इस माह **भाग्योदय दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 5,6,7,14,15,16,24,25,26

सिंह – माह का प्रारम्भ लाभप्रद है। सफलता प्राप्त होगी। परिवार में सहमति का वातावरण रहेगा। धर्म कार्यों में रुचि रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। वाहन की खरीददारी हो सकती है। दूसरे सप्ताह के निर्णय गलत हो सकते हैं। शत्रु पक्ष हावी रहेगा।आप जिसका भला करेंगें, वही प्रहार करेगा। व्यापार में नुकसान हो सकता है। सोच-विचार कर निर्णय लें। स्वास्थ्य में सुधार होगा। दाम्पत्य जीवनसुखमय रहेगा। महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं ही करें। सोचे कार्य पूर्ण होंगे। तीसरे सप्ताह में विपक्ष हावी रहेगा। रुकावटें महसूस करेंगे। आखिरी सप्ताह में कार्यों में सफलता मिलेगी। तीर्थ स्थान एवं महात्माओं के दर्शन होंगे। संतान का सहयोग मिलेगा। माह की अन्तिम तारीख परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। मन में अस्थिरता रहेगी। आप **मनः शान्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1,7,8,9,16,17,18,26,27,28

कन्या – प्रारम्भ शुभकारी होगा। परिणाम आपके पक्ष में होंगे। भाइयों के साथ प्रेमभाव रहेगा। नये वाहन का सुख प्राप्त होगा। धार्मिकता का प्रभाव जीवन पर रहेगा। स्वास्य ठीक नहीं रहेगा। बेकार के कार्यों में समय व्यतीत होगा। शत्रुओं से सावधान रहें। जिसका भला करेंगे, वही प्रहार करेगा। दूसरा सप्ताह लाभप्रद है।

विद्यार्थियों को मिले अनुबंध भविष्य में लाभ देंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। गरीबों की सहायता करेंगे। माह के मध्य में सोच-समझ कर निर्णय लें। किसी और के कारनामे आप पर थोपे जा सकते हैं। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। कोई अपना ही प्रगति में रुकावट बनेगा। आप किये गये वादों को निभाने में सफल होंगे। भागीदारी व्यापार करने में लाभ मिलेगा। आप **कायाकल्प दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 9, 10, 11, 19, 20, 21, 28, 29

तुला - माह का प्रारम्भ शुभ है। जायदाद के मामले निपट जायेंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय उत्तम है। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। जीवनसाथी के साथ मतभेद समाप्त होंगे। सिर्फ क्रोध पर नियंत्रण रखें। दूसरे सप्ताह में अचानक कोई घटना आपको परेशान कर सकती है। नौकरीपेशा लोगों को विवाद का सामना करना पड़ सकता है। उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा, मित्रों का सहयोग मिलेगा। माह के मध्य के कुछ दिन पक्ष में न होने से सोच-विचार कर कोई कार्य करें। गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें। भाइयों से मतभेद होंगे। किसी व्यक्ति से मुलाकात भविष्य में लाभ पहुंचायेगी। पड़ोसी से वाद-विवाद से बचें। गलतफहमी के कारण गृहस्थ में तनाव हो सकता है। अचानक धनप्राप्ति संभव है। **गृहस्थ सुख दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 11, 12, 13, 21, 22, 23, 31

वृश्चिक - प्रथम सप्ताह में सचेत रहें। किसी को उधार न दें। कोई भी कार्य करने से पूर्व सोच-समझकर निर्णय लें। कठिनाइयां दूर होंगी। व्यापार में वृद्धि होगी। गरीबों की सहायता करेंगे। स्वयं भी ऋण न लें। किसी के बहकावे में न आकर स्वयं के विवेक से कार्य करें। अपनी सामर्थ्य पर भरोसा करें। अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। कोई महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। विदेश यात्रा के योग हैं। किसी से वाद-विवाद हो सकता है। अधिक लालच में न पड़ें। मानहानि उठानी पड़ सकती है। किसी भी कार्य में स्वयं निर्णय करें, अच्छे समय का सदुपयोग करें, किसी के बहकावे में न आये। जीवनसाथी से मधुरता का भाव बना रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। **मां दुर्गा की साधना** करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 16, 24, 25, 26

धनु - प्रथम सप्ताह लाभ देगा। रुचिकर लोगों का साथ मिलेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। प्यार में सफलता मिलेगी। क्रोध पर नियंत्रण रखें। कोई टेंशन की बात हो सकती है। आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। अदालतों के चक्कर काटने से मुक्ति मिलेगी। अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। दूसरे सप्ताह में कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। कार्यों में रुकावट आ सकती है। आप को भाइयों का सहयोग मिलेगा, लक्ष्य के प्रति वचनबद्ध रहेंगे। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। धनप्राप्ति हो सकती है, किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कोई छिपी बात उजागर होने पर प्रतिष्ठा खराब हो सकती है। कर्मचारी वर्ग का वांछित स्थानान्तरण सम्भव है। विरोधियों से सावधान रहें। **बगलामुखी मंत्र साधना** करें या दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 7, 8, 9, 16, 17, 18, 26, 27, 28

मकर - माह का प्रारम्भ सुखद रहेगा। जमीन का सौदा हो सकता है। राजनीति में वर्चस्व बढ़ेगा। इस समय का निर्णय फाइनल होगा। कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। किसी की गलतफहमी से, गृहस्थ में तनाव हो सकता है। नया वाहन इस समय खरीदने से बचें। कोई जोखिमपूर्ण कार्य न करें। प्रॉपर्टी के कार्य में लाभ होगा। गलत कार्यों से दूर रहें। वाहन धीमी गति से चलायें। बिना वजह किसी से उलझें नहीं। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी, मित्रों से सहयोग नहीं मिलेगा। धीरे-धीरे आय के साधन बढ़ेंगे। समस्याओं को सुलझाने में सफल होंगे। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि लेगा। सभी पर अत्यधिक विश्वास न करें। जैसा सोचेंगे, वैसे परिणाम मिलेंगे। संतान के प्रति चिंता दूर होगी। आप इस माह **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 9, 10, 20, 21, 29, 30

कुम्भ - सप्ताह का प्रारम्भ कष्टकारी रहेगा। दूसरों का भ्ला करने पर भी विपरीत परिणाम मिलेगा। कोई भी कार्य सोच-विचार कर ही करें। रुके हुए रुपये प्राप्त होंगे। कर्मचारी वर्ग का ट्रांसफर मनचाहे स्थान पर हो सकता है। मित्रों से मतभेद सम्भव है। परिवार में अशांति होगी। आवेश में न आयें, झगड़े की स्थिति हो सकती है। कोई आप को धोखा भी दे सकता है। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा है। कोई छिपी बात उजागर हो सकती है। वाहन चालन में सतर्कता बरतें।अनावश्यक खर्च से बचें। परिवार से सहयोग होगा, किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व सोच-विचार करें। कुछ गलत तरीके से भी पैसा आयेगा परन्तु सतर्क रहें। आप **नवग्रह मुद्रिका धारण** करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 11, 12,13, 21, 22, 23, 31

मीन - इस माह का प्रारम्भ उतार-चढ़ाव पूर्ण होगा। लाभ और हानि का प्रतिशत बराबर का रहेगा। विरोधियों से सावधान रहें। हर किसी पर विश्वास न करें, क्रोध पर नियंत्रण रखें। विद्यार्थियों के लिए समय सफलतादायक है। कोई प्रोजेक्ट सफल होने की संभावना है। शारीरिक कष्ट एवं चिंताएं घेरेंगी। आर्थिक कठिनाई हो सकती है। अचानक किसी सज्जन पुरुष से मुलाकात सहयोग प्रदान करेगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। मानसिक परेशानी हो सकती है। धार्मिक कार्यों में झुकाव रहेगा। विदेश यात्रा का योग है। पैसा उधार न देवें, जीवनसाथी के प्रति प्रेम का बर्ताव जीवन में मिठास लायेगा। कोई महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। **सर्वबाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 16, 24, 25, 26

सर्वार्थ सिद्धि योग - दिसम्बर-5, 12, 14, 18, 26, 31
रवि योग - दिसम्बर-7, 9, 12, 13, 17, 18, 25
अमृत सिद्धि योग - दिसम्बर-14, 18

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

04.12.21	शनिवार	शनिश्चरी अमावस्या
06.12.21	सोमवार	सिद्धेश्वरी दिवस
08.12.21	बुधवार	श्री पंचमी/श्रीराम जानकी विवाहोत्सव
10.12.21	शुक्रवार	पद्मावती सिद्धि दिवस
14.12.21	मंगलवार	मोक्षदा एकादशी
16.12.21	गुरुवार	अनंग त्रयोदशी
18.12.21	शनिवार	त्रिपुर भैरवी जयंती
30.12.21	गुरुवार	सफला एकादशी

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (दिसम्बर-5, 12, 19, 26)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (दिसम्बर-6, 13, 20, 27)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (दिसम्बर-7, 14, 21, 28)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (दिसम्बर-1, 8, 15, 22, 29)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरूवार (दिसम्बर-2, 9, 16, 23, 30)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (दिसम्बर-3, 10, 17, 24, 31)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (दिसम्बर-4, 11, 18, 25)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक
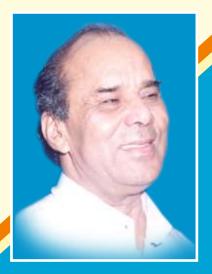
यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

दिसम्बर -21

11. ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
12. भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें, 3 प्रदक्षिणा करें।
13. आज पारद शिवलिंग पर ॐ नमः शिवाय बोलते हुए जल चढ़ायें।
14. आज भगवद् गीता के 5 श्लोक का हिन्दी सहित पाठ करें।
15. प्रातः पूजन में दूध से बने प्रसाद का भोग लगाकर बांट दें।
16. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-
    ॐ ऐं आरोग्याय ऐं नमः।
17. किसी असहाय को भोजन करायें।
18. आज त्रिपुर भैरवी जयंती है, साधना सम्पन्न करें।
19. आज स्नान करके पूजन के बाद अन्न दान करें।
20. आज किसी शिव मन्दिर में दर्शन करके दिन का शुभारम्भ करें।
21. सद्गुरु जन्म दिवस पर निखिल स्तवन का पाठ करें।
22. ॐ गं गणपतये नमः मंत्र का जप करके बाहर जाएं।
23. आज केले के पेड़ में या पीपल में एक लोटा जल चढ़ायें।
24. सुबह 'क्लीं' मंत्र का 108 बार उच्चारण करके जाएं।
25. शनि मुद्रिका (न्यौ. 150/-) धारण करें, शनि कृपा प्राप्त होगी।
26. आज जल में पीले पुष्प डालकर भगवान सूर्य को जल अर्पित करें।
27. ॐ ह्रीं ॐ का 51 बार उच्चारण करके जाएं।
28. हनुमान चालीसा का 1 पाठ करके जाएं।
29. पत्रिका में प्रकाशित लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें।
30. आज व्रत करें एवं यथाशक्ति असहायों को दान दें।
31. आज के दिन अपने वस्त्रों में पीले रंग की प्रधानता रखें।

जनवरी-22

1. किसी शिव मन्दिर में जल से अभिषेक करें एवं शिव मंत्र का जप करें।
2. भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें एवं नववर्ष पर रोग रहित जीवन की प्रार्थना करें।
3. शिव महिम्न स्तोत्र की सी.डी. का श्रवण करें।
4. हनुमान बाहु (न्यौ. 90) धारण करें, बाधाएं समाप्त होंगी।
5. सिद्धि गुटिका (न्यौ. 150/-) जेब में रखकर जाएं कार्यों में सफलता मिलेगी।
6. दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करके जाएं।
7. पक्षियों को दाना डालें।
8. काली मिर्च के कुछ दाने अपने ऊपर से 7 बार घूमाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें, बचाव होगा।
9. गायत्री मंत्र की एक माला जप करकें जाएं।
10. आज 108 बार ॐ नमः शिवाय का मंत्र जप करके जाएं।

पुत्रदा एकादशी

13.01.22

यह एकादशी पुत्र-प्रदायका और पापनाशिनी होती है। अतः इस दिन पति-पत्नी दोनों को एक साथ संकल्प लेकर इस पुत्रदा प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

ऐसे दम्पत्ति की पीड़ा वही समझ सकता है जिसके संतान न हो। समाज भी उन्हें हेय दृष्टि से देखने लगता है और शब्दों से व्यंग कर उन्हें प्रताड़ित करता है।

ऐसे दम्पत्ति किसी भी प्रकार का उपाय आजमाने के लिए तैयार रहते हैं फिर चाहे वह उपाय खर्चीला ही क्यों न हो। उन दम्पत्तियों के लिए यह प्रयोग अन्धेरे में दीपक के समान है जिससे उनके घर में खुशहाली आ सकती है और उनके आंगन में बच्चे की किलकारी गूंज सकती है।

संतान प्राप्ति प्रयोग

जिस प्रकार से विज्ञान नित्य नयी विधियाँ और नयी खोज करता रहता है, ज्ञान या साधना का भी यही मार्ग है, और पिछले कुछ वर्षों से सिद्धाश्रम के योगियों ने उन विधियों की ओर ज्यादा ध्यान दिया है, जिसके द्वारा आम व्यक्ति का कल्याण हो सके, समाज के पीड़ित व्यक्तियों का उद्धार हो सके, और लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता व्याप्त हो सके।

इन्हीं उपायों में एक उपाय है, यह 'संतानप्राप्ति प्रयोग' जो कि अपने आप में अद्वितीय और आश्चर्यजनक है। 'परशुराम कल्प' में पुत्र से संबंधित कुछ सूत्र लिखे हुए थे, यद्यपि यह पुस्तक अप्राप्य थी, पर इसकी हस्तलिखित प्रति एक दो योगियों के पास सुरक्षित थी, यद्यपि यह प्रयोग महत्वपूर्ण था परन्तु परशुराम कल्प में सूत्र इतने जटिल और दुर्बोध थे कि उनको सुलझाना कठिन सा लग रहा था।

पर कुछ विशिष्ट योगियों ने हिम्मत नहीं हारी,क्योंकि यह कार्य समाज के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण था, क्योंकि ऐसे प्रयोगों से संसार का बहुत बड़ा भाग जो सुख से वंचित था, उनके चेहरों पर मुस्कराहट लाई जा सकती थी। तब वे योगी आगे आये, और उन सूत्रों को स्पष्ट करने का प्रयास किया, और प्रसन्नता की बात यह है कि उन्होंने 'परशुराम कल्प' में दिये गये सूत्रों की व्याख्या प्रामाणिकता के साथ सम्पन्न कर दी।

और फिर उन्होंने स्त्रियों पर प्रयोग किये, और सकारात्मक परिणाम देख कर उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ।

योगीराज के शब्दों में अधिकांश लोगों को इस प्रयोग से लाभ हुआ है, उनकी सूनी गोद हरी हुई है, जिनके बीस साल से भी ज्यादा समय तक संतान नहीं हुई, उस पर भी ऐसा प्रयोग सम्पन्न करने पर सफलता अनुभव हुई है।

पर जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूँ कि ऐसे दम्पत्ति बिना खर्च की परवाह किये, किसी भी औषधि या प्रयोग को आजमाने से वंचित नहीं रहना चाहते, कभी-कभी हजारों रुपये खर्च करने पर जो काम सम्पन्न नहीं हो पाता, वह एक छोटी-सी औषधि या छोटे से प्रयोग से सम्पन्न हो जाता है।

परशुराम कल्प में बताया गया है, कि ऐसे दम्पत्तियों को बिना हिचकिचाहट के गुरु की शरण में जाना चाहिए और अपनी समस्या को उनके सामने स्पष्ट करना चाहिए।

परशुराम कल्प में साधना के बल पर संतान प्राप्ति का प्रयोग दिया है और उसमें बताया है, कि यदि निष्ठापूर्वक धैर्यपूर्वक और श्रद्धापूर्वक इस प्रयोग को सम्पन्न करें तो उस दम्पत्ति के घर में संतान उत्पन्न हो सकती है और उसके जीवन में अनुकूलता प्राप्त हो सकती है।

इससे सम्बन्धित जो प्रयोग हमें प्राप्त हुआ है, उस प्रयोग को आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूँ, कोई भी साधक या कोई भी व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, यदि वह इस एकादशी अर्थात् 13.01.22 के दिन यह प्रयोग सम्पन्न करता है, तो ज्यादा उचित होगा, पर यदि किसी कारणवश इस तारीख को वह प्रयोग सम्पन्न न कर सके तो किसी भी पुष्य नक्षत्र के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है।

पुत्रदा प्रयोग

इस प्रयोग को पति और पत्नी दोनों को सम्पन्न करना चाहिए, पर इसमें यह स्पष्ट किया है, कि यदि किसी कारणवश पति यह प्रयोग सम्पन्न न कर सके, तो केवल पत्नी ही इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकती है या केवल पति भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, यह आवश्यक नहीं है कि दोनों एक साथ इस प्रयोग को सम्पन्न करें, पर ज्यादा उचित यही रहेगा कि दोनों मिल कर इसी प्रयोग को सम्पन्न करें।

साधना सामग्री

इस प्रयोग में कुल आठ वस्तुओं की जरूरत होती है-1. जल पात्र, 2. पुष्प, 3. नारियल, 4. त्रिगंध, 5. पुत्रदा यंत्र, 6. पुत्रजीवा माला, 7. शुद्ध घृत और 8. पांच मधुरूपेण रुद्राक्ष।

इसके अलावा साधना सामग्री में अन्य किसी वस्तु की जरूरत नहीं होती इसमें जो सामग्री आपके पास उपलब्ध न हो, वह पहले से ही मंगवा कर रख देनी चाहिए, जिससे कि समय पर इसका उपयोग किया जा सके। योगीराज के अनुसार 'पुत्रदा यंत्र' और 'पुत्रजीवा' माला परशुराम कल्प के अनुसार ही मंत्र सिद्ध हों। पूज्य गुरुदेव ने सम्बन्धित सामग्री विशेष पण्डितों से मंत्र सिद्ध करवाई है, जिसका प्रयोग साधक चाहे, तो अपने विवेक पर इसको प्राप्त कर उपयोग कर सकते हैं।

संतानहीन पति-पत्नी दोनों को चाहिए कि वे प्रात:काल उठकर स्नान करें, पति पीली धोती धारण करे, और चाहे तो ऊपर शरीर पर भी पीली धोती ओढ़ सकता है, स्त्री को चाहिए कि वह पीली साड़ी पहने और फिर दोनों आंगन में खड़े होकर पूर्व की ओर मुंह कर भगवान सूर्य को सात बार अर्घ्य दें अर्थात् सात बार थोड़ा-थोड़ा जल लोटे से जमीन पर गिरायें और फिर गिरे हुए जल की सात बार प्रदक्षिणा करें और भगवान सूर्य से प्रार्थना करें कि वह उन्हें उत्तम कोटि का पुत्र प्रदान करने में सहायक हों।

इसके बाद पति-पत्नी पूजा स्थान में या अन्य किसी कमरे में पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जायें, और सामने एक पात्र में त्रिगंध से स्वास्तिक का चिह्न बना कर उस पर पुत्रदा यंत्र को स्थापित कर दें, यंत्र के पीछे एक ही क्रम से पांच मधुरूपेण रुद्राक्ष स्थापित कर दें जो पांचों प्रकार के दोषों को दूर करने में सहायक माने जाते हैं, ये पाँच प्रकार के दोष हैं–1. शारीरिक दोष, 2. दैविक दोष, 3. भौतिक दोष, 4. पितृ दोष, और पूर्वजन्म कृत दोष।

फिर त्रिगंध से उन पाँचों रुद्राक्षों पर तिलक करें और प्रार्थना करे कि यदि हम दोनों पति-पत्नी से जाने-अनजाने कोई भूल या दोष हो गया हो तो भगवान सदाशिव क्षमा करें और हमें दोष मुक्त करें।

इसके बाद जो सामने **पुत्रदा यंत्र** रखा हुआ है, उस यंत्र पर त्रिगंध से तिलक करें और नारियल पर तिलक कर उसे सामने रख दें, तथा यंत्र के चारों ओर **पुत्र जीवा माला** रख दें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र अमुक नाम का व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ पुत्रदा प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ, और मुझे एक वर्ष के भीतर-भीतर शुभ लक्षणों से युक्त पुत्र प्राप्त हो।

इसके बाद निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें–इसमें चाहे तो पत्नी ही मंत्र जप करे, अथवा दोनों पति-पत्नी पांच बार मालाएं मंत्र जप कर सकते हैं, यह मंत्र जप पुत्र **जीवा माला** से सम्पन्न करें।

पुत्रदा मंत्र
ॐ ऐं ऐं पुत्र दातव्यै ऐं ऐं नम:

मंत्र जप के बाद वहीं पर किसी पात्र में या तांबे के कुण्ड में अग्नि जला कर शुद्ध घृत से उपरोक्त मंत्र से ही 101 आहुतियाँ दें, इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है।

इसके बाद आगे के तीन रविवार के दिनों में भी इस प्रकार का प्रयोग मंत्र जप और 101 आहुतियाँ दें, अर्थात् कुल चार बार यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, पहली बार तो 13.01.22 को हो जायेगा, उसके बाद अगले तीन रविवार को भी पति-पत्नी या केवल पति या पत्नी इसी प्रकार से प्रयोग सम्पन्न करें।

अंतिम रविवार पर प्रयोग सम्पन्न करने के बाद उस नारियल को तोड़ कर उसकी गिरी थोड़ी-थोड़ी दोनों पति-पत्नी खा लें, और शेष नारियल, पांचों रुद्राक्ष, पुत्रदा यंत्र और पुत्र जीवा माला किसी नदी, तालाब में विसर्जित कर दें अथवा यह संभव न हो तो किसी मंदिर में रख दें।

इसके बाद यदि पत्नी के लिये सुविधाजनक हो तो आगे के ग्यारह रविवार व्रत रखें, और प्रत्येक रविवार को भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर उनसे इस प्रयोग में सफलता हेतु प्रार्थना करें। इन रविवारों में पूजा या मंत्र जाप करने की जरूरत नहीं है, केवल एक समय भोजन करें, इसके अलावा चाय या दूध-फल आदि ले सकती है।

उपरोक्त प्रयोग भले ही छोटा-सा सामान्य अनुभव हो रहा हो, परन्तु यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है और इससे संबंधित यह श्रेष्ठ प्रयोग है।

यदि श्रद्धापूर्वक विश्वास के साथ इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है, तो जल्दी से जल्दी उनके जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है, और उनके आंगन में एक बच्चा थिरकता दिखाई देगा।

परशुराम कल्प के अनुसार यदि किसी दम्पत्ति को केवल पुत्रियाँ ही हो रही हों, या संतान पैदा होकर के मर जाती हों तो उसके लिये भी यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, यों अपने पुत्र-पौत्र की दीर्घायु और अकाल मृत्यु निवारण के लिए भी यह प्रयोग संतान वाले पति-पत्नी कर सकते हैं।

बाद में इस प्रयोग से प्राप्त लाभ लिख कर गुरुधाम जोधपुर के पते पर अवश्य भेजें।

साधना सामग्री- 660/-

14.12.21
या किसी भी मंगलवार

जिस साधना को सम्पन्न कर

अर्जुन ने सर्वत्र विजय प्राप्त की

और

धन, ऐश्वर्य एवं सुख की प्राप्ति की

जीवन का अर्थ है—समस्या, परेशानी, संघर्ष और हर क्षण एक भय, न जाने किस क्षण कौन सी विपदा आ खड़ी हो जहाँ सुख, प्रसन्नता पलक झपकते ओझल होते देर नहीं लगती और साधक का अर्थ है उन समस्त समस्याओं से जूझ जाना, प्रत्येक भय को समाप्त कर उस पर विजय प्राप्त करना। यह सब लक्षण प्रकट होते हैं मात्र हनुमान के साधक में, क्योंकि हनुमान ही ऐसे देव हैं, जिनमें अदम्य बल, साहस, बुद्धि, कर्मठता, तेजस्विता, तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता और संकटों पर विजय प्राप्त कर लेने का साहस है। ऐसा समन्वय यदि किसी में है तो हनुमान में ही है।

हनुमान साधना सम्पन्न करना वास्तव में साधक के लिए समस्त आपदाओं के समक्ष वज्र के समान खड़े हो जाने की प्रक्रिया है, जिससे समस्यायें टकरा कर वापस लौट जाएं। इसलिए यह साधना कोई साधारण प्रयोग मात्र नहीं है। महाभारत में स्वयं कृष्ण ने अर्जुन से कहा, कि अर्जुन! यदि तुम्हें महाभारत में विजय प्राप्त करनी है और राज्य, धन, वैभव, यश, प्रतिष्ठा प्राप्त करनी है तो तुम्हें हनुमान साधना सम्पन्न करनी ही पड़ेगी। अपने अन्दर उनके बल को, उनके त्वरित निर्णय लेने की क्षमता को, उनकी बुद्धि, उनके साहस को आत्मसात करना पड़ेगा। तभी तुम अपने लक्ष्य में सफल हो सकोगे और जब अर्जुन ने यह साधना सम्पन्न की तो वह फिर अपने सम्पूर्ण जीवन में कभी समस्याओं से नहीं डगमगाए, फिर वह कभी भी पराजित नहीं हुए और इसका रहस्य था कि कृष्ण ने, स्वयं जगद्गुरु ने, उसको अपना शिष्य बनाकर, उसे दीक्षा प्रदान की और उसे पूर्ण विधि विधान से साधना सम्पन्न कराई।

इस साधना के फलस्वरूप फिर अर्जुन ने सम्पूर्ण महाभारत युद्ध लड़ा और अनेक बड़े-बड़े दिग्गजों से, भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण आदि से युद्ध किया और सब पर उसने विजय प्राप्त की।

हनुमान साधना का रहस्य ही यही है, कि इसे सम्पन्न कर साधक में भी वह समस्त गुण आ जाते हैं जो हनुमान के पास थे। यदि साधक पूर्ण एकाग्रता, पूर्ण निष्ठा, पूर्ण विश्वास के साथ मंत्र जप करता है, तो हनुमान स्वतः प्रत्यक्ष होकर साधक की अभीष्ट पूर्ति करते ही हैं। परन्तु इसके लिए एकाग्रता एवं समर्पण

की आवश्यकता है।

और फिर वर्तमान युग के लिए यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधना है, जब जीवन में संघर्ष, समस्याएं, कठिनाइयां, उलझन, तनाव ही हैं। यह साधना वास्तव में जीवन को पूर्ण रूप से जीने की साधना है। कायरता, डर, भययुक्त जीवन, जीवन नहीं कहलाता और दुर्बल मनुष्य तो आज के समाज में कहीं स्थापित ही नहीं हो सकता। ऐसे ही मनुष्यों के लिए यह साधना है।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए कुछ विशेष सावधानियां बरतनी चाहिए।

1. साधक लाल वस्त्र, लाल पुष्प तथा लाल आसन का ही प्रयोग करें।
2. यह साधना दक्षिणाभिमुख होकर करें।
3. इस साधना को साधक प्रात:, सायं या रात्रि को कभी भी सम्पन्न कर सकता है।
4. साधना काल में ब्रह्मचर्य का पालन करें।
5. साधक साधना स्थल पर ही शयन करें।

हनुमान जितने सरल प्रकृति के हैं, क्रोध में आने पर उतने ही उग्र हो जाते हैं, इसलिए यदि साधक साधना काल में अत्यधिक क्रोध में रहने लगता है तो परेशान नहीं होना चाहिए अपितु गुरु मंत्र का जप कर लेना चाहिए।

साधकों के लिए तो यह सिद्धियों का द्वार खोलने की साधना है। हनुमान स्वयं कभी किसी के समक्ष पराजित नहीं हुए, अपितु कितनी भी विपरीत स्थिति हुई, उसमें भी वे अपनी चातुर्यता से विजयी ही हुए हैं और साधकों में भी यही गुण (उनकी श्रेष्ठता का गुण) होना चाहिए, कि कैसी भी समस्या हो, कैसी भी परिस्थितियां हों, अपने पुरुषार्थ से, अपने बल, चातुर्य से विपरीत स्थितियों में सफलता प्राप्त करे ही।

हनुमान का एक प्रमुख गुण था, कि उन्हें अपने इष्ट, अपने गुरु में अखंड विश्वास था, कि उनके इष्ट उनके साथ हैं, इस कारण वे प्रत्येक कार्य करने को उद्यत रहते थे, चाहे वह लंका तक पहुंचना हो, समुद्र को पार करना हो या फिर लक्ष्मण के लिए जड़ी-बूटियों का पूरा पहाड़ लाना हो। यदि साधक साधना के प्रति पूर्ण विश्वास तथा साधना में सफलता प्राप्ति का विश्वास तथा अपने गुरु के प्रति पूर्ण विश्वास युक्त होकर इस साधना में प्रवृत्त होता है तो यह सम्भव ही नहीं, कि वह सफलता प्राप्त न करे। हनुमान साधना का मूल उत्स तो यही है।

साधना विधि

- इस साधना में आवश्यक सामग्री **'हनुमान यंत्र', 'लाल हकीक माला'**।
- इस साधना को आप दिनांक 1412.21 को या फिर किसी भी मंगलवार को सम्पन्न करें।
- साधक स्नानादि कर, पूजा स्थान को स्वच्छ कर लें, साधना हेतु लाल वस्त्र ही धारण करें तथा बैठने के लिए लाल आसन का उपयोग करें।
- अपने सामने लाल कपड़ा बिछा कर, एक पात्र में कुंकुम से हुनमान मंत्र लिखकर 'हनुमान यंत्र' को स्थापित कर दें।
- यंत्र का पूजन सिन्दूर, अक्षत, पुष्प से करें, यंत्र के सामने तेल का दीप लगा दें, अगरबत्ती लगा दें।
- फिर लाल हकीक माला को भी पुष्प की पंखुड़ियां रखकर स्थापित कर दें।

हनुमान का ध्यान करें

बालार्कयुत तेज संत्रिभुवन प्रक्षोभकं सुन्दरं।
सुगीवादि मस्तवान रगणै: संसेत्यपादाम्बुजम्।।
नादेनैव समस्तराक्षसगणान्संत्रासयन्तं प्रभुं।
श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायसामि वातात्मजम्।।

- फिर लाल **हकीक माला** से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। ॐ ह्रौं हस्हस्फ्रौं ह्रौं ॐ।।

OM HROUM HASHASPHROUM HROUM OM

- मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात साधक साधना स्थान पर ही सो जायें।
- अगले दिन यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

साधक जो भी कामना लेकर यह साधना सम्पन्न करेगा, उसमें उसे सफलता प्राप्त होगी ही।

न्यौछावर प्रयोग पैकेट- 450/-

शिवप्रोक्त श्रीरामशतनामस्तोत्र

शम्भुरुवाच

राघवं करुणाकरं भवनाशनं दुरितापहम्। माधवं खगगामिनं जलरूपिणं परमेश्वरम्।।
पालकं जनतारकं भवहारकं रिपुमारकम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
भूधवं वनमालिनं घनरूपिणं धरणीधरम्। श्रीहरिं त्रिगुणात्मकं तुलसीधवं मधुरस्वरम्।।
श्रीकरं शरणप्रदं मधुमारकं व्रजपालकम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
बिट्ठलं मथुरास्थितं रजकान्तकं गजमारकम्। सन्नुतं वकमारकं वृषघातकं तुरगार्दनम्।।
नन्दजं वसुदेवजं बलियज्ञगं सुरपालकम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
केशवं कपिवेष्ठितं कपिमारकं मृगमर्दिनम्। सुन्दरं द्विजपालकं दितिजार्दनं दनुजार्जनम्।।
बालकं खरमर्दिनं ऋषिपूजितं मुनिचिन्तितम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
शंकरं जलशायिनं कुशबालकं रथवाहनम्। सरयूनतं प्रियपुष्पकं प्रियभूसुरं लवबालकम्।।
श्रीधरं मधुसूदनं भरताग्रजं गरुडध्वजम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
गोप्रियं गुरुपुत्रदं वदतां वरं करुणानिधिम्। भक्तपं जनतोषदं सुरपूजितं श्रुतिभिः स्तुतम्।।
भुक्तिदं जनमुक्तिदं जनरञ्जनं नृपनन्दनम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
चिद्घनं चिरजीबिनं मण्मालिनं वरदोन्मुखम्। श्रीधरं धृतिदायकं बलवर्धनं गतिदायकम्।।
शान्तिदं जनतारकं शरधारिणं गजगामिनम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
शार्ङ्गिणं कमलाननं कमलादृशं पदपंकजम्। श्यामलं रविभासुरं शशिसौख्यदं करुणार्णवम्।।
सत्पतिं नृपपालकं नृपवन्दितं नृपतिप्रियम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।
निर्गुणं सगुणात्मकं नृपमण्डनं मतिवर्धनम्। अच्युतं पुरुषोत्तमं परमेष्ठिनं स्मितभाषिणम्।।
ईश्वरं हनुमन्नुतं कमलाधिपं जनसाक्षिणम्। त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम्।।

चिद्धन रूपधारी, चिरंजीवी, मणियों की माला धारण करने वाले, वरदोन्मुख (वरदानोन्मुख), श्रीधर, धैर्य प्रदान करने वाले, बल वर्धनकारी, गतिदायक, शान्तिदाता, जनतारक, शरधारी, गजगामी, नररूप धारण करने वाले जगदीश्वर रघुनन्दन! आपका मैं भजन करता हूँ।

श्री शिवजी ने कहा-रघुवंश में उत्पन्न, करुणा की खान, आवागन का अन्त करने वाले , पापनाशकारी, लक्ष्मी के पति, गरुडवाहन, जलरूप में स्थिति परमेश्वर, सबके पालक, भक्तों को तारने वाले, भवबाधा के नाशक, शत्रु संहारकारी, नर रूपधारी आप जगदीश्वर, रघुनन्दन को मैं प्रणाम करता हूँ। पृथ्वीपति, वनमालाधारी, नवीन नीरद के समान नीलकाय, पृथ्वी की रक्षा करने वाले श्री हरि, (विश्व की उत्पत्ति, पालन एवं संहार के लिये) सत्त्व, रज और तम-इन तीनों गुणों से युक्त, तुलसी के पति, मीठे स्वरवाले, शोभा का विस्तार करने वाले, शरणदाता, मधु नामक दैत्य को मारने वाले, व्रज के पालक, नर रूपधारी जगदीश्वर रघुनन्दन! आपका मैं भजन करता हूँ। **विट्ठल रूप से मधुरा में निवास करने वाले, (श्रीकृष्ण रूप में) रजक संहारी, गजान्तकारी, सज्जनों से संस्तुत, वकासुर, वृषासुर और केशी को मारने वाले, नन्दसूनु, वसुदेव के पुत्र, (वामन रूप से) बलि के यज्ञ में जाने वाले, देवताओं के पालक, नर रूपधारी जगदीश्वर रघुनन्दन!** आपका मैं भजन करता हूँ। केशव, वानरों से घिरे हुए, बाली नामके वानर को मारने वाले, मृग रूपधारी मारीच को मारने वाले, सुन्दर, ब्राह्मणों के रक्षक, दैत्यों और दानवों का संहार करने वाले, बाल रूपधारी, खर को मारने वाले, ऋषियों द्वारा पूजित, मुनियों द्वारा चिन्तित और नर रूपधारी हे जगदीश्वर रघुनन्दन! आपका मैं भजन करता हूँ। जो संसार का कल्याण करने वाले तथा (नारायण रूप से) जल में शयन करते हैं, जिनके कुश जैसे पराक्रमी बालक हैं, रथ जिनकी सवारी है, सरयू स्वयं जिनको नमस्कार करती है, जिनको पुष्पक विमान विशेष प्रिय है, जो ब्राह्मणों से बड़ा प्रेम करते हैं, लव नाम का जिनका दूसरा बालक (पुत्र) है, जो लक्ष्मी को अपने वक्ष में धारण करते हैं, जिन्होंने मधु नामक दैत्य का संहार किया था, जो भरत के बड़े भ्राता हैं और जिनकी ध्वजा में गरुड़ का चिह्न बना हुआ है, ऐसे नर रूपधारी जगदीश रघुनन्दन! आपका हम भजन करते हैं। जिनको गौ (विशेष) प्रिय है, श्रीकृष्ण रूप में जो यमलोक से गुरुपुत्र को लौटा लाये थे, जो वक्ताओं में श्रेष्ठ हैं, जो करुणा के समुद्र हैं, जो सब तरह से अपने भक्तों की रक्षा करते हैं, जो अपने भक्तों को संतुष्ट रखते हैं, देवतागण जिनकी पूजा करते हैं, चारों वेद जिनकी स्तुति करते हैं, जो सब प्रकार के भोग प्रदान करते हैं और जो अपने भक्तों को प्रसन्न रखते हैं तथा उन्हें मुक्ति प्रदान करते हैं, महाराज दशरथ के पुत्र, नर रूपधारी जगदीश्वर रघुनन्दन! आपका मैं भजन करता हूँ। चिद्धन रूपधारी, चिरंजीवी, मणियों की माला धारण करने वाले, वरदोन्मुख (वरदानोन्मुख), श्रीधर, धैर्य प्रदान करने वाले, बल वर्धनकारी, गतिदायक, शान्तिदाता, जनतारक, शरधारी, गजगामी, नररूप धारण करने वाले जगदीश्वर रघुनन्दन! आपका मैं भजन करता हूँ। विष्णु रूप से शारंग-धनुष धारण किये हुए, कमल के समान मुख एवं कमल-सरीखे चरण वाले, लक्ष्मी की ओर दृष्टि किये हुए, श्यामवर्ण, सूर्य के समान देदीप्यमान, चन्द्रमा के समान सुख देने वाले, करुणा के समुद्र, सत्पुरुषों के प्रभु, राजाओं के रक्षक, राजाओं द्वारा वन्दित, राजाओं के प्रिय एवं नररूपधारी जगदीश्वर रघुनन्दन! आपका मैं भजन करता हूँ। **निर्गुण होते हुए भी सगुण रूपधारी, राजाओं के भूषण, बुद्धिवर्धनकारी, अच्युत, पुरुषोत्तम, परम पूजनीय, मुस्कराकर बोलने वाले, जगत् के प्रभु, हनुमानजी के द्वारा संस्तुत, लोक-साक्षी, लक्ष्मी के प्रति नर रूपधारी जगदीश्वर रघुनन्दन! आपका मैं भजन करता हूँ।**

इस प्रकार स्तुति करते हुए शिवजी ने अन्त में कहा-सूर्योदय के समय जो भी मनुष्य मेरे कहे हुए इस उत्तम शतनाम-स्तोत्र का आदरपूर्वक पाठ करेगा, उसकी आपके चरणों में भक्ति हो जायेगी और वह मेरे आशीर्वाद से अपने बन्धु-बान्धव तथा स्त्री-पुत्रादि के साथ हमारे लोक में आकर बहुत काल तक आपके चरणों की सेवा का सुयोग पायेगा।

(आनंद रामायण, पूर्ण 6/32-41)

नवस्फूर्ति, नवचेतना एवं सौन्दर्य प्राप्ति के लिए

सूर्य नमस्कार

प्राचीनकाल से हमारे मनीषी ऋषियों ने विश्वव्यापी प्राणऊर्जा को स्वयं में समाहित करने के लिए सूर्य नमस्कार पद्धति का सहज निरूपण किया

जिसके अभ्यास से सूर्य वन्दना को व्यवहारिक रूप देकर
शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक जगत के उन आयामों को प्राप्त किया जा सके,
जो मानव जीवन की पवित्रता, दिव्यता, श्रेष्ठता और पूर्णता के लिए आवश्यक है।
आप स्वयं अनुभव करें, कि यह आपके लिए कितना उपयोगी है
और आरम्भ कर दें इसका अभ्यास... नवस्फूर्ति व नवचेतना की प्राप्ति के लिए...

सूर्य नमस्कार का शाब्दिक अर्थ है सूर्य की उपासना करना

यह सूर्य से सीधे व सरल रूप से प्राण ऊर्जा प्राप्त करने की प्रामाणिक विद्या है, जिसके अभ्यास से मानवीय प्रकृति का कोई क्षेत्र अछूता नहीं रह जाता। यह एक ऐसी यौगिक प्रक्रिया है, जो सभी प्रमुख आसनों, प्राणायाम और ध्यान के लाभ स्वयं में संजोये हुए है। जिसके वरदान स्वरूप जहां एक ओर भौतिक शरीर स्वस्थ होता है, सूक्ष्म शरीर के कमल चक्रों का प्रस्फुटन होने लगता है तथा पूरा शरीर एक विशेष सांचे में ढल जाता है, वहीं दूसरी ओर कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया भी आरम्भ हो जाती है। इस प्रकार सूर्य नमस्कार खोई हुई शक्ति वापस लाकर नवस्फूर्ति, नवजीवन प्रदान करता है और शरीर के सभी संस्थानों पर इसका चमत्कारिक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

सूर्य नमस्कार के आधारभूत तत्त्व

सूर्य नमस्कार के तीन आधारभूत तत्त्व हैं, जिनमें–
पहला है शरीर विन्यास, जो बारह महीनों के सांकेतिक चिह्नों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
दूसरा है शारीरिक गति के साथ सम्पन्न की जाने वाली श्वास प्रक्रिया।
तृतीय है प्रत्येक विशिष्ट शरीर विन्यास के साथ मानसिक मंत्रोच्चारण करते हुए एकाग्रता एवं जागरूकता।

सूर्य नमस्कार के लिए आवश्यक निर्देश

सर्वप्रथम साधक को सूर्य नमस्कार के अभ्यास के अन्तर्गत आने वाले शारीरिक विन्यास का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए तथा उस स्थिति में श्वास का योग किस प्रकार करना है, यह मानस में स्पष्ट होना चाहिए। प्रारम्भ में यह क्रिया कठिन मालूम हो सकती है, परन्तु अभ्यास के उपरान्त प्रत्येक शारीरिक स्थिति के अनुरूप श्वास क्रिया प्राकृतिक रूप से सम्पन्न होने लगती है। श्वास क्रिया का मूल सिद्धान्त यह है, कि जब आप पीछे की ओर मुड़ते हैं, तो फेफड़े फैल जाते हैं, ऐसी स्थिति में पूरक क्रिया कर सांस अन्दर भरी जाती है। इसके विपरीत सामने की ओर झुकते हैं, तो फेफड़ों का संकुचन होता है, जिसके फलस्वरूप सांस बाहर निकलती है। केवल छठी स्थिति में बहिर्कुम्भक लगाया जाता है अर्थात् क्रिया के बाद सांस को बाहर रोका जाता है ये सारी स्थितियाँ सामर्थ्यानुसार सम्पन्न की जाती हैं।

सूर्य नमस्कार की बारह स्थितियों अर्थात् बारह आसनों पर श्वास क्रिया सहित दक्षता प्राप्त हो जाने पर उनके साथ सूर्य के बारह मंत्रों को संयुक्त करना चाहिए, मंत्रों का जप प्रत्येक आसन के साथ मानसिक रूप से हो। इसके बाद अभ्यास की अंतिम सीढ़ी पर पहुँच कर प्रत्येक अभ्यासी को विशिष्ट एकाग्रता बिन्दु का ज्ञान आवश्यक है। सूर्य नमस्कार अभ्यास के उपरान्त शिथिलीकरण क्रिया या शवासन अनिवार्य है, जो कि इस प्रक्रिया का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि इससे शरीर का तनाव दूर होकर नई शक्ति प्राप्त होती है, मन पूर्णतायुक्त, तनावरहित एवं शान्त हो जाता है।

उपयुक्त समय एवं स्थान

सूर्योदय के समय वातावरण में अपूर्व शांति रहती है, यह समय सूर्य नमस्कार के लिए उत्तम माना गया है। शरीर के अन्दर जीवन तत्त्व के निर्माण में अल्ट्रा वायलेट किरणों का विशेष महत्त्व है। नित्य क्रियाओं के उपरान्त स्नान कर खुली हवा में अभ्यास करना उत्तम होता है। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में सन्ध्याकाल में रात्रि भोजन के पूर्व ही अभ्यास किया जा सकता है।

आवृति संख्या

प्रारम्भिक अभ्यासी के लिए तीन आवृत्तियाँ पर्याप्त हैं, बहुत अधिक थकावट महसूस होने पर अभ्यास रोक देना चाहिए अभ्यास की गति धीमी रखनी चाहिए, धीरे-धीरे आवृत्तियों को संख्या बढ़ाकर बारह की जा सकती है, उच्च अभ्यासी इच्छानुसार 12 से अधिक आवृत्तियों का अभ्यास कर सकता है, अभ्यास की आवृत्ति संख्या धीरे-धीरे बढ़ाते रहना चाहिए।

सूर्य नमस्कार प्रक्रिया
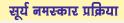
1. प्रणामासन

सूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाइये, दोनों पैर मिले हों, हाथों को जोड़कर प्रार्थना की स्थिति में छाती के सामने रखिये। कुछ क्षणों के लिए आँखों को बन्द कीजिये, मानसिक स्थिरता एवं शान्ति का अनुभव करते हुए शरीर एवं मन को पूर्णतः शिथिल कीजिये। धीरे-धीरे सांस बाहर निकालते हुए फेफड़ों की समस्त वायु बाहर निकाल कर रेचन कीजिए। 'ॐ मित्राय नमः' मंत्र से अपने सर्वश्रेष्ठ मित्र सूर्य के प्रति जागरूक होइए, अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित कीजिये। बीज मंत्र– 'ॐ हां'।

2. हस्तउत्तानासन

प्रत्येक गतिविधि के प्रति पूर्ण जागरूकता रखते हुए दोनों हाथों को ऊपर उठाइये और पीछे झुकिये, हाथ एवं पीठ इस स्थिति में तने हुए रहें, सिर भी पीछे झुका हुआ हो, हथेलियां ऊपर की ओर खुली हों। हाथों को ऊपर उठाते हुए सांस फेफड़ों में भरिये अर्थात् लम्बा पूरक करिए 'ॐ रवये नमः' मंत्र से अपने शरीर को प्रकाश पुञ्ज की ओर प्रसारित करते हुए विशुद्ध चक्र पर ध्यान केन्द्रित करिये। बीज मंत्र–'ॐ ह्रीं'।

3. पादहस्तासन

दोनों हाथों को नीचे ले जाते हुए कमर प्रदेश से सामने की ओर झुकिये–पैर और हाथ एकदम तने हुए रहें, हथेलियों को सीधे जमीन पर टिकाने का प्रयत्न कीजिये, सिर को अन्दर की ओर झुकाते हुए नासिका से घुटनों को छूने का प्रयास कीजिये। नियमित अभ्यास से यह आसन शरीर में लचीलापन ला देता है एवं अभ्यास सरल हो जाता है। सामने की ओर झुकते समय सांस पूरी तरह बाहर निकालनी चाहिए, पेट जितना हो सके भीतर की ओर दबाना चाहिए और 'ॐ सूर्याय नमः' मंत्र से क्रियाशील सूर्य

भगवान का ध्यान स्वाधिष्ठान चक्र में करना चाहिए। बीज मंत्र–'ॐ हूं'।

4. अश्वसंचालनासन

चौथी स्थिति में दाहिने पैर को पीछे पूर्ण रूप से फैलाइये। बायां पैर एवं दोनों हाथों की स्थिति पूर्ववत् रहे, दाहिने पैर का टखना एवं घुटना भूमि को स्पर्श करे। सिर को ऊपर उठा कर मेरुदण्ड को मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार अवस्था में लाने का प्रयास करें। दोनों तने हुए हाथों पर शरीर का पूरा भार रहे, इस अवस्था में मुंह ऊपर उठाकर गर्दन एवं पीठ की अवस्था घोड़े की नाल के समान बनायें। सिर को ऊपर उठाकर 'ॐ भानवे नमः' मंत्र से अखिल ब्रह्माण्ड के गुण हमें सदा क्रियाशील रहने की शक्ति दें–ऐसी प्रार्थना करते हुए आज्ञा चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हैं'।

5. पर्वतासन

हाथों एवं दाहिने पैर को पूर्व स्थिति में रखते हुए पांचवी स्थिति में सिर को नीचे झुकाएं तथा बायें पैर को पीछे सीधा लेकर दाहिने पैर के बाजू में रखें, दोनों पैरों की स्थिति समान रहेगी। नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठायें, सिर को दोनों हाथों के बीच नीचे रखें, शरीर की अवस्था लम्बवत् हो जाएगी। नाभि की ओर दृष्टि रखें, दोनों एड़ियों को जमीन पर स्थिर रखने का प्रयास करें और पेट को अन्दर दबाते हुए सारी वायु तीव्र गति से बाहर निकाल दें। अपनी शारीरिक एवं मानसिक प्रगति के लिए सूर्य भगवान से 'ॐ खगाय नमः' कहकर विशुद्ध चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हौं'।

6. अष्टांगासन

हाथों एवं पैरों को पूर्व अवस्था में रखते हुए दोनों घुटनों को भूमि पर टिकाइये, हाथों के सहारे छाती एवं ठोड़ी को नीचे कीजिये, नितम्ब व पेट का भाग पृथ्वी से ऊपर उठा रहेगा। इस स्थिति में सांस नहीं ली जाती, वरन बाहर ही सांस को सामर्थ्यानुसार रोक कर रखा जाता है। 'ॐ पूष्णे नमः' मंत्र से अपने को शक्ति के स्रोत सूर्य भगवान के चरणों में पूर्णतः समर्पित करें, ध्यान मणिपूर चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हं'।

7. भुजंगासन

हाथों पैरों को उसी स्थिति में रखते हुए सिर को ऊपर की ओर उठाते हुए हाथों को सीधा कीजिये, धड़ वाले भाग को ऊपर उठाकर सिर एवं कमर को पीछे की ओर मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार स्थिति बनाइये। सिर को ऊपर उठाते समय पूरी सांस अन्दर लेकर दीर्घ पूरक करें, 'ॐ हिरण्यगर्भाय नमः' मंत्र से बीज शक्ति रूपी सूर्य को नमन करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करना है। बीज मंत्र–'ॐ ह:'।

8. पर्वतासन

सिर को नीचे झुकाइये तथा नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठाते हुए स्थिति पांच में आ जाइये, इस स्थिति में सांस बाहर निकालते हुए रेचक किया जाता है, 'ॐ मरीचये नमः' मंत्र से ब्रह्ममुहूर्त के देवता को प्रणाम करते हुए मृगतृष्णा की समाप्ति की प्रार्थना कर ध्यान विशुद्ध चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हौं'।

9. अश्वसंचालनासन

बायें पैर को सामने वापिस ले आयें, उसे दोनों हाथों के मध्य रखते हुए नितम्ब प्रदेश को नीचे लाएं, सिर व रीढ़ की हड्डी को पीछे मोड़ते हुए स्थिति चार की भांति अर्धवृत्ताकार बनायें, दृष्टि आकाश की ओर हो। ऐसा करते समय सांस अन्दर की ओर भरते हुए पूरक करें। 'ॐ आदित्याय नमः' मंत्र से महाशक्ति को प्रणाम करते हुए आज्ञा चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हैं'।

10. पादहस्तासन

सिर को नीचे कीजिये, दाहिने पैर को सामने लाइये, नितम्ब वाले भाग को उठाते हुए पैरों को सीधा कीजिये, स्थिति तीन की तरह नासिका से घुटनों का स्पर्श करें तथा वायु को बाहर निकालते हुए पूर्ण रेचक करें। 'ॐ सवित्रे नमः' मंत्र से सूर्य के मातृ रूप कल्याणकारी भाव से विनती करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हूं'।

11. हस्तउत्तानासन

इस स्थिति में धड़ को ऊपर उठायें, हाथों को ऊपर उठाते हुए पीछे की ओर झुकते हुये दूसरी स्थिति में आ जाएं धड़ को ऊपर उठाते समय सांस अन्दर की ओर लेते हुये पूरक करें। 'ॐ अर्काय नमः' मंत्र से शक्ति प्रणेता सूर्य को नमस्कार करते हुये ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हीं'।

12. प्रणामासन

प्रथम स्थिति की भांति शरीर को सीधा रखते हुए दोनों हाथों को जोड़कर हृदय के सामने प्रार्थना मुद्रा में नेत्र बन्द करें और सांस बाहर छोड़ते हुए रेचक कर सामान्य अवस्था में आयें। 'ॐ भास्कराय नमः' मंत्र से सूर्य नारायण को प्रणाम करते हुए अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र–'ॐ हां'।

शवासन
शिथिलीकरण क्रिया

सूर्य नमस्कार के बाद शवासन में यौगिक विधि से चेतना पूर्ण शिथिलीकरण करके सम्पूर्ण शरीर को सजगता के साथ प्राण के ग्रहण योग्य बनाया जाता है। इससे साधक तनाव रहित होकर नवस्फूर्ति अनुभव करता है। इस क्रिया के लिए कम्बल पर सीधे लेटकर पूरा शरीर ढीला छोड़ दें, नेत्र बंद कर लें, शरीर में कोई हलचल न हो। अपनी चेतना को पैरों के पंजों से लेकर क्रमशः सिर तक ले जाकर पूर्ण शिथिलता की भावना देकर तनाव रहित स्थिति का अनुभव करें। शवासन सूर्य नमस्कार के समय का आधा होना चाहिए। इस सूर्य नमस्कार विधि का जीवन में नियमित अभ्यास कर सहस्रार जागरण करते हुए मंगलमय बनें और शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करें।

आयुर्वेद सुधा

सिंघाड़ा

भाषा भेद से नाम भेद–सं.-जलफल, त्रिकोणफल, जलकण्टक इत्यादि। हिन्दी-सिंघाड़ा। म.-शेंगाडा। गु.-शिंगोड़ा। बं.-पानीफल, अंग्रेजी -Waterchestnut.

वर्णन–सिंघाड़े की बेलें तलाबों में जल के अन्दर पैदा होती हैं। इन बेलों के ऊपर तीन धारवाले फल लगते हैं जो कच्ची हालत में हरे और पकने पर काले हो जाते हैं। इन फलों के दोनों किनारे तेज काँटेदार रहते हैं। इस फल के भीतर सिंघाड़ा रहता है यह कच्ची हालत में दूधिया रसदार और सूखने पर सख्त हो जाता है। औषधि प्रयोग में इसका फल ही काम में आता है।

गुण, दोष और प्रभाव–आयुर्वेदिक मत में सिंघाड़े शीतल, स्वादिष्ट, भारी, वीर्यवर्द्धक, कसैले, मलरोधक, वातकारक, कफनाशक तथा रक्तपित्त और दाह को दूर करने वाले होते हैं।

सिंघाड़े का फल एक खाद्य पदार्थ की तरह उपयोग में लिया जाता है। हिन्दू लोग एकादशी के व्रत में इसको फलाहार के रूप में लेते हैं। यह मीठा और शीतल होता है। पित्त विकार और अतिसार में इसका उपयोग किया जाता है। पुलटिस के रूप में इसका वाह्य उपयोग भी होता है।

सिंघाड़े में विटामिन ए, सी, मैंगनीज, कर्बोहाईड्रेट, प्रोटीन, फैट, कैल्शियम जैसे पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं जो सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं।

यह पाचन तंत्र के लिए उत्तम है एवं बुढ़ापे में होने वाली कई बीमारियों से बचाता है।

सिंघाड़ा खाने से शरीर में खून बढ़ता है क्योंकि इसमें आयरन अधिक होता है। यह शरीर को ऊर्जा देता है।

सिंघाड़ें में तरह तरह के पोषक तत्व जैसे पोटेशियम जिंक, विटामिन होता है। ये शरीर के अंदर से विषैले तत्व बाहर निकालते हैं।

उपयोग–अतिसार-सिंघाड़े का सेवन करने से अतिसार मिटता है।

गर्भावस्था में सिंघाड़े का सेवन माता एवं शिशु के लिए फायदेमंद होता है। ये गर्भ को सही पोषण देता है तथा गर्भाशय की रक्षा करता है जिससे गर्भपात का खतरा कम होता है। इसके अलावा इसे खाने से मासिक धर्म संबंधी समस्याएं भी ठीक होती है।

गर्भाशय की निर्बलता–यदि गर्भ नहीं ठहरता हो, गर्भस्राव हो जाता हो तो कुछ सप्ताह तक ताजे सिंघाड़े खाने से लाभ होता है।

सिंघाड़ा शरीर को ऊर्जा देता है इसमें आयोडीन भी पाया जाता है जो गले से संबंधी रोगों से रक्षा करता है।

पीलिया के मरीजों के लिए सिंघाड़ा खाना अत्यन्त लाभदायक है। आप सिंघाड़े का रस निकाल कर जरूर पीयें।

सिंघाड़े के आटे में स्टार्च पाया जाता है जो दुबले पतले लोगों के लिए वजन बढ़ाने में फायदेमंद होता है नियमित सेवन से दुबलेपन की समस्या समाप्त होती है।

दाद–नीम्बू के रस में सूखे सिंघाड़े को पत्थर पर घिस कर दाद पर लगायें पहले तो कुछ जलन होगी फिर ठण्डक पड़ जायेगी। कुछ दिन इसे लगाने से दाद ठीक हो जाता है।

रक्त प्रदर–सिंघाड़े के आटे की रोटी बनाकर खाने से रक्तप्रदर मिटता है।

वीर्यवर्द्धक–सिंघाड़े के आटे की दूध के साथ फक्की लेने से अथवा उसका हलवा बनाकर खाने से वीर्य बढ़ता है। यह अत्यंत कामोद्दीपक एवं द्रढ़ता प्रदायक होता है।

श्वेत प्रदर–सिंघाड़े के आटे का हलुवा खाने से श्वेत प्रदर ठीक होता है।

बवासीर की समस्या में इसका नियमित प्रयोग लाभ देता है।

सिंघाड़ा में कैल्शियम भरपूर होता है इसलिए इसका सेवन हड्डियां एवं दाँत मजबूत करता है। आँखों के लिए भी यह फल लाभकारी है।

अस्थमा के मरीजों के लिए सिंघाड़ा फायदेमंद होता है। इसके नियमित प्रयोग से सांस संबंधी समस्याओं में आराम होता है।

नुकसान–जरूरत से ज्यादा सिंघाड़ा खाने से पाचन तंत्र पर बुरा असर पड़ता है। यदि कब्ज की परेशानी है तो ज्यादा सिंघाड़े का सेवन न करें।

सिंघाड़े के सेवन के बाद पानी नहीं पीना चाहिए।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

भूत प्रेत एवं इतर योनियों द्वारा बाधा आने पर जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

ग्रामीण अंचलों में तथा पिछड़े क्षेत्रों के साथ ही सभ्य समाज में भी इस प्रकार के कई हादसे सामने आते हैं, जबकि पूरा का पूरा घर ही इन बाधाओं के कारण बर्बादी की कगार पर आकर खड़ा हो गया हो।

त्रिपुर भैरवी दीक्षा से जहां प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है, वहीं शारीरिक दुर्बलता भी समाप्त होती है, व्यक्ति का स्वास्थ्य निखरने लगता है।

त्रिपुर भैरवी

दीक्षा

इस दीक्षा को प्राप्त करने के बाद साधक में आत्मशक्ति त्वरित रूप से जाग्रत होने लगती है और बड़ी से बड़ी परिस्थितियों में भी साधक आसानी से विजय प्राप्त कर लेता है, असाध्य और दुष्कर से दुष्कर कार्यों को भी पूर्ण कर लेता है। दीक्षा प्राप्त होने पर साधक किसी भी स्थान पर निश्चिन्त, निर्भय आ जा सकता है, ये इतर योनियां स्वयं ही ऐसे साधक से भय खाती हैं।

योजना केवल 10-11-12 दिसम्बर इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर मैसज कर प्राप्त करें।

Uchhisht Ganpati Sadhana

No other deity finds such a revered place in not only spiritual literature but also the hearts and minds of the people of India as does Lord Ganpati. So much so that the start of any auspicious or good venture is termed Shree Ganesh. No worship or venture could be complete without the worship of Lord Ganpati at the very start. And if one forgets to procure an idol of the Lord, then worry not ! The priest takes a betelnut and contemplates in it the form of Lord Ganpati.

No matter which place in India one lives, the worship of Lord Ganpati forms an inseparable part of every auspicious occasion. And the reason for this is that Lord Ganpati is called Vighnaharta or one who banishes all problems, obstacles and negative influences. Propitiating the Lord at the beginning of some venture means ensuring a smooth and hurdle-free time ahead.

While in general Lord Ganpati sure helps one overcome all obstacles, but when it comes to facing some major hurdle in life the best course suggested by the scriptures is Sadhana of

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

Uchhisht Ganpati i.e. Ganpati in a standing pose ready to take on and destroy all evil.

Whether it is a court case, a legal battle, enemies, unknown fears, competition from adversaries or evil rituals tried against you by unscrupulous individuals in all such circumstances Ucchisht Ganpati is the deity who could ensure peace, safety and victory.

This Sadhana should be started on a Wednesday and should be tried at night after 9 p.m. The Sadhak should have a bath and wear yellow clothes. Then he should sit on a yellow mat facing North. Before himself he should place a wooden seat covered with yellow cloth.

On it place a **Uchhisht Ganpati Yantra** and offer rice grains, flowers and vermilion on it. Then he should light a ghee lamp and thereafter chant the following verse after taking some water in the hollow of the right palm.

Om Asyochhisht Ganpati Mantrasya Kankol Rishis Viraat Chhandah Uchhisht Ganpati Devataa Sarvaabhisht Siddhaye Jape Viniyogah.

The let the water flow to the ground speaking out the problem you are facing and praying for its remedy.

Then meditate on the form of Uchhisht Ganpati who has four hands, is red complexioned, has three eyes, stands on a lotus, holds a lasso in one hand and is ready to strike the evil ones.

Offer Ladoos to the Lord. Chant one round of Guru Mantra. After that with a **red coral rosary** chant 21 rounds of the following Mantra.

Hreem Gam Hasti-pishaachi-likhe Swaahaa.

Do this daily for eleven days at the same time. On the last night make 108 oblations of mustard seeds in the holy fire chanting the same Mantra. After the Sadhana on 12th day drop the Yantra and rosary in a river or pone.

Sadhana Articles- 450/-

Any Friday

Kamdhenu Sadhana

Wish and you shall have it!

The ancient Indian scriptures speak of a divine cow Kamdhenu, who could provide whatever one wished. Kamdhenu actually means fulfiller of whishes.

The great Rishi Jamadgni had Kamdhenu in his hermitage and daily he used to feed thousand of saints and needy people. Even kings came to him to seek his help in times of need. Rishi Jamadgni had to just wish and the very next moment that thing would materialise.

Can such powers be gained even today ?

The powers of Sadhanas never become weak as time passes. What was true in teh ancient times is very much true and opossible even today. What is lacking is a strong will power to perform a Sadhana in its perfect form. If one's determination and concentration are unwavering then one could make many wonderful things to happen even today through Sadhanas.

Recently on a visit to the Himalayas I met Swami Keshavanand who is an ascetic disciple of revered Sadgurudev Paramhans Swami Nikhileshwaranand. He is a wandering saint but when I met him he was putting up in a cave near Badrikashram. I had heard a lot about him from other accomplished disciples of Sadgurudev that he possessed many Siddhis i.e. divine powers gained through Sadhanas. To me he appeared a very simple saint. He wore only a loin cloth and I felt as if I was before an ordinary Sadhak.

His cave was far from the shrine of Badrinath - at least five miles ! I spent the entire day with him and as I was getting ready to return to my hotel near the shrine, the weather took a turn for the worst. It was the worst storm. I had ever witnessed and the rain lashed the rocks as if not water but stones were pelting from the heavens. Swamiji suggested that I stay at tha cave that night.

Earlier I had inspected the small cave carefully. Expect for a tumbler of water and a few personal clothers of the Swamiji there had been nothing else. I thought that I would have to go hungry that night and would have to sleep in cold on the cave floor. Swamiji seemed to read my thoughts and after some time he said, "I never eat at night. But I have some food for you. It is there in that corner. Go and have it."

Much curious I proceeded to the indicated nook. Lo and behold there lay a silver platter with various rich dishes served in it. The Puris in it looked as if fresh out of the cooking oil. Instinctively I reached out and touched one. It was hot. I looked with amazement at Swamiji. But he sat there as if nothing out of the ordinary had happened.

I ate the food and it was the best I had ever eaten. But I was now craving to know how the food got there. After much cajoling Swamiji revealed to me that he had accomplished Kamdhenu Sadhana. Later he even materialised a warm bedding for me and it was quite a cosy sleep I had in that cold cave.

Swamiji told me that attaining such powers requiered sustained Sadhana for years but for house-holders who cannot do tough Sadhanas there is a simpler version of the Sadhana through which one could at least have enough and fulfill all needs-food, clothes, house, vehicles, good education, proper medical facilities and everything which is indispensable in worldly life. Presented here is this very Sadhana which is a wonderful ritual for banishment of poverty and gain of wealth. It should be started from a Friday.

At midnight have a bath and wear fresh white clothes. Sit on a white mat facing North. Cover a wooden seat with white cloth. On it place ***Kamdhenu Yantra*** on a mound of rice grains, flowers on Yantra. Offer vermillion, rice grains, flowers on Yantra. Then chant Guru Mantra for ten minutes. Next with ***Vidyut rosary*** chant 21 rounds of this Mantra.

Om Kreem Shree Hleem Hreem Om

Do this daily for five days and then drop the rosary and yantra in a river or pond. Very soon favorable results would manifest in the form of a better job, boost in business, unexpected gains and other wonderful opportunities.

Sadhana Articles - 450/-

3 दिसम्बर 2021

शिव शक्ति साधना शिविर

शिविर स्थल : शिव मूर्ति, पाण्डव सरोवर, बस स्टैण्ड के पास, **दसुआ** (होशियारपुर-पंजाब)

आयोजक मण्डल - जलाल नंगल - रघुवीरसिंह-9815986613, चंचलसिंह, पुरषोत्तम सिंह-8054685200, सुदेश कुमारी, सुरजीत सिंह-9876520978, सुदेश मनहास, सुन्दरशाम सिंह-9815404868, विशाखा मनहास, सोनिया कुमारी, चंचला देवी, संध्या देवी, कौशल्या देवी, रणजीत सिंह, नीलम देवी, गोदावरी देवी, कांता देवी, सुमन कुमारी, पूरण सिंह, प्रीतम सिंह, ज्योति देवी, मनीषा रानी, सुरजित सिंह, दर्शन सिंह, **मुकेरियां-**बलविन्दर सिंह-9872814107, राजन, बलवंतसिंह-9464060416, सुदेश कुमारी-8437104721, तृप्ता देवी, रेणू कौशल, हिमानी शर्मा, चन्दर रेखा, तिलक सिंह, मोहिन्दर सिंह, नरेश सिंह, मदनसिंह, **पठानकोट-**अविनाश शर्मा-9418086531, प्रवीण अरोड़ा-9417421288, पुष्कर महाजन-8054920639, सुनिता भारत, राजीव शर्मा-9914616659, राजेश शर्मा-9814870777, पवन सिंह, कल्पना -9888681403, ममता अरोड़ा-9417247789, अमित- 8054531730, **होशियारपुर-**प्रदीप-9256119075, जयंत नन्दा- 9779061513, सुभाष चन्द्र बजाज-1822221769, बनवारी लाल- 9888748318, प्रकाश कौर, आशा रानी, मनिन्दर सिंह रतन, **गुरदासपुर-** अतुल महाजन-9041507220, टोनी तिवारी-9872816082, राजीव सिंह, नथू राम, बिशन सिंह-9815851192, भृगु अबरोल-9216444347, सुनीता शर्मा, धर्मवीर, मोती लाल हाण्डा, रज्जन शर्मा, रणदीप अबलोर, **अमृतसर-**रवि शर्मा-9888460561, बॉबी चौहान, जसबीर सिंह, कुणाल खन्ना, **जलंधर-**विजय शर्मा-9417060180, गिरीश निखिल, नवीन कुमान-9041534456, बाबू-8054165988, प्रदीप सिंह राजा-9417029821, सुरेन्द्र शर्मा-9417095840, मनोज गौतम, पवन शर्मा, नगर शर्मा, सी.के. शर्मा-9501060093, सुखविन्दर पाल, पुष्पा देवी, **साम्बा-**गिरधारी सिंह-9596837376, विजय शर्मा-9858275095, भगवान दास-9872900286, सत्य भूषण-9596603296, अतुल शर्मा-9419187550, सुमित सिंह-9858101829, सन्नी साम्याल-9419135133, लखवीर सिंह-9797442614, कुलदीप राज-9622365922, बौद्ध राज-9797428607, सुरजित सिंह-9622066580, राहुल सिंह- 9419152632, अंजू गुप्ता, पण्डित कीमती-9419310155, राजू-8716807692, सोनू पण्डित-9906172054, राजेन्द्र कुमार-7051261692, पण्डित संजय-9419136203, सोनू कथुजा-9419212799, सोनिया प्रोफेसर-9419684423, विमल पंजाब-9517232165, मंजू लेक्चरर (उधमपुर)-9418695330, मन्नू जी. शर्मा-8743059325, मूलराज-9596610264, राकेश कुमारी- 97976 56917, अश्विनी शर्मा-9419702013, **पालमपुर-**आर.एस. मिन्हास-9418161585, संजय सूद-9816005757, ओमकार राणा, गोरख नाथ, देव गौतम, **कांगड़ा-**अशोक कुमार-9736296077, सुनील नाग, संजीव, **धर्मशाला -**संध्या-9805668100, जुल्फी राम, आशा गोरांग, **नागरोटा-** ओमप्रकाश-9418256074, कौशल गुलेरिया, जगजीत पठानिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, मिण्टू, **नूरपुर-**राम स्वरूप रतन- 94185 90516, सुखदेव सिंह गुलेरिया-9816234300, राजेन्द्र कुमार -0179 -3221582, राजेश कपूर -9418246999, प्रवेश कुमार -9418429866, राहुल-9418121206, अश्विनी शर्मा- 8628071179, एन.सी. शर्मा-9816152967, **चिंतापूरणी-**अजित लाल, **जम्मू-**सतपाल शर्मा, विजय खजुरिया, ज्योति खजुरिया, रतन सिंह, कृष्ण देवी, बालकृष्ण शर्मा

5 दिसम्बर 2021

ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : श्री खंडोबा देवस्थान ट्रस्ट, खंडोबा माक आकुड़ी, पिंपरी चिंचवड़ शहर, **पूणे**

आयोजक मण्डल - कदम साहब-9922640064, अनिल सुपेकर-9767395044, संतोष सुपेकर-8308828535, निखिल भोकरे-9895801155, बाळा साहेब बाळवडकर -9762964344, दत्ताजय कविस्कर-9921407825, वैभव कराले- 9823041226, दुष्यंत नैसर्गी, रवि कुमार लंगड़े-9048698121, संजोय डहाके-9011067000, विनोद पंवार-9665065291, विजय अण्णा-7776064286, प्रशांत डफाडे -7972749642, योगेश झा-9850946250, अशोक भागवत

19 दिसम्बर 2021

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल : होटल स्वास्तिक मण्डप, बड़ा शंख, पूरी मंदिर रोड, **पूरी (उड़ीसा)**

आयोजक मण्डल - मुख्य अयोजक - इन्द्रजीत राय, 8210257911, 9199409003, चैतन्य गुंजन योगी जी, (भुवनेश्वर), 8144904640, डॉ. लक्ष्मी नारायण पानी ग्राही एवं प्रतिमा कुमारी पत्रा, 9437616301, सूरत ध्रुवा एवं सत्यवती ध्रुवा, (बाण्डामुण्डा), 9337852925, वैष्णोचरण साहु, (बलांगीर), 8249804350, सुब्रतो बोहिदार, 7978047344, **कटक -** शिव विरचरण नारायण त्रिपाठी, 8895972932, अभिषेक शर्मा, 8847857125, **आ.सि.सा. परिवार ब्रह्मपुर के समस्त गुरु भाई गुरू बहन,** डॉ. एस.वी. देव-9437358366, धर्मेन्द्रदास-9040097901, संतोष कु. पति-876344177, मनोज कु. पात्रा-9178813079, संतोष कु. पति-7008449893, **भुवनेश्वर -** प्रदीप कुमार महापात्रो, लिंगराज त्रिपाठी एवं **भुवनेश्वर के समस्त गुरू भाई-बहन, पूरी -** संतोष कुमार परिदा, आ.सि.सा. परिवार कालाहाण्डी के समस्त गुरू भाई गुरू बहन - प्रदीप साहु, **सम्बलपुर -** दिलीप कुमार मिश्रा, लिंगराज प्रधान, किशोक कुमार बरिहा, सुरोज कुमार प्रधान, **राउरकेला-** नरेश रजगड़िया, रोहित कुमार पिलैइ, वृंदावन ताती, गौड़ सिंह भूमीज, **सुन्दरगढ़ -** अशोक कुमार प्रसाद, दया सागर, दीपक पटनायक, **झारसुगोड़ा-** हरिबाग, बाबूलाल साहू, वेंकेटेश राव, नितीन जी, **बाण्डामुण्डा -** जयदीप नायक, सूरज मलाकार, **तेतलागढ़ -** ऋषिकेश नाग एवं जमुना नाग, **धर्मगढ़ -** नेहारिका

नाग, **धनबाद (झारखण्ड) -** राहुल सिंह, मुरारी महतो, **लखीसराय, बिहार, आ.स.सा. परिवार बलंगीर के समस्त गुरू भाई गुरू बहन।**

25 दिसम्बर 2021

दस महाविद्या साधना शिविर

शिविर स्थल :

श्री सूरती मोड़, वनिक वाड़ी, लाल दरवाजा मेन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास, **सूरत** (गुजरात)

आयोजक मण्डल-विजय पटेल-9925104035, विवेक कापड़े-7984064374, तरंग पटेल-9898965511, नीरज पटेल-96241 59779, प्रियंका-9374012333, दिव्येश भाई-9374716532, शंकर भाई-9128304483, सुरेन्द्र चौरसीया-9725822979, अनिल चौधरी, दिनेश भाई (सायन), निलेश पटेल (सायन), आनन्द भाई, राजु भाई, रमेश भाई, सत्या महाराज, संतोष भाई, चेतन भाई, विजय बंगाली, निराली पाटील, दिपीका आंटी, **वलसाड**-जयनीश पानवाला, प्रमीत मेहता, चंद्रप्रभा कपाडी, **भरूच**-हरेश जोशी, हेमन्त भट्ट, विजयनाथ सहानी, **बडौदा**-हितेश शुक्ला, चिराग माहेश्वरी, पी.के. शुक्ला, **अहमदाबाद**-कमलेश सुतार, बेचर भाई, श्यामलाल, नितिन प्रजापति, मोण्टू प्रजापति, दिपेश गांधी, अंकित प्रजापति, धवल प्रजापति, विक्की प्रजापति, रोहन भाई, भौमिक प्रजापति, प्रशांत प्रजापति

26 दिसम्बर 2021

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल :

शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्रीवल्लभ दास मार्ग, निअर गुरुकृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), **मुम्बई**

(सायन स्टेशन से 5 मिनट की दूरी पर)

आयोजक मण्डल - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल -9768076888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -98676 21153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

9 जनवरी 2022

सूर्य लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : संताजी सभागृह, बुधवार बाजार, सोमवारी क्वार्टर, , **नागपुर (महाराष्ट्र)**

आयोजक मण्डल-नागपुर- वासुदेव ठाकरे-9764662006, छत्रपाल सिंह गौर-9422673269, किशोर वैध्य-9371710599, आकाश गुप्ता 9284549716, गुलाब सिंह बैस, गणेश भोयर, प्रेम सिंह बघेल, शामलालजी राम, अशोक पाण्डे, उज्वल येरणे, उत्तम सिंह गहरवार, संजय सिंह गहरवार, भरत सिंह बैस, मधुकर अंतुरकर, दिलीप गुल्हाणे, संदीप पोहेकर, खुशाल कोरेकर, नरेन्द्र ठाकरे, सारंग चौधरी, प्रविण नागरकर, अजय वांढरे, तुषार अंतुरकर, संजय रेड्डी, सौरभ बारके, शोभाराम लोटे, संजय डवरे, ललित सावरकर, रवि भाके, तुषार तलखंडे, गिरीघर, भण्डारा : देवेंद्र काटेखाये-7744946669, नरेन्द्र काटेखाये, तिलकचंद कापगते, ग्यानेश्वर बेंदेवार, संजय खेडीकर, चन्द्रपुर : वतन कोकास- 94221 14621, पंकज घाटे, विलास खाण्डरे, पवन कांडलकर, विजय जयसवाल, वर्धा-चन्द्रकान्त दोड-8379080867, शिवा गव्हाने, आकाश बुरले, धीाज वाघाडे, अनिकेत ऊरकुडे, अर्पित कोटमकार, अकोला-राजेश सोणोने 9823033719, रविन्द्र अवचार, भास्कर कापडे, शाम दायमा, पुंजाजी गावंडे, यवतमाल-श्रीकांत चौधरी-9822728916, देवांशु दिपक येण्डे, सचिन ईंगले, नंदकिशोर भागवत, कैलाश शेबे, अमरावती-रोहीत काले-8554068558, हरीश गिरी, ललित गेडेकर, विष्णु जायले, गडचिरोली-दुल्लुराज ऊईके-9422615423, नेताजी कुनघाडकर, ऊत्तम पिंपरे, पतीराम मडावी, अरविंद पेद्दिवार, गोंदिया-डि के डोये 92262 70872, संजय पिल्लारे, सुरेन्द्र लिल्हारे, कमल जी,देवेन्द्र देशमुख, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्परे-9406751186, सुरेश रावते, संतोष परिहार, अखिलेश श्रीवास्तव, कृष्णकुमार ठाकरे

14 जनवरी 2022

सूर्य साधना शिविर

शिविर स्थल : कमला भवन (गेस्ट हाऊस) नियर, जार्ज टाऊन थाने के पास, सोहबतिया बाग, संगम पेट्रोल पम्प के बगल में, **प्रयागराज (उ.प्र.)**

आयोजक मण्डल-प्रयागराज- इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, सूर्यनारायण दुबे एवं विद्या देवी-7408169214, अजीत श्रीवास्तव-9889041343, सदानंद राय, राजेश श्रीवास्तव एवं श्वेता श्रीवास्तव-7985467138, सिद्धनारायण त्रिपाठी, अजय दुबे, गयाप्रसाद यादव, ज्ञानचंद जयसवाल, मनीष शेखर,, अतिन्द्र सिंह, रामचन्द्र केशरवानी, विनय कुमार, सिपाही लाल, हरिशंकर शर्मा, आश सिंह, विनीता श्रीवास्तव, बृजेश कुमार श्रीवास्तव, सन्तोष निगम, गायत्री बाजपेयी, एस. ए. अवस्थी, विजय शुक्ला, ए.के. साहू, गाटगी राय, चन्द्रबाला, भोलेश्वर मिश्रा, चित्रकूट-राजेश दुबे, मिर्जापुर-अनिल जयसवाल, मनोज सेठ,

मनोज शर्मा, रामआचार्य पाण्डे, विजयानंद गिरी, देवेन्द्र नाथ मिश्रा, मुनमुन दुबे, अमित, अंशु मिश्रा, संतोष मिश्रा, आ.सि.सा. परिवार मुगलसराय-सुनील सेठ, जयदेव घोष, मनोज पाण्डे, पप्पू, शिवकुमार जयसवाल, भानुप्रताप यादव, आ.सि.साधक परिवार वाराणसी-अजय जयसावल, प्रेमनंदन पाण्डेय, दिनेश सेठ, आशीष दुबे, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, ललन शर्मा, जौनपुर-अमरनाथ पाण्डे, राजपत सिंह, डॉ. जयप्रकाश, प्रभात, सुल्तानपुर-महन्त त्रिपाठी, राजेश मिश्रा, पवन तिवारी, बादशाहपुर-अजय गुप्ता, राजू गुप्ता, लखिमपुर-भोले सिंह, बाबा सूरज मालदास, बबेरू, सोनुजी, लखनऊ-अजयसिंह, सतीश टण्डन, आ.सि. साधक परिवार आजमगढ़, लाटघाट, रौनापार, अम्बेड़कर नगर, बरहलगंज, दोहरी घाट के समस्त गुरु भाई-बहन, गोरखपुर-के.के. शुक्ला, बलिया-विंद्याचल पाण्डे, सतना (म.प्र.)-डी.के. पाण्डे

16 जनवरी 2022

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल : मां कमला उत्सव हॉल, मीठापुर बस स्टैण्ड, बाईपास मोड़, विग्रहपुर, **पटना (बिहार)**

आयोजक मण्डल - इंद्रजीत राय-8210257911, 9199409003, महेन्द्र शर्मा-9304931127, संजय सिंह-9934682563, टुनटुन यादव- 9905022385, अनुराग शर्मा-7834999000, मुन्ना सिंह, पंकज, दिव्यांश-9608241286, मनोज मिश्रा, कौशलेन्द्र प्रसाद, डॉ. संजय जी, डॉ. मधुरेन्द्र कुमार, रंजनकुमार गुप्ता, खगौल-तारकेश्वर, एकंगर सराय-मुकेश विश्वकर्मा, अरविन्द, गया-उमाशंकर यादव, सुरेश पण्डित, रविन्द्र कुमार, निखिल, धर्मेन्द्र कुमार, औरंगाबाद-कामता प्रसाद सिंह, धनंजयसिंह, कुदरा-शिवशंकर गुप्ता, आ.सि.साधक परिवार बिदुपुर के समस्त गुरु भाई-बहन, आ.सि. साधक परिवार मुजफ्फरपुर-पंकज कुमार, रजनी रंजन त्रिवेदी, रमन झा, प्रकाश कुमार, धीरज झा, धर्मेश, आ.सि. साधक परिवार दरभंगा-अभय कुमार सिंह, ताजपुर-प्रभुजी, लगनिया-संजीव चौधरी, राजकुमार दास, मोतिहारी-सुरेश भारती, रामेश्वर भगत, हत्था कलौंजर-अरुण कुमार सिंह, रामसियार भंडारी, आ.सि. साधक परिवार बेगुसराय, अनिल पासवान, ढोली-प्रवीण कुमार, पुसा-प्रेमलाल पासवान, परबत्ता-अनिरुद्ध झा, आ.सि. साधक परिवार मुरलीगंज के समस्त गुरु भाई-बहन मुंगेर-निवास सिंह, मंजु देवी, तोई मजरोई (बरबीगाह)-तरुण कुमार प्रभाकर, विपिन कुमार सिंह, डॉ. रमाकान्तसिंह, पप्पूजी, बरबीगाह-देवेन्द्र कुमार, सुभाष पण्डित, डॉ. बिरमनी कुमार, प्रवेश दास, सुधीर कुमार, प्रभानन्द पासवान, नवादा-दिनेश कुमार पण्डित, नादिर गंज (राजगीर)-बारहन विश्वकर्मा, रामअवतार चौधरी, शम्भूजी, शेखपुरा- प्रवीण कुमार और चंदन, अ.सि. साधक परिवार लक्खीसराय के समस्त गुरु भाई-बहन, बाढ-प्रह्लाद सिंह, मोकामा-रोजकानंद बत्स, कटिहार-शैलेष सिंह, मधेपुरा-आनंद निखिल, पुरनिया-दयानंद शमी, आदित्य, भागलपुर-शिवानंद झा, सुनील यादव

26 जनवरी 2022

गुरु शिष्य मिलन समारोह

शिविर स्थल : होटल **M 4 U** (एम फॉर यू) हमीरपुर रोड, नजदीक बस स्टैंड, **घुमारवीं, जिला-बिलासपुर (हि.प्र.)**

आयोजक मण्डल-घुमारवीं- ज्ञान चन्द रतन-9418090783, धर्म देव शर्मा-9805820830, राजेश कुमार 8219200398, संजय शर्मा एडवोकेट-9218502781, हेम लता कौण्डल-9816048648, प्रदीप गुप्ता- 9816047662, गोवर्धन-9816093560, हेम राज-9418673737, प्रेम सागर-7018166875, नरेन्द्र-8219547388, डॉ. सुरेश ठाकुर-7018035767, पिंकी-9817068928, रोशन लाल (सन्तोषी)-9418266838, प्रकाश राणा-8580903884, सुषमा-9805139373, बीना- 9418528102, जगदीश ठाकुर-7018265076, यशवन्त राणा-8218259028, कमलेश ठाकुर-8219597325, बलदेव भाटिया-9817194811, विजय भाटिया-9418091433 जय पाल शर्मा-9418075136, शुकां राम-9736298911, तिलक राज-8219834869, रविन्द्र कुमार-9816307688 ललित कुमार-9643676057, स्नेह लता-8278849848, उत्तम-9817190815, कश्मीर सिह-9816125858, सागर-9459318584, यसुमति-9418520478, सुरेन्द्र शुक्ला-7018176331, राजू सेन 9882966096, अवतार-9829262928, सिरी राम-9816491011, डॉ. सुमन-9418257738, संतोष-9816160261, सुभाष नड्डा-9817171928, जगदीश गदी-9816764766, सतपाल-8988724134, मंशा राम-8894880584, अमर नाथ शर्मा-9817083130, सन्जू बाबा-9418005236, सुरेन्द्र-9817044770, अश्वनी-9817724090, चमन-9805876001, विजय-9817055316, 9625474643, रानी- 9817481437, जगदीश (मरहोल)-9816592904, सुन्दर-9736144322, रामस्वरूप-9418460221, बरठीं-प्रकाशो-9418084207, तलाई-गोपाल-9805986985, डॉ. राजेश-9625478910, राम लाल-98168417466, विश्वानाथ-9816574250, बिलासपुर-जीवन लता-9418046965, राजेश भारद्वाज -7018418938, धर्म पाल-9418450251, पुरुषोत्तम भारद्वाज (ETO)-9816859201, अंकुश-9736257462, कन्दरौर-सुरेश चन्देल-7018535326, सदा राम-9816243101, पालमपुर-संजय सूद-9816005757, देव गौतम-9894075015, सीमा चन्देल, ओंकार राणा, सुनन्दा, धर्मशला- केसर गुरंग, संध्या, नगरोटा सूरियां-ओम प्रकाश शर्मा-9418250674, काँगड़ा-अशोक कुमार-9736296077, राजू, सुनील नाग, चौतड़ा-संजीव कुमार-8894513763, रमेश, सुन्दरनगर-जयदेव शर्मा-9816314760, रविन्दर नाथ-9418726430, नीलम, पृथ्वीसिंह, सरकाघाट-रोशन लाल, जगदीश वर्मा, अशोक कुमार, के.डी. शर्मा, जाहू-सागरदत्त, प्रभुदयाल, मण्डी-महिन्दर गुप्ता-9418043420, बंशी राम ठाकुर-9805042544, डॉ. भुवन, ऊना-अमरजीत-9418350285, प्रदीप-8847627196, शिमला-तुलसीराम कौण्डल, चमनलाल कौण्डल-9418040560, हमीरपुर-राजेन्द्र शर्मा-9418134039, डॉ. गगन-9418125421, प्यार सिंह-9625304976, कुलदीप-9459012418

काठमाण्डू में आयोजित साधना शिविर के दृश्य

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 November, 2021
Posting Date : 21-22 November, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : दिसम्बर एवं जनवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
10 दिसम्बर
19 जनवरी

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
11-12 दिसम्बर
11-12 जनवरी

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002